मङ्सिर – २

# सर्वोच्च अदालत बुलेटिन

पाक्षिक प्रकाशन

वर्ष २६, अङ्क १६ | २०७४, मङ्सिर १६–२९ | पूर्णाङ्क ६१०

प्रकाशक

**सर्वोच्च अदालत**

रामशाहपथ, काठमाडौं

फोन नं. ४२५०७४२, ४२६२३९७, ४२६२३९८, ४२६२८०१, ४२५८१२२ Ext.२५११ (सम्पादन), २५१४ (छापाखाना), २१३१ (बिक्री)

फ्याक्सः ४२६२८७८, पो.व.नं. २०४३८

**Email:** info@supremecourt.gov.np, Web: **www.supremecourt.gov.np**

**सम्पादन तथा प्रकाशन समिति**

| | |
|---|---|
| **माननीय न्यायाधीश श्री हरिकृष्ण कार्की, सर्वोच्च अदालत** | **- अध्यक्ष** |
| **मुख्य रजिष्ट्रार श्री नहकुल सुवेदी** | **- सदस्य** |
| **नायब महान्यायाधिवक्ता श्री किरण पौडेल, प्रतिनिधि, महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय** | **- सदस्य** |
| **कायम मुकायम रजिष्ट्रार श्री महेन्द्रनाथ उपाध्याय** | **- सदस्य** |
| **अधिवक्ता श्री खम्मबहादुर खाती, महासचिव, नेपाल बार एसोसिएसन** | **- सदस्य** |
| **वरिष्ठ अधिवक्ता श्री शैलेन्द्रकुमार दाहाल, अध्यक्ष, सर्वोच्च अदालत बार एसोसिएसन** | **- सदस्य** |
| **प्रा.डा.ताराप्रसाद सापकोटा, डिन, त्रिभूवन विश्वविद्यालय, कानून संकाय** | **- सदस्य** |
| **सहरजिष्ट्रार श्री भद्रकाली पोखरेल, सर्वोच्च अदालत** | **- सदस्य सचिव** |

**सम्पादक :** श्री रामप्रसाद बस्याल

**सम्पादन तथा प्रकाशन शाखामा कार्यरत् कर्मचारीहरू**

शाखा अधिकृत श्री निलकण्ठ बराल
शाखा अधिकृत श्री मिनबहादुर कुँवर
कम्प्युटर अधिकृत श्री विक्रम प्रधान
ना.सु. श्री विनोदकुमार यादव
ना.सु. श्री पुष्पराज शर्मा
ना.सु. श्री अर्जुनबाबु सापकोटा
सि.क. श्री ध्रुव सापकोटा
कम्प्युटर अपरेटर श्री विजय खड्का
कम्प्युटर अपरेटर श्री अर्जुन सुवेदी
कार्यालय सहयोगी श्री राजेश तिमल्सिना

**भाषाविद् :** सहप्रा. श्री रामचन्द्र फुयाल

**बिक्री शाखामा कार्यरत् कर्मचारी**

डि.श्री नरबहादुर खत्री

**मुद्रण शाखामा कार्यरत कर्मचारीहरू**

सुपरभाइजर श्री कान्छा श्रेष्ठ
मुद्रण अधिकृत श्री आनन्दप्रकाश नेपाल
सिनियर हेल्पर श्री तुलसीनारायण महर्जन
सिनियर प्रेसम्यान श्री योगप्रसाद पोखरेल
सिनियर मेकानिक्स श्री निर्मल बयलकोटी
सिनियर बुकबाइन्डर श्री रमेश बासुकला
बुकबाइन्डर श्री यमनारायण भडेल
बुकबाइन्डर श्री मीरा वाग्ले
कम्पोजिटर श्री प्रमिलाकुमारी लामिछाने
प्रेसम्यान श्री केशवबहादुर सिटौला
बुकबाइन्डर श्री अच्युतप्रसाद सुवेदी

**विभिन्न इजलासहरूबाट सम्पादन शाखामा प्राप्त भई यस अङ्कमा प्रकाशित निर्णय / आदेशहरू**

| | | | |
|---|---|---|---|
| संयुक्त इजलास | १३ | इजलास नं. १० | १ |
| इजलास नं. १ | २ | इजलास नं. ११ | ६ |
| इजलास नं. २ | ११ | इजलास नं. १२ | २ |
| इजलास नं. ३ | ५ | इजलास नं. १३ | २ |
| इजलास नं. ४ | २ | इजलास नं. १४ | ३ |
| इजलास नं. ५ | ४ | इजलास नं. १५ | ३ |
| इजलास नं. ६ | ४ | इजलास नं. १६ | ३ |
| इजलास नं. ७ | ५ | इजलास नं. १७ | १ |
| इजलास नं. ८ | ३ | इजलास नं. १८ | १ |
| इजलास नं. ९ | ५ | एकल इजलास | ३ |
| जम्मा | ५४ | जम्मा | २५ |

**कूल जम्मा  ५४ + २५ = ७९**

नेपाल कानून पत्रिकामा

२०१५ सालदेखि २०६९ साल असोजसम्म

प्रकाशित

# निर्णयहरूको सारसङ्ग्रह

## विषयगत आधारमा

### वर्गीकृत

एघार खण्ड पुस्तकहरू बिक्रीमा छन् ।

मूल्य रू.५,५००।-

<u>पाइने ठाउँ</u>

- नेपाल कानून पत्रिका बिक्री कक्ष, सर्वोच्च अदालत
- न्यायाधीश समाज नेपाल, बबरमहल
- सर्वोच्च अदालत बार एसोसिएसन, नेबाए भवन


यस पत्रिकाको इजलाससमेतमा उद्धरण गर्नुपर्दा निम्नानुसार गर्नुपर्नेछः

सअ बुलेटिन २०७... ... .... १ वा २, पृष्ठ ....

(साल) (महिना)

उदाहरणार्थः सअ बुलेटिन २०७४, मङ्सिर – २, पृष्ठ १

का.जि.द.नं. ३९।०४९।०५०

सर्वोच्च अदालतलगायत मातहतका अदालतहरू एवम् अन्य न्यायिक निकायहरूका कामकारवाहीसँग सेवाग्राहीहरूको कुनै गुनासो, उजुरी र सुझाव भए सर्वोच्च अदालत, प्रधानन्यायाधीशको निजी सचिवालयमा रहेको

**Toll Free Number**

**१६६०–०१–३३३–५५**

वा

**इमेल ठेगाना**

**cjs@supremecourt.gov.np**

मा सम्पर्क गर्न सकिने छ।

**मूल्य रू.१५।–**

**मुद्रकः सर्वोच्च अदालत, छापाखाना**

## विषयसूची


| क्र.सं. | विषय | पक्ष / विपक्ष | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| **संयुक्त इजलास** | | | **१ - १३** |
| १. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. डिलबहादुर नगरकोटी | |
| २. | ज्यान मार्ने उद्योग | नेपाल सरकार वि. रामबहादुर थापासमेत | |
| ३. | जबरजस्ती करणी | नेपाल सरकार वि. मनोजकुमार महथा | |
| ४. | वैदेशिक रोजगार सम्बन्धी कसुर | नेपाल सरकार वि. राजकुमार थेवेसमेत | |
| ५. | डाँका चोरी | नेपाल सरकार वि. घनश्याम पौडेलसमेत | |
| ६. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | लछिराम थापा वि. प्रहरी प्रधान कार्यालय, के.का. अनुसन्धान ब्युरो, काठमाडौँसमेत | |
| ७. | भ्रष्टाचार | नेपाल सरकार वि. सुरेन्द्रप्रसाद श्रेष्ठ | |
| ८. | भ्रष्टाचार | नेपाल सरकार वि. सहदेवकुमार रिमालसमेत | |
| ९. | जग्गा खिचोला मेटाई चलन चलाई पाउँ | जनक दुलारी मिश्र वि. बन्दना सिंहसमेत | |
| १०. | कर्तव्य ज्यान र अपहरण तथा शरीर बन्धक | नेपाल सरकार वि. कालिका मुराउसमेत | |
| ११. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. प्रकाश मुखिया | |
| १२. | कर्तव्य ज्यान | रामबहादुर चन्द वि. नेपाल सरकार | |
| १३. | कर्तव्य ज्यान | विनोद साह तेली वि. नेपाल सरकार | |
| **इजलास नं. १** | | | **१३ - १४** |
| १४. | पर्खाल भत्काइ बाटो कायम | तिमिला यमी थापा वि. हरिप्रसाद नेपालसमेत | |
| १५. | जग्गा खिचोला | छविलाल भन्ने राजन रेग्मी वि. डिलाराम कँडेल | |
| **इजलास नं. २** | | | **१५ - २३** |
| १६. | घर बहाल दिलाई घरबाट उठाई चलन चलाई पाउँ | मंगलनारायण मानन्धर वि. कृष्णप्रसाद मानन्धर | |
| १७. | मानव बेचबिखन | नेपाल सरकार वि. लक्ष्मी भण्डारीसमेत | |
| १८. | जबरजस्ती करणी | नीरकुमार राई वि. नेपाल सरकार | |
| १९. | अपहरण तथा शरीर बन्धक | गुणराज आचार्य वि. नेपाल सरकार | |
| २०. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. ज्याम्बल तामाङ | |

| | | |
|---|---|---|
| २१. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. टकमा के.सी. |
| २२. | कर्तव्य ज्यान | मदन सुनार वि. नेपाल सरकार |
| २३. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. हेमन्त जोशी |
| २४. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | प्रजिता प्रसाई भुर्तेल वि. शिवकुमार प्रसाईसमेत |
| २५. | उत्प्रेषण / परमादेश | निर्मल झा वि. विद्यालय शिक्षक किताबखाना, छाउनी मार्गसमेत |
| २६. | लागु औषध (डाइजेपाम समेत) | नेपाल सरकार वि. भीमबहादुर शाहीसमेत |
| **इजलास नं. ३** | | **२३ - २९** |
| २७. | नवजात शिशु जन्माई मारी फालेको कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. सोनी खातुन |
| २८. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. नुहानु कुर्मी |
| २९. | कर्तव्य ज्यान | तारा राई (गुरूङ) वि. नेपाल सरकार |
| ३०. | कर्तव्य ज्यान | तेजबहादुर सारू मगर वि. नेपाल सरकार |
| ३१. | कर्तव्य ज्यान | गोलमती राजवंशी वि. नेपाल सरकार |
| **इजलास नं. ४** | | **२९ - ३०** |
| ३२. | उत्प्रेषण | माधवप्रसाद पौडेल वि. संघीय मामिला तथा स्थानीय विकास मन्त्रालयसमेत |
| ३३. | उत्प्रेषण / परमादेश | रामविलास मुसहरसमेत वि. संघीय मामिला तथा स्थानीय विकास मन्त्रालयसमेत |
| **इजलास नं. ५** | | **३० - ३४** |
| ३४. | कर्तव्य ज्यान र रहजनी चोरी | राजेन्द्र श्रेष्ठ वि. नेपाल सरकार |
| ३५. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. भीमबहादुर राई |
| ३६. | कर्तव्य ज्यान | किरण वि.क. वि. नेपाल सरकार |
| ३७. | उत्प्रेषण / परमादेश | प्रा.डा. द्विजराज भट्ट वि. त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुरसमेत |
| **इजलास नं. ६** | | **३४ - ३८** |
| ३८. | जबरजस्ती करणी | वीरबहादुर थिङ्ग वि. नेपाल सरकार |
| ३९. | कर्तव्य ज्यान | राजेश देउला (द्योला) वि. नेपाल सरकार |
| ४०. | कर्तव्य ज्यान | सचिन परियार वि. नेपाल सरकार |
| ४१. | कर्तव्य ज्यान | लालबहादुर थापा वि. नेपाल सरकार |

| इजलास नं. ७ | | | ३८ - ४१ |
|---|---|---|---|
| ४२. | निषेधाज्ञा | तेजकुमार श्रेष्ठ वि. एलिना रावत | |
| ४३. | निषेधाज्ञा / परमादेश | श्रीमती जयन्ती लम्साल वि. तारा गाउँ विकास समितिसमेत | |
| ४४. | उत्प्रेषण | भगौतीप्रसाद अहर यादव वि. रमेशचन्द्र गौतमसमेत | |
| ४५. | निषेधाज्ञा | ठाकुरप्रसाद पौडेल वि. तिर्थ राज्य लक्ष्मी शाह | |
| **इजलास नं. ८** | | | **४१ - ४४** |
| ४६. | फैसला बदर | विमाया घलेसमेत वि. धनबहादुर घले | |
| ४७. | उत्प्रेषण / परमादेश | भारती जोशी वि. अख्तियार दुरूपयोग अनुसन्धान आयोग, टङ्गाल काठमाडौंसमेत | |
| **इजलास नं. ९** | | | **४४ - ४९** |
| ४८. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | पासाङ थाबचेत तामाङसमेत वि. सिन्धुपाल्चोक जिल्ला अदालत सिन्धुपाल्चोक चौतारासमेत | |
| ४९. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. सन्तबहादुर बस्नेतसमेत | |
| ५०. | उत्प्रेषण | सपना चौहान रोक्का वि. गोपाल राज रोक्कासमेत | |
| ५१. | कर्तव्य ज्यान | हर्कध्वज लिम्बूसमेत वि. नेपाल सरकार | |

| इजलास नं. १० | | | ५० |
|---|---|---|---|
| ५२. | उत्प्रेषण | विपिन हाडा वि. मालपोत कार्यालय, भरतपु चितवनसमेत | |
| **इजलास नं. ११** | | | **५० - ५३** |
| ५३. | आयकर | ठूला करदाता कार्यालय, हरिहरभवन वि. महेन्द्रबाबु श्रेष्ठ | |
| ५४. | आयकर | ठूला करदाता कार्यालय, हरिहरभवन वि. महेन्द्रबाबु श्रेष्ठ | |
| ५५. | अंश दर्ता | काशी राय यादव वि. पलधारी राय यादवसमेत | |
| ५६. | लेनदेन | काशी रायजयनारायण यादव वि. अशोककुमार साहु सुडी | |
| ५७. | जबरजस्ती चोरी | नेपाल सरकार वि. हिरामणी घर्तीमगर | |
| ५८. | अपहरण तथा शरीर बन्धक | नेपाल सरकार वि. सत्यनारायण चौधरी | |
| **इजलास नं. १२** | | | **५३ - ५५** |
| ५९. | दोहोरो दर्ता बदर / हक कायम | सरोजकुमार श्रेष्ठ वि. नन्दबहादुर राना | |
| ६०. | कर्तव्य ज्यान | विनेश नायजु श्रेष्ठ वि. नेपाल सरकार | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| **इजलास नं. १३** | | | **५५ - ५७** |
| ६१. | मानव बेचबिखन तथा ओसार पसार | कमल राई वि. नेपाल सरकार | |
| ६२. | उत्प्रेषण / परमादेश | सुनीत के.सी.समेत वि. लोक सेवा आयोग केन्द्रीय कार्यालयसमेत | |
| **इजलास नं. १४** | | | **५७ - ५९** |
| ६३. | उत्प्रेषण | सुनिता देवी मुराउत वि. मवनकुमार मौर्य | |
| ६४. | निषेधाज्ञा / परमादेश | जनकलाल पुरवार वि. नेपालगन्ज उपमहानगरपालिकासमेत | |
| ६५. | सवारी ज्यान | नेपाल सरकार वि. बाबुराम खनालसमेत | |
| **इजलास नं. १५** | | | **५९ - ६२** |
| ६६. | परमादेश / प्रतिषेध | तुलसी सिंखडा वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयसमेत | |
| ६७. | छुट जग्गा दर्ता | कुमार श्रेष्ठ वि. हर्षरत्न शाक्यसमेत | |
| ६८. | उपयुक्त आदेश जारी गरिपाउँ | श्रवणकुमार चौधरी वि. नेपाल मेडिकल काउन्सिल | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| **इजलास नं. १६** | | | **६२ - ६५** |
| ६९. | उत्प्रेषण / परमादेश | रविन्द्रकुमार यादव वि. सशस्त्र प्रहरी बल प्रधान कार्यालयसमेत | |
| ७०. | उत्प्रेषण | भोरिल यादव वि. पुनरावेदन अदालत जनकपुरसमेत | |
| ७१. | उत्प्रेषण / परमादेश | कृष्णसुन्दर माखास्या वि. भूमिसुधार कार्यालय, भक्तपुरसमेत | |
| **इजलास नं. १७** | | | **६५ - ६६** |
| ७२. | उत्प्रेषण | इन्द्रबहादुर थेवेसमेत वि. नेपाल बैंक लिमिटेडसमेत | |
| **इजलास नं. १८** | | | **६६** |
| ७३. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. उपेन्द्र यादवसमेत | |
| **एकल इजलास** | | | **६७ - ६८** |
| ७४. | उत्प्रेषण | रिता सुनुवार वि. उच्च अदालत मोरङ, विराटनगरसमेत | |
| ७५. | उत्प्रेषण / परमादेश | मुस्तफा दर्जीसमेत वि. अली दर्जासमेत | |
| ७६. | उत्प्रेषण / परमादेश | ज्ञानी मैयाँ महर्जन वि. उच्च अदालत पाटन, ललितपुरसमेत | |

## संयुक्त इजलास

१

**स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री दीपकराज जोशी,** ०७१-CR-०८१६, कर्तव्य ज्यान, *नेपाल सरकार वि. डिलबहादुर नगरकोटी*

मिति २०६७।३।२४ मा घटित घटनाको तत्काल अनुसन्धान सुरू भए पनि करिब २ वर्षपछि मात्र मृतककी श्रीमतीको किटानी जाहेरी परी प्रस्तुत मुद्दाको कारवाही अगाडि बढेको अवस्था एकातिर देखिन्छ भने अर्कोतर्फ प्रतिवादीहरूले नै मृतकलाई भीरबाट धकेली हत्या गरेका हुन् भनी भन्न नसकी शङ्कासम्म गरेको अवस्था रहेको पाइयो । मृतकका भाइ बीरबहादुर राउतसँग प्रतिवादी डिलबहादुरले लिएको रू. १००००। ऋणका सम्बन्धमा मृतक र प्रतिवादीबीच वाद विवाद रहेको भन्ने आधारमा प्रतिवादीले मारेका हुन् भन्ने विश्वास लाग्छ भनी जाहेरवालीले दिएको जाहेरी दरखास्तको आधारमा मात्र प्रतिवादीलाई दोषी ठहर गर्न नमिल्ने ।

मिति २०६७।३।२४ गते मृतकले मादक पदार्थ सेवन गरी पटकपटक मोटरसाइकल लडाएको र भेषबहादुर काउछा र टोपलाल खनालले धर्मबहादुर पुनको मोटरसाइकल उठाई डोर्‍याएर मुगा नगरकोटीको घरमा लगी राखिदिएको भन्ने शिव पुन, मुगा नगरकोटीसमेतको मौकाको कागज रहेको पाइन्छ । शिव पुन, मनबहादुर रेश्मीसमेतले मृतकले अत्यधिक मादक पदार्थ सेवन गरेका हुँदा आफैँ भीरबाट लडी मृत्यु भएको हुनुपर्छ भनी लेखाई दिएकोसमेतका प्रमाणहरूबाट प्रतिवादी डिलबहादुर पुनले नै धर्मबहादुर राउतलाई भीरबाट धकेली कर्तव्य गरेका हुन् भन्ने तथ्य युक्तीङ्गत तवरबाट पुष्टि हुन आएको नदेखिने ।

प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा १० मा मौकामा व्यक्त गरेको कुरा प्रमाणमा लिन हुन्छ भन्ने व्यवस्था भई (१) "कुनै काम घटना वा अवस्थाका सम्बन्धमा देहायका कुनै व्यक्तिले मौकामा वा त्यसको तत्काल अघि वा पछि व्यक्त गरेको कुरा प्रमाणमा लिन हुन्छः (क) सो काम गर्ने वा सो काम, घटना वा अवस्था प्रत्यक्षरूपमा देख्ने वा थाहा पाउने व्यक्ति वा (ख) सो काम, घटना वा अवस्थाबाट पीडित भएका व्यक्ति । (२) कुनै व्यक्तिले निजको शारीरिक वा मानसिक अवस्था स्पष्ट रूपमा बोध हुने गरी त्यस्तो अवस्था कायम छँदै व्यक्त गरेको कुरा प्रमाणमा लिन हुन्छ" भन्ने व्यवस्था छ । प्रस्तुत मुद्दामा जाहेरवाली एवम् मौकामा बुझिएका व्यक्तिहरू उक्त घटना वारदात प्रत्यक्ष देख्ने वा थाहा पाउने व्यक्ति भन्ने नदेखिएको अवस्थामा जाहेरवालालगायतका मौकामा बुझिएका मानिसहरूले अनुमान र शङ्काको आधारमा लेखाएको कुरालाई प्रमाणमा लिन मिल्ने नदेखिने ।

प्रस्तुत मुद्दामा मौकामा कागज गर्ने मानिसहरू सबैले प्रतिवादी डिलबहादुर नगरकोटीले धर्मबहादुर राउतलाई मारेकोमा विश्वास लाग्छ भनी शङ्कासम्म गरे पनि निजैको कर्तव्यबाट धर्मबहादुरको मृत्यु भएको भनी किटानीसाथ भन्न सकेको देखिँदैन । प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ मा फौजदारी मुद्दामा कसुरदार प्रमाणित गर्ने भार वादी पक्षमा रहेको र अभियुक्तको कसुर शङ्कारहित तवरले प्रमाणित हुन नसकेको अवस्थामा शङ्काको सुविधा अभियुक्तले पाउँछ भन्ने फौजदारी न्यायको मान्य सिद्धान्तसमेत रहेको अवस्थामा अनुमानको आधारमा गरेको बकपत्र र जाहेरी दरखास्तलाई मात्र आधार मानी दोषी ठहर गर्न नमिल्ने हुँदा पुनरावेदन अदालत बुटवलबाट भएको फैसलालाई अन्यथा भन्न नसकिने ।

अतः विवेचित तथ्य, कानूनी व्यवस्था तथा

प्रमाणसमेतबाट प्रतिवादी डिलबहादुर नगरकोटीको कर्तव्यबाटै धर्मबहादुर राउतको मृत्यु भएको भन्ने पुष्टि हुन नसकेको हुँदा प्रतिवादीलाई कसुरदार ठहर गरी अर्घाखाँची जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०।३।१९ मा भएको फैसलालाई उल्टी गरी प्रतिवादी डिलबहादुर नगरकोटीलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिने गरी पुनरावेदन अदालत बुटवलबाट मिति २०७१।१।३ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृतः इन्दिरा शर्मा

कम्प्युटरः अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०७३ साल भदौ ७ गते रोज ३ शुभम्।

२

**स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री दीपकराज जोशी,** ०७१-CR-१००३, ज्यान मार्ने उद्योग, *नेपाल सरकार वि. रामबहादुर थापासमेत*

प्रतिवादीहरूलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिई मुद्दालाई कुटपिटमा परिणत गरी भएको पुनरावेदन अदालतको फैसला कानूनी व्यवस्था एवम् प्रतिपादित सिद्धान्तसमेतको प्रतिकूल रहेको भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर सम्बन्धमा विचार गर्दा मिति २०६८।७।११ गते भाइटीकाको दिन भएको भन्ने देखिन्छ। सो दिन बेलुका प्रतिवादीहरू रामबहादुर थापा र कमलबहादुर सोमरे मगर पीडित काम गरी बसेको न्यू सिद्धबाबा इन्जिनियरिङ वर्कसपमा भैलो खेल्न भनी आएको अवस्थामा प्रतिवादीहरूको पीडितसँग भैलो खेल्ने विषयमा झगडा हुन गएपछि प्रतिवादीहरूले पीडित दीपक भन्ने मोहम्मद अक्रमलाई कुटपिट गरेको भन्ने पीडितको बकपत्रसमेतबाट खुल्न आउँछ। प्रतिवादीहरूले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष बयान गर्दा दीपक भन्ने मोहम्मद अक्रमले हामीलाई केटा भनेकाले रीस उठी कमलबहादुरले स्प्रीङ्ग पट्टाले निजको टाउकामा प्रहार गरेपछि रामबहादुरले ढुङ्गाले हानेर भागेको भनी दुवै प्रतिवादीहरूले एक अर्कालाई पोल गरी पीडितलाई कुटपिट गरेकोमा साबित रही एकै मिलान व्यहोरा लेखाएको पाइन्छ । अदालतमा भएको बयानमा पीडितलाई हात, खुट्टा जुत्ताले कुटपिट गरेको भनी फलामको पट्टा ढुङ्गाले हानेका होइनौं भनी लेखाएको पाइयो। मौकामा बुझिएका दीलमाया मल्लको मौकाको कागजसमेतबाट प्रतिवादीहरूले पीडित मोहम्मद अक्रमलाई कुटपिट गरेको भन्ने नै देखिन आउने।

ज्यानसम्बन्धी महलको १५ नं.अनुसार प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादीहरूले पीडितलाई मार्ने मनसायले कुटपिट गरेका हुन् होइनन् भन्ने सम्बन्धमा विचार गर्नुपर्ने हुन आयो। उक्त घटनाका प्रत्यक्षदर्शीको रूपमा रहेका मौकामा बुझिएका दीलमाया मल्ल र माया धरिकाले हो हल्ला भएको सुनी उक्त स्थानमा जाँदा दुवै प्रतिवादीहरूले पीडितलाई कुटपिट गरेको देखी छुट्याएको र मसमेतको उपस्थिति नभएको भए पीडितको ज्यानै जानसक्ने थियो भनी मौकामा लेखाएको भए पनि निजहरूले अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र गरी उक्त भनाईलाई पुष्टि गर्न सकेको पाइएन । वस्तुस्थिति मुचुल्काका मानिसहरूले पीडितलाई प्रतिवादीहरूले फलामले कुटपिट गरेको भनी लेखाए पनि वादीपक्षबाट निज मानिसहरूलाई अदालतमा उपस्थित गराई बकपत्र गरी उक्त भनाई पुष्टि गर्न सकेको देखिएन । पीडितसँग प्रतिवादीहरूको पूर्वरिसइवी रहे भएको भन्ने पीडित तथा जाहेरवालाले भन्न नसकेको तथा मिसिल संलग्न कागजातबाट समेत खुल्न सकेको देखिँदैन । पीडितलाई मार्ने मनसायले प्रतिवादीहरूले पूर्वयोजनाअनुसार नै कुटपिट गरेको भन्ने एवम् प्रतिवादीहरूले ज्यान मार्ने मनसाय र तयारीसाथ उक्त स्थानमा गएका भन्नेसमेत नदेखिँदा पुनरावेदन गर्दा उल्लिखित नजिर सिद्धान्त प्रस्तुत मुद्दामा आकर्षित

हुने नदेखिने।

भैलो खेल्ने विषयमा तत्काल पीडित र प्रतिवादीहरूबीच भनाभन हात हालाहाल हुँदा प्रतिवादीहरूले पीडितलाई कुटपिट गरेको भन्ने देखिन्छ। पीडितको घाजाँच केश फारामबाट निजको शरीरमा विभिन्न चोटपटक लागेको भन्नेसमेत खुल्न आएको पाइएन। प्रतिवादीहरू भाइटीकाको दिन भैलो खेल्ने प्रयोजनका लागि पीडित रहे भएको वर्कसपमा पुगेका र पीडितले कारखाना मालिक नभएको भनी भैलो खेल्न नदिएको भन्ने विषयमा दुवै पक्षबीच वादविवाद हुँदा प्रतिवादीहरूले पीडितलाई कुटपिट गरेको देखिन्छ । प्रतिवादीहरूको पीडितलाई मार्नेसम्मको मनसाय रहे भएको भन्ने पुष्टि हुन नसकेको अवस्थामा पीडितको घाजाँच केश फारामको एउटा महलमा Fatal सम्म उल्लेख भएको भन्नेमात्र आधारमा प्रतिवादीहरूले ज्यान मार्ने उद्योगको कसुर गरेका भनी अनुमान गर्न नमिल्ने हुँदा प्रस्तुत मुद्दालाई कुटपिटमा परिणत गर्ने गरी भएको पुनरावेदन अदालत बुटवलको फैसलालाई अन्यथा भन्न नमिल्ने।

तसर्थ माथि विवेचित तथ्य, कानूनी व्यवस्था तथा प्रमाणहरूसमेतबाट प्रतिवादीहरू रामबहादुर थापा र कमलबहादुर सोमरे मगरलाई कसुरदार ठहर गरी जनही पाँच वर्ष कैद हुने गरी रूपन्देही जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०।२।१३ मा भएको फैसलालाई उल्टी गरी प्रतिवादीहरू रामबहादुर थापा र कमलबहादुर सोमरेलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिई प्रस्तुत मुद्दा अनुसूची १ भित्रको नहुँदा सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को दफा २७बमोजिम पीडित दीपक भन्ने मोहम्मदलाई झिकाई निजले सकारे निजलाई वादी पक्ष कायम गरी यसै मुद्दाको मिसिलबाट कानूनबमोजिम कारवाही र किनारा गर्नु भनी रूपन्देही जिल्ला अदालतमा पठाई दिने ठहर गरी पुनरावेदन अदालत बुटवलबाट मिति २०७०।१२।५ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृतः इन्दिरा शर्मा

इति संवत् २०७३ साल भदौ ७ गते रोज ३ शुभम्।

३

**स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री दीपकराज जोशी,** ०७०-CR-०८२७, जबरजस्ती करणी, *नेपाल सरकार वि. मनोजकुमार महथा*

पीडित र प्रतिवादीबीच वारदातस्थलमा उक्त मिति र समयमा पाडोले उखु खाएको विषयमा विवाद भएको र प्रतिवादीले पीडितलाई एक थप्पड हानी धकेली दिएको भनी स्वीकार गरेको देखिँदा प्रतिवादीले जाहेरवालीलाई लछार पछार गरेको भन्ने देखिन्छ । प्रतिवादीले पीडितलाई लछारपछार गर्दा पीडितले गुहार मागेकीमा सदानन्द पुगी कराउँदा प्रतिवादी भागेका भन्ने सदानन्द र जाहेरवालीको बकपत्रबाट खुल्न आएको छ। वारदातस्थलमा मडारिएको भन्ने घटनास्थल प्रकृति मुचुल्का, पीडितको योनिबाट रगत आएको भन्ने पीडितको बकपत्र, Hymen torm र Attempted to rape भन्ने कोशी अञ्चल अस्पतालको मिति २०६१।१।२२ को प्रेस्कृप्सन एवम् पीडितको जीउमा माटो धूलो लागेको भन्नेसमेतका उल्लिखित प्रमाणबाट वारदातस्थलमा प्रतिवादीको उपस्थिति रही निजले पीडित जाहेरवालीलाई जबरजस्ती करणीको उद्योग गरेको भन्ने कुरालाई समर्थन गरेको पाइने।

जबरजस्ती करणीको वारदात हुनलाई पीडितको योनिमा प्रतिवादीको लिङ्ग पूरै वा केही मात्र भए पनि प्रवेश गरेको हुनुपर्ने देखियो । प्रस्तुत वारदातमा जबरजस्ती करणी भएको चिह्नहरू रहेको भन्ने वा पीडितको योनिमा प्रतिवादीको लिङ्ग प्रवेश गरेको थियो भन्नेसमेत नदेखिँदा वारदातस्थलमा प्रतिवादीको उपस्थिति रहेको र पीडितलाई प्रतिवादीले

लछारपछार गर्दाकै अवस्थामा पीडितले हारगुहार गर्दा वादीका साक्षी सदानन्द मण्डल वारदातस्थलमा पुगी कराउँदा प्रतिवादी भागेको भन्ने देखिँदा पीडितलाई जबरजस्ती करणी गर्न पाएको अवस्था नभए पनि उक्त समयमा सदानन्द मण्डल घटनास्थलमा नपुगेका भए प्रतिवादीले पीडितलाई जबरजस्ती करणी गर्नसक्ने देखिँदा निज प्रतिवादीले पीडितलाई जबरजस्ती करणीको उद्योग गरेको पुष्टि हुन आएको हुँदा पुनरावेदन अदालत बिराटनगरबाट भएको फैसलालाई अन्यथा भन्न सकिएन भने पुनरावेदनपत्रमा उल्लिखित कानूनी व्यवस्था एवम् सिद्धान्तसमेतको प्रतिकूल भयो भन्ने वादीको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

अतः माथि विवेचित तथ्य, कानूनी व्यवस्था तथा प्रमाणसमेतको आधारमा प्रतिवादी मनोजकुमार महथालाई कसुरदार ठहर गरी पाँच वर्ष कैद गरी निजबाट पीडितलाई रू. १५,०००। क्षतिपूर्ति भराइदिने गरी भएको मोरङ्ग जिल्ला अदालतको मिति २०६८।१०।८ को फैसलालाई केही उल्टी गरी प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको ५ नं. बमोजिम जबरजस्ती करणीको उद्योगको कसुर गरेको ठहर गरी निजलाई २ (दुई) वर्ष ६ (छ) महिना कैद सजाय हुने गरी पुनरावेदन अदालत बिराटनगरबाट मिति २०६९।६।७ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: इन्दिरा शर्मा

इति संवत् २०७३ साल भदौ ७ गते रोज ३ शुभम्।

४

**स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री दीपकराज जोशी,** ०७०-CR-०३६३, वैदेशिक रोजगारसम्बन्धी कसुर, *नेपाल सरकार वि. राजकुमार थेवेसमेत*

जाहेरवालाहरूले प्रतिवादीहरू रामबहादुर थेवे, राजकुमार थेवे र सुमन थेवेलाई रकम बुझाएको प्रमाण पेस गर्न सकेकोसमेत मिसिल संलग्न कागजातहरूबाट नदेखिएको, जाहेरी दरखास्त र जाहेरवालाको बकपत्रको व्यहोरा नै एक आपसमा बाझिएको, जाहेरवालाहरू स्वयम् पीडित व्यक्ति नभई उनाउ व्यक्ति रहेका भन्ने देखिएको, विदेशबाट नेपाल फर्की आएका भनिएका पीडितहरूले बकपत्र गरी आफू ठगिएको कुराको प्रमाण पेस गर्न नसकी जाहेरी दरखास्त पुष्टि हुनै नसकेको अवस्थामा त्यस्तो जाहेरी दरखास्त र अभियोगपत्रको आधारमा मात्र प्रतिवादीहरूलाई दोषी ठहर गर्न मिल्ने नदेखिने।

प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५अनुसार फौजदारी मुद्दामा अभियुक्तको कसुर प्रमाणित गर्ने भार वादी पक्षमा रहेको छ । उक्त कानूनी व्यवस्थाअनुसार कसुरदार प्रमाणित गर्ने ठोस र तथ्ययुक्त प्रमाण अभियोजनपक्षबाट पेस हुन सकेको पाइएन । शङ्काको सुविधा अभियुक्तले पाउँछ भन्ने फौजदारी न्यायको मान्यता रहेको छ । यसरी अभियोजनपक्षले युक्तियुक्त र ठोस प्रमाण पेस गरी प्रतिवादीहरूको कसुर प्रमाणित गर्न नसकेको अवस्थामा प्रतिवादीहरूले शङ्काको सुविधा पाउने नै देखिँदा वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणको फैसलालाई अन्यथा भन्न नसकिने हुँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृतः इन्दिरा शर्मा

कम्प्युटर: रामशरण तिमिल्सिना

इति संवत् २०७३ साल भदौ ७ गते रोज ३ शुभम्।

५

**स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री दीपकराज जोशी,** ०७०-CR-०३६३, डाँका चोरी, *नेपाल सरकार वि. घनश्याम पौडेलसमेत*

प्रतिवादीहरू अभिषेक तामाङ र निरज थापा मगरको हकमा केही नबोली फैसला भएको भन्ने

पुनरावेदन जिकिरका सम्बन्धमा विचार गर्दा निज प्रतिवादीहरूको नाममा सुरू जिल्ला अदालतबाट जारी भएको वारेण्ट तथा म्यादी पुर्जी नै बेपत्ते तामेल भई आएको भन्ने मिसिल संलग्न कागजातबाट देखिन्छ । कसुरमा संलग्न व्यक्तिहरूको वास्तविक नाम, थर, वतन यकिन गरी अभियोग दाबी लिनुपर्ने अभियोजकको दायित्व हो । अभियुक्तको वतन नै यकिन रूपमा खुलाउन नसकी अभियोगपत्रमा नाम र थर उल्लेख गरेको आधारमा मात्र कुनै पनि व्यक्तिलाई कसुरदार ठहर गर्न फौजदारी न्यायको मान्यताविपरीत हुन जाने हुँदा प्रतिवादीहरू अभिषेक तामाङ र निरज थापा मगरको उक्त वारदातमा संलग्नता रहेको भनी अभियोग कायम गरी सजाय गर्न मिल्ने देखिँदैन। तसर्थ निजहरूको हकमा सुरूबाट भएको फैसलालाई सदर गरी भएको पुनरावेदन अदालत बुटवलको फैसलालाई अन्यथा भन्न नमिल्ने।

प्रतिवादी घनश्याम पौडेलबाट डाँका चोरी भएको भनिएको कुनै प्रकारको दशी बरामद हुन सकेकोसमेत देखिँदैन । यस्तो अवस्थामा सहप्रतिवादीहरूको पोल र अभियोग दाबीकै आधारमा मात्र प्रतिवादी घनश्याम पौडेल कसुरदार रहेछन् भन्न नसकिने हुँदा निजलाई सफाइ दिने गरी पुनरावेदन अदालत बुटवलबाट भएको फैसला मिलेन भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

प्रतिवादी गोबिन्द तिरूवाको पसलबाट बरामद भएका भनिएका बरामदी मुचुल्कामा उल्लेख गरिएका गरगहना र जाहेरी दरखास्तमा लेखिएका गरगहना विवरण एक आपसमा मेल खान नसकेको एवम् उक्त बरामदी गरगहना आफ्नो होइन भनी जाहेरवालाले सनाखत गरी बकपत्रसमेत गरेको पाइन्छ । प्रतिवादी गोबिन्द तिरूवाको पसलबाट बरामद भएका गरगहना नै चोरीका सामान हुन् भन्ने तथ्य स्थापित हुन सकेको नदेखिँदा प्रतिवादी गोबिन्द तिरूवालाई कसुदार ठहर गर्न मिल्ने नदेखिने।

मुलुकी ऐन, चोरीको महलको ६ नं. को कानूनी व्यवस्थाको रोहमा हेर्दा डाँकाको कसुर हुनका लागि चारजनाभन्दा बढ्ताको जमातबाट जबरजस्ती चोरी वा रहजनीमा लेखिएका रीतसँग वा हातहतियार लिई उठाई छाडी वा हूलहुज्जत गरी चोरी गरेको हुनुपर्ने देखिन्छ। कानूनले नै डाँकाको वारदात हुनका लागि चार जनाभन्दा बढीको समूहबाट जबरजस्ती चोरी भएको हुनुपर्ने व्यवस्था गरेको अवस्थामा तीनजना मात्रको समूहबाट जाहेरवालाको घरमा गई जाहेरवालालगायत परिवारका सदस्यहरूलाई बाँधी थुनी धनमाल चोरी गरी लगेको कार्यलाई डाँकाको वारदात भन्न मिल्ने नभई मुलुकी ऐन, चोरीको महलको ४ नं. बमोजिम जबरजस्ती चोरीको कसुर गरेको मान्नुपर्ने देखिँदा पुनरावेदन अदालत बुटवलबाट उक्त कसुरलाई डाँकाको कसुर कायम नगरी जबरजस्ती चोरीको कसुर कायम गरेको कार्यलाई अन्यथा भन्न नमिल्ने।

प्रतिवादीहरू होमबहादुर गुरूङ, सचिन खवास र डेविट राईबाट बरामद भएको धनमाललाई मात्र बिगो कायम गरेको मिलेन । अभियोग मागदाबीबमोजिमको बिगो कायम हुनुपर्छ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरको सम्बन्धमा हेर्दा जाहेरवालाको जम्मा रू. ४१,५९,५००।– को धनमाल डाँका चोरी भएको भन्ने अभियोग दाबी रहे पनि प्रतिवादीहरूमध्ये प्रतिवादी डेविट राईबाट रू. २०,०००।-, प्रतिवादी सचिन खवासबाट रू. १६,०००।- र प्रतिवादी होमबहादुर गुरूङबाट रू. ३,३३,०००।- बराबरको धनमाल बरामद भएको भन्ने बरामदी मुचुल्काबाट खुल्न आएको पाइयो । प्रतिवादीहरूद्वारा चोरी गरेको भनिएको अन्य धनमाल प्रतिवादीहरूबाट यो यसलाई

बेचबिखन गरेको वा मासेको भन्ने वादीपक्षबाट कुनै ठोस प्रमाण पेस हुन सकेको नदेखिँदा जाहेरी दरखास्त र अभियोगको आधारमा मात्र प्रतिवादीहरूले जाहेरीमा उल्लेख गरेबमोजिमकै धनमाल चोरी गरेका रहेछन् भन्न मिल्ने नदेखिँदा अभियोग दाबीबमोजिम पूरै बिगो ठहर हुनुपर्ने भन्ने पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

अतः विवेचित तथ्य, कानूनी व्यवस्था एवम् प्रमाणको आधारमा प्रतिवादीहरू अभिषेक तामाङ र निरज थापालाई अभियोग कायम हुन नसकेको भनी र प्रतिवादीहरू श्याम भन्ने घनश्याम पौडेल तथा गोबिन्द तिरूवालाई अभियोगदाबीबाट सफाइ दिने गरी भएको सुरूको फैसलालाई सदर गरी एवम् प्रतिवादीहरू होमबहादुर गुरूङबाट बरामद बिगो रू.३,३३,०००।-, डेविट राईबाट रू.२०,०००।- र प्रतिवादी सचिन खवासबाट रू.१६,०००।- गरी जम्मा बिगो रू.३,६९,०००। को धनमाल जबरजस्ती चोरी गरेको ठहर गरेको देखिँदा प्रतिवादीहरूलाई चोरीको महलको १२ नं. र १४(२) नं. बमोजिम जनही कैद १ महिना १५ दिन र जबरजस्ती चोरी गरेको जम्मा बिगो रू.३,६९,०००।- को डेढी अर्थात रू.५,५३,५००।- जनही जरिवाना गर्नुपर्नेमा सो नगरेको हदसम्म सुरूको फैसला केही उल्टी गरी प्रतिवादीहरू होमबहादुर गुरूङ, सचिन खवास र डेविट राईलाई जनही १ (एक) महिना १५ (पन्ध्र) दिन कैद तथा जनही रू.५,५३,५००। (पाँच लाख त्रिपन्न हजार पाँच सय रूपैयाँ) जरिवाना भई जरिवानाबापत कैद हुने ठहर गरी पुनरावेदन अदालत बुटवलबाट मिति २०७१।७।१७ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृतः इन्दिरा शर्मा

इति संवत् २०७३ साल भदौ ७ गते रोज ३ शुभम्।

६

**स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.डा. आनन्दमोहन भट्टराई,** ०७३-WH-०००४, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, *लछिराम थापा वि. प्रहरी प्रधान कार्यालय, के.का. अनुसन्धान ब्युरो, काठमाडौंसमेत*

रिट निवेदकको वतन बर्दिया जिल्ला पाताभार गा.वि.स. वडा नं. ८ रहेको र २०६४ सालदेखि २०७० सालसम्म बर्दिया जिल्लाको गोला गा.वि.स.-४ मा वि.एल. बस्त्रालय खोली कपडा व्यवसाय गरी बसेको देखिन आउँछ र गोला गा.वि.स.-४ मा कपडा पसल गरेर बसेकै अवधिमा निज प्रतिवादीउपर गैंडा चोरी शिकारी तथा आखोटोपहार खरिद बिक्री तथा ओसारपसार मुद्दा बर्दिया राष्ट्रिय निकुञ्ज कार्यालयमा चलेको देखिन्छ। प्रचलित कानूनअनुसार कसुर हुने कार्य गर्ने व्यक्तिउपर अधिकारप्राप्त निकायले कारवाही गरी अनुसन्धान गरी अदालत वा मुद्दा हेर्ने निकाय/अधिकारीसमक्ष अभियोग दाबी पेस गरी आरोपित व्यक्ति दोषी देखिएमा दोषी ठहर गरी कानूनबमोजिम कैद वा जरिवाना गरेको विषयलाई अन्यथा भन्न नमिल्ने।

रिट निवेदकले कागज जबरजस्ती गराएको भनी रिट निवेदनमा उल्लेख गरे पनि निजले सो कागज जबरजस्ती गराएको भनी कहिँकतै उजुर गरेको पनि देखिँदैन। यसरी सो कागज अन्यथा प्रमाणित नभएसम्म त्यसले कानूनी मान्यता पाउने कुरामा विवाद देखिँदैन। फैसला कार्यान्वयनको क्रममा वास्तविक लगतवाला व्यक्तिको पहिचानको लागि भएको सनाखत कागजलाई अन्यथा मान्नुपर्ने पनि देखिँदैन। यी रिट निवेदकको बाबुको नाम प्रस्तुत रिट निवेदन, प्रस्तुत रिट निवेदन दर्ता गर्दा पेस गरेको नागरिकता र निवेदक पक्राउ परेपछि बर्दिया राष्ट्रिय निकुञ्ज कार्यालयसमक्ष मिति २०७३।३।२२ मा गरेको सनाखत कागजसमेतमा

भिडेको र यस सम्बन्धमा कतै विवाद नरहेको अवस्थामा यी निवेदक प्रतिवादीबाटै आरोपित कसुर भएको तथ्य पुष्टि हुन आउने।

अतः उल्लिखित तथ्य एवम् विवेचनासमेतको आधारमा फैसलाअनुसारको कैद र जरिवाना असुलीको क्रममा निवेदक थुनामा रहेको देखिँदा निवेदन मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरिरहनु परेन। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: विदुर काफ्ले

कम्प्युटर: रामशरण तिमिल्सिना

इति संवत् २०७३ साल असोज ४ गते रोज ३ शुभम्।

७

**स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.डा. आनन्दमोहन भट्टराई,** ०७२-CR-१६५८, बढुवा प्रयोजनको लागि अदालतको फैसलाले बदर भएको झुट्ठा कागजात पेस गरी भ्रष्टाचार गरेको, *नेपाल सरकार वि. सुरेन्द्रप्रसाद श्रेष्ठ*

प्रतिवादी सुरेन्द्रप्रसाद श्रेष्ठ मिति २०५५।४।३१ देखि २०५८।५।४ सम्म रा.प.अनं. प्रथम श्रेणीको लेखापाल पदमा बढुवा भई सोही पदमा कार्य गरेको अवधि ३ वर्ष ४ दिन र मिति २०५८।१२।२१ देखि २०७०।१२।३० सम्म रा.प.अनं. प्रथम श्रेणीको लेखापाल पदमा कार्य गरेको अवधि १२ वर्ष ९ दिनसमेत गरी निजले रा.प.अनं. लेखापाल पदमा १५ वर्ष कार्य गरेको भनी पेस भएको विवरणका आधारमा मिति २०७१।३।२९ मा बढुवा समितिको निर्णयानुसार निजलाई निजामती सेवा ऐन, २०४९ को दफा २४घ१ बमोजिम बढुवा गरेकोमा सो बढुवा निर्णय यथावत रहेको देखिने।

प्रतिवादीले बढुवा प्रयोजनका लागि अदालतको फैसलाले बदर भएको झुट्ठा कागजात पेस गरी भ्रष्टाचार गरेको भन्ने आरोप दाबी रहेकोमा यी प्रतिवादीले आफ्नो सुरूमा लेखापाल पदमा बढुवा भएको मिति तथा उक्त बढुवा अदालतबाट बदर भएको व्यहोरा र पुनः सोही लेखापाल पदमा बढुवा भएको मितिसमेत उल्लेख गरी बढुवा फाराम भरेको देखिएको र निजले भरेको सोही विवरणका आधारमा बढुवा समितिबाट लेखा अधिकृत पदमा बढुवा हुने निर्णय भएको देखिएकाले निजले झुट्ठा कागजात तथा विवरण पेस गरेको भन्ने आरोप दाबी वस्तुनिष्ठ प्रमाणबाट पुष्टि हुन सकेको नदेखिँदा यी प्रतिवादीले आरोप दाबीबाट सफाइ पाउने ठहऱ्याई विशेष अदालत काठमाडौबाट भएको फैसला मनासिब देखिँदा वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

अत: उल्लिखित आधार, तथ्य र विवेचनासमेतका आधारमा यी प्रत्यर्थी / प्रतिवादीले आफू सुरूमा बढुवा भएको मिति २०५५।४।३१ र पुनः बढुवा भएको मिति २०५८।१२।२१समेत उल्लेख गरी यथार्थ विवरण पेस गरेको देखिएकोले बढुवा प्रयोजनका लागि झुट्ठा कागजात पेस गरी भ्रष्टाचार गरेको भन्ने आरोपित कसुर प्रमाणित हुन सकेको नदेखिँदा प्रत्यर्थी/ प्रतिवादीले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने ठहर गरी विशेष अदालत काठमाडौंबाट मिति २०७२।८।२३ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृतः दुर्गाप्रसाद खनाल

कम्प्युटरः अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०७३ साल मंसिर ७ गते रोज ३ शुभम्।

८

**स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.डा. आनन्दमोहन भट्टराई,** ०७२-CR-१५०९, भ्रष्टाचार (अनियमितता), *नेपाल सरकार वि. सहदेवकुमार रिमालसमेत*

विद्यालय व्यवस्थापन समितिले खरिद समिति, जिन्सी समिति, भवन निर्माण समिति निर्माण

गरी सोही समितिको रेखदेखमा विद्यालय भवन निर्माण कार्य सम्पन्न गरी लगत अनुमानभन्दा बढी भएका खर्चहरू समेत व्यवस्थापन समितिको बैठकबाट अनुमोदन गरी सोही आधारमा यी प्रतिवादीहरूले खाता सञ्चालन गरेको हैसियतले व्यवस्थापन समितिको बैठकले अनुमोदन गरेका बिल भरपाई अनुसारको रकम भुक्तानीसम्म गरेको अवस्था देखिएकाले यी प्रत्यर्थी / प्रतिवादीहरूले आरोप दाबीबमोजिमको कसुर गरेको पुष्टि हुन नसकेको आधारमा प्रतिवादीहरूले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने ठहऱ्याई विशेष अदालतबाट भएको फैसला अन्यथा भयो भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

तसर्थ उल्लिखित तथ्य एंव विवेचनासमेतका आधारमा प्रत्यर्थी / प्रतिवादीहरूले लागत अनुमानभन्दा बढी खर्च देखाई विद्यालयलाई हानी नोक्सानी पुऱ्याई भ्रष्टाचार गरेको भन्ने कुरा वस्तुनिष्ट प्रमाणबाट पुष्टि हुनसकेको नदेखिँदा वादी नेपाल सरकारको आरोप दाबी पुग्न नसकी प्रत्यर्थी/प्रतिवादीहरूले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने ठहर गरी विशेष अदालत काठमाडौंबाट मिति २०७२।९।१९ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: दुर्गाप्रसाद खनाल

कम्प्युटर: विकेश गुरागाईं

इति संवत् २०७३ साल मंसिर ७ गते रोज ३ शुभम्।

९

**स.का.मु.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री दीपकराज जोशी,** ०६७-CI-०६१५, जग्गा खिचोला मेटाई चलन चलाईपाउँ, *जनक दुलारी मिश्र वि. बन्दना सिंहसमेत*

अदालतबाट नाप नक्सा हुँदा जुन व्यक्तिले पर्खाल लगाएको भनी खुल्न आएको छ त्यो व्यक्तिलाई प्रतिवादी कायम गरी दाबीसमेत लिन नसकेको अवस्थामा त्यस्तो जग्गाको सम्बन्धमा प्रस्तुत मुद्दाबाट खिचोला भएको छ, छैन भनी बोल्न मिल्ने नदेखिएको अवस्थामा सो जग्गाका सम्बन्धमा खिचोला भएको भनी भन्न मिलेन भनी भएको पुनरावेदन अदालत नेपालगन्जको फैसलालाई अन्यथा भन्न नमिल्ने।

कि.नं.१२३ को जग्गा खिचोला ठहर गरी भएको पुनरावेदन अदालतको फैसला मिलेन भन्ने प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिरका सम्बन्धमा हेर्दा उक्त कि.नं. १२३ को जग्गा न.नं. १३ र १४ मा रहेको भन्ने नक्सा मुचुल्काबाट देखिन्छ । न.नं.१३ र १४ मध्ये न.नं.१३ को जग्गामा दक्षिणतर्फबाट ठाउँठाउँमा काठ र सिमेन्टको पिलर गाडेको भनी उक्त नक्सा मुचुल्कामा खुलाइएको देखियो । सो जग्गामा नापी शाखाले पिलर र काठ गाडी छुट्याई दिएको भनी प्रतिवादी बन्दना सिंहले प्रतिउत्तर जिकिर लिँदा उल्लेख गरेको पाइयो । नापी शाखाले पिलर गाडी सीमाना छुट्याई दिएको भनी स्वयम् प्रतिवादीले स्वीकार गरेको अवस्थामा सो पिलरभन्दा बाहिरको जग्गालाई प्रतिवादी बन्दना सिंहको जग्गा हो भनी भन्न मिल्ने देखिएन । उक्त न.नं. १३ को जग्गा वादी जनक दुलारी मिश्रको कि.नं. १२३ मा उल्लिखित जग्गामध्येकै जग्गा रहेको देखिँदा न.नं. १३ को जग्गा बिगाहा ०-०-१.४४ क्षेत्रफलसम्म प्रतिवादी बन्दना सिंहले खिचोला गरेको ठहऱ्याई पुनरावेदन अदालत नेपालगन्जबाट भएको फैसलालाई अन्यथा भन्न नमिल्ने।

अतः माथि विवेचित तथ्य एवम् प्रमाणबाट न.नं. ८ र ९ को जग्गा प्रतिवादीले खिचोला गरेको ठहर गरी सो जग्गा वादीले चलन चलाई पाउने र कि.नं. १२३ मा प्रतिवादीले खिचोला गरेको नठहरी सोतर्फ फिराद दाबी पुग्न नसक्ने भनी बाँके जिल्ला अदालतबाट

मिति २०६६।१।३१ मा भएको फैसलालाई केही उल्टी गरी न.नं. ८ को जग्गामा ओम शान्तिपथको विस्तार भई बचेको केही जग्गा मात्र रहेको र न.नं. ९ को जग्गामा लल्ली बेलदार्नीले पर्खाल लगाएको भन्ने देखिएको हुँदा उक्त न.नं. ८ र ९ को जग्गा प्रतिवादीले खिचोला गरेको नठहर्ने भनी तथा कि.नं. १२३ को न.नं. १३ को ज.वि. ०-०-१.४४ जग्गासम्म प्रतिवादी बन्दना सिंहले खिचोला गरेको ठहर गरी पुनरावेदन अदालत नेपालगन्जबाट मिति २०६७।३।१५ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने । इजलास अधिकृत: सरोजराज रेग्मी

इति संवत् २०७३ साल जेठ २४ गते रोज २ शुभम्।

१०

**स.का.मु.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री जगदीश शर्मा पौडेल,** ०७२-RC-०१३८ र ०७०-CR-०२८१, कर्तव्य ज्यान र अपहरण तथा शरीर बन्धक, *नेपाल सरकार वि. कालिका मुराउ र नेपाल सरकार वि. अनीता मोरिया*

मिसिल संलग्न जाहेरी दरखास्त, घटनास्थल तथा लास जाँच प्रकृति मुचुल्का घटना विवरण कागज, वस्तुस्थिति मुचुल्का पोष्टमार्टम रिपोर्ट, बरामदी मुचुल्का, प्रतिवादी कालिका मुराउको साबिति बयान, पीडित बालिका तथा जाहेरवालाको बकपत्र आदिसमेतका आधारमा प्रतिवादी कालिका मुराउले मृतक राजेन्द्रप्रसाद अवस्थीलाई निजका नाबालक छोरीहरू १२ वर्षिया पल्लवी अवस्थी र १० वर्षिया लल्लु अवस्थीसहित नेपालमा तिर्थ घुम्न जाउँ भनी ल्याई कैलाली जिल्लाको भरताल जङ्गलमा मृतक राजेन्द्रप्रसाद अवस्थीलाई बन्चरो प्रहार गरी हत्या गरी निजका नाबालक छोरीहरूलाई कब्जामा लिई भरताल जङ्गलबाट चुहास्थित शिव मन्दिरमा लगेको, तत्पश्चात ती बालिकाहरूलाई कोहलपुर हुदै दाङ्गसमेत पुऱ्याई विभिन्न स्थानमा बन्धक बनाई राखेको र प्रहरीद्धारा बालिकाको उद्धार हुन गएको तथ्य मालाकार रूपमा पुष्टि हुन गएकोले प्रतिबादी कालीका मुराउले मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं. र १३(३) नं. तथा मुलुकी ऐन, अपहरण तथा शरीर बन्धक लिनेको महलको १,२,३, ७ र ९ नं. को परिभाषित कसुर गरेको देखिँदा निज प्रतिवादी कालिका मुराउका सम्बन्धमा सुरू कैलाली जिल्ला अदालतले गरेको फैसलालाई सदर गर्ने ठहऱ्याएको पुनरावेदन अदालत दिपायलको फैसला मिलेकै देखिन आउने।

प्रतिवादी अनीता मोरिया मार्ने मतसल्लाहमा पसेको भन्ने कुरामा इन्कार रही बयान गरेको देखिन्छ । सह-प्रतिवादी कालिका मुराउको बयान व्यहोराबाट अनीता मोरियाको कालिका मुराउसँगको सम्बन्धलाई समेत स्पष्ट ढङ्गले उजागर गरेको छ । अनीता मोरिया खुट्टासम्बन्धी अपाङ्ग रहेको, निजको उपचारका लागि साथमा लिई हिंड्ने गरेको देखिन्छ भने प्रस्तुत वारदातका सम्बन्धमा प्रतिवादी कालिका मुराउले आफू एक्लैले मृतक राजेन्द्रप्रसाद अवस्थीलाई पूर्वरिसइवीका कारण बन्चरो प्रहार गरी मारेको, अनीताको कुनै मत सल्लाह नरहेको भनी अदालतमा स्पष्ट ढङ्गले बयान गरेको देखिनुका साथै मृतकका छोरीहरू लल्लु र पल्लवीसमेतले भरतालको जङ्गलमा राजेन्द्रप्रसादलाई लिएर जाँदा कालिका मुराउ एक्लैले लगेको भनी बकपत्र गरिदिएको देखिएको छ । वारदातस्थलमा निजको उपस्थिति रहे भएको देखिन नआएको र वारदात घटाएको भोलिपल्ट मात्र यी प्रतिवादी अनीता मोरीया बसेको शिव मन्दिरमा कालिका मुराउले बालिकाहरूलाई लगी गएको देखिनुका साथै मृतक राजेन्द्रप्रसाद अवस्थीको हत्याको वारदातमा यी प्रतिवादी अनीता मोरियाको संलग्नता रहेको भन्ने वस्तुनिष्ठ रूपमा कहीँकतैबाट

पुष्टि हुन आएको नदेखिने।

फौजदारी कसुरमा अभियुक्तमाथिको अभियोग शङ्कारहित तवरले पुष्टि हुनु पर्दछ भन्ने फौजदारी न्यायको सर्वमान्य सिद्धान्त हो । सोही सिद्धान्तबमोजिम प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ मा फौजदारी कसुरमा प्रतिवादीउपरको अभियोग प्रमाणित गर्ने प्रमाणको भार वादीमाथि हुने भन्ने स्पष्ट कानूनी व्यवस्था गरेको पाइन्छ। वादी नेपाल सरकारले अनीता मोरियाले मृतक राजेन्द्रप्रसाद अवस्थीको हत्या गर्ने कालिका मुराउसँगको मतसल्लाहमा पसेकी भन्ने कुरा पुष्टि गर्न ठोस सबुत पेस गर्न सकेको नदेखिने।

प्रतिवादी अनीता मोरियाको अनुसन्धान र अदालतसमक्ष भएको बयान, मृतकका छोरीहरू लल्लु अवस्थी र पल्लवी अवस्थीको बकपत्र, सहअभियुक्त कालिका मुराउको बयानलगायतका मिसिल संलग्न प्रमाणहरूबाट प्रतिवादी अनीता मोरियालाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १७(३) को कसुरमा सफाइ दिई मुलुकी ऐन, अपहरण तथा शरीर बन्धक लिनेको कसुर अपराधतर्फ ११ (एघार) वर्ष कैद र रू.५०,०००।– (पचास हजार रूपैयाँ) जरिवाना हुने एवम् प्रतिवादी कालिका मुराउलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) बमोजिम सर्वश्वसहित जन्मकैद र सोही ऐनको अपहरण तथा शरीर बन्धक लिनेको कसुर अपराध तर्फ १४ (चौध) वर्ष कैद र रू. ५०,०००।– (पचास हजार रूपैयाँ) जरिवाना हुने ठहऱ्याई सुरू कैलाली जिल्ला अदालतबाट मिति २०६८।१०।२३ मा भएको फैसला सदर हुने ठहऱ्याएको पुनरावेदन अदालत दिपायलबाट मिति २०६९।१२।१८ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृतः रामप्रसाद बस्याल

इति संवत् २०७३ साल असार ७ गते रोज १ शुभम्।

११

**स.का.मु.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री जगदीश शर्मा पौडेल,** ०७२-RC-०१५८, कर्तव्य ज्यान, *नेपाल सरकार वि. प्रकाश मुखिया*

प्रतिवादीको बयान कथन, मृतकको आमाको कागज व्यहोरा र मृतकको टाउकोलगायत शरीरको विभिन्न भागमा लागेको multiple traumatic injuries का कारण मृतक नेत्रबहादुर मुखियाको मृत्यु भएको भन्ने शव प्ररीक्षण प्रतिवेदनलगायतका मिसिल संलग्न कागज प्रमाणबाट निज प्रतिवादीको कर्तव्यबाट नेत्रबहादुर मुखियाको मृत्यु भएको भन्ने तथ्य शङ्कारहित तवरबाट पुष्टि हुन आएको देखिने।

फलामको झम्पलजस्तो वस्तुले टाउकोमा प्रहार गर्दा मानिस मर्न सक्ने अवस्थाप्रति बेवास्ता गरी मृतक भुइँमा लडेपश्चात् पनि पटकपटक मृतकको शरीरका विभिन्न भागमा प्रहार गरेको अवस्थाबाट मार्ने मनसाय थिएन भन्ने प्रतिवादीको भनाई विश्वसनीय देखिएन। आफू एकोहोरो भई टोलाउने गरेको र सोही कारणबाट औषधी सेवन गर्ने गरेको तथ्य प्रमाणित हुने कागज प्रमाण प्रतिवादीले पेस गर्न सकेको पनि देखिँदैन। निज सो अवस्थाको भएको भन्ने मौकामा कागज गर्ने मानिसहरू र स्वयम् प्रतिवादीको आमाले भन्न सकेको देखिँदैन। यसरी प्रतिवादीले आफूले गरेको जिकिरअनुसारको तथ्य पुष्टि हुने प्रमाण प्रस्तुत गर्न सकेको नदेखिँदा अन्यथा प्रमाणको अभावमा सो जिकिरलाई प्रमाणमा ग्रहण गरी न्याय निरूपण गर्न कानूनत: मिल्ने नदेखिँदा पुनरावेदन अदालतको फैसला अन्यथा नभई मनासिबदेखिन आउने।

तसर्थ उल्लिखित तथ्य एवम् आधार प्रमाणसमेतबाट प्रतिवादीले अभियोग दाबीबमोजिमको कसुर गरेको ठहऱ्याई सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ठहर गरेको सुरू इलाम जिल्ला अदालतको फैसला

सदर हुने गरी पुनरावेदन अदालत इलामबाट मिति २०७१।११।२६ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा साधक सदर हुने।

इजलास अधिकृत: दिलीपराज पन्त

कम्प्युटर: विकेश गुरागाई

इति संवत् २०७३ साल वैशाख २० गते रोज २ शुभम्।

१२

**स.का.मु.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री जगदीश शर्मा पौडेल,** ०६८-CR-००९६, कर्तव्य ज्यान, *रामबहादुर चन्द वि. नेपाल सरकार*

जाहेरवाला करणशिला उपाध्यायले आफ्नो जाहेरी व्यहोरा खण्डन हुने गरी प्रतिवादी रामबहादुर चन्दसँगको रिसइवीको कारणले मैले प्रहरीमा जाहेरी दिएको हुँ भनी अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र गरेको देखिन्छ । यसरी जाहेरवाला (मृतकको आमा) समेतले आफ्नो जाहेरी व्यहोराविपरीत हुने गरी व्यक्त गरेको कथन, मौकामा कागज गर्ने देवु चन्दको कागज र पुनरावेदक प्रतिवादीको इन्कारी बयानबाट निजउपरको अभियोग दाबी संकारहित रूपमा पुष्टि भएको भन्ने देखिन आएन । यसका अतिरिक्त मृतकले बिष सेवन गरेको हो वा प्रतिवादीले विष खुवाई कर्तव्य गरी मारेको हो थाहा छैन भन्ने अन्जु कुँवर, कालु चन्द, अमिला लुहार र नन्दी लावडसमेतले मौकामा र अदालतमा उपस्थित भई गरेको कागजबाट पुनरावेदक प्रतिवादीले नै मृतकलाई बिष सेवन गराएको भन्ने तथ्य एकिन हुने अवस्थाको देखिएन । यसरीउपरोक्त तथ्यहरूको विश्लेषण र संकलित प्रमाण कागजहरूबाट पुनरावेदक प्रतिवादीमाथिको कसुर स्वतन्त्र र शङ्कारहित तवरबाट वस्तुनिष्ठ प्रमाणद्वारा पुष्टि हुने अवस्थाको देखिन नआउने।

मिसिल संलग्न मृतकको भिसेरा रिपोर्ट हेर्दा विषादी भेटिएको भन्ने देखिन्छ, तथापि भिसेरामा विषादी भेटिनुले प्रतिवादीले नै बिष सेवन गराएको भनी अनुमान गर्न मिल्ने हुँदैन । फौजदारी मुद्दामा शङ्का र अनुमानको भरमा कसुरदार ठहर गर्न मिल्दैन । प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ मा फौजदारी मुद्दामा अभियुक्तको कसुर प्रमाणित गर्ने भार वादीको हुने छ भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको छ। उक्त कानूनी व्यवस्थानुसार प्रतिवादीउपर लागेको अभियोग पुष्टि हुने किसिमले सोको प्रमाण पुऱ्याउने भार अभियोजन पक्षमा रहने हुन्छ। जाहेरवालाको बकपत्र र सुरूको जाहेरी व्यहोरा परस्पर असंगत रहेको, मौकामा कागज गर्ने मानिसहरूको कथन विवादास्पद देखिएको र प्रतिवादी माथिको कसुर पुष्टि हुने स्वतन्त्र एवम् वस्तुनिष्ट प्रमाणहरू पेस भएको नदेखिएको स्थितिमा विवादास्पद तथ्यहरूमा निर्भर रही अन्यथा प्रमाणित नभएसम्म अभियोग लागेको व्यक्तिलाई दोषी कारार गर्न मिल्ने नदेखिने।

मृतक र प्रतिवादीबीच सामान्य झैझगडा पर्ने गरेको मिसिलबाट देखिए पनि वारदात समयभन्दा अगाडि प्रतिवादी घर छोडी महेन्द्रनगर बजार गएको भन्ने निजको अदालतको बयान र मिसिल संलग्न मौकामा बुझिएका मानिसहरूको कागजबाट देखिन्छ। दिउँसोको ३।४ बजेको समयमा छोरी आगन बाारीमा छटपटाइ रहेको अवस्थामा आफूले छोरीलाई सोडा पानीमा फिटी खुवाएको भनी मृतककी आमाले जाहेरीमा उल्लेख गरेको पाइन्छ भने अदालतमा बकपत्र गर्दा प्रतिवादीसँगको रिसइवी को कारण जाहेरी दरखास्त दिएको भनी बकपत्र गरेको देखिन्छ । प्रतिवादी घर छोडी बजार गएको लामो समयपछि मृतक छटपटाई रहेको अवस्थामा फेला परेको भन्ने भनाईबाट पनि प्रतिवादीले नै विष सेवन गराएको भनी अनुमान गर्न मिल्ने देखिँदैन । पुनरावेदक प्रतिवादीले मृतकलाई उपचार गराउन अस्पताल लानु भएको भन्नेसमेत

भनाई र मौकामा कागज गर्ने देवु चन्दसमेतको कागज व्यहोराबाट घरदेखि बाहिर गएका यी प्रतिवादीले मृतकलाई विष सेवन गराएको भन्ने कुरा समर्थित हुन नआउने।

मृतकलाई पुनरावेदक प्रतिवादीले नै विष खुवाएको भन्ने ठोस सबुत प्रमाणबाट पुष्टि भएको नदेखिएको र वारदातस्थलबाट अस्पताल पुग्दासम्म होसमै रहेको मृतकले मृत्युको कारण सम्बन्धमा केही कुरा व्यक्त नगरेको अवस्थामा प्रतिवादीले मृतकप्रति गरेका पूर्व व्यवहारलाई ज्यानजस्तो फौजदारी अपराधमा भरपर्दो प्रमाणको रूपमा स्वीकार गर्न मिल्ने देखिँदैन। यस्तो अवस्थामा अभियुक्तलाई दोषी करार गर्नु विवेकपरक नहुनुको साथै न्यायकोविपरीत हुन जाने हुँदा पुनरावेदक प्रतिवादीलाई अभियोग दाबीबमोजिम सजाय हुने ठहर गरी पुनरावेदन अदालत महेन्द्रनगरबाट भएको फैसला मनासिब देखिन नआउने।

अतः माथि उल्लिखित आधार प्रमाणबाट पुनरावेदक प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १ नं. विपरीतको कसुरमा सोही महलको १३(२) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ठहऱ्याई भएको सुरू कञ्चनपुर जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर हुने गरी पुनरावेदन अदालत महेन्द्रनगरबाट मिति २०६६।११।१२ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई पुनरावेदक प्रतिवादी रामबहादुर चन्दले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने।

इजलास अधिकृतः दिलीपराज पन्त

कम्प्युटर: विकेश गुरागाई

इति संवत् २०७३ साल वैशाख २२ गते रोज ४ शुभम्।

१३

**स.का.मु.प्र.न्या.श्री वैद्यनाथ उपाध्याय र मा.न्या. श्री देवेन्द्र गोपाल श्रेष्ठ,** ०६८-CR-०२८५, कर्तव्य ज्यान, *विनोद साह तेली वि. नेपाल सरकार*

प्रस्तुत वारदात मिति २०६५।०८।२३ मा घटेको मिसिल संलग्न सोही मितिको घटनास्थल तथा लास जाँच मुचुल्काबाट देखिन्छ । सो घटनास्थल तथा लास जाँच मुचुल्काको दरखास्त वा सूचनाको छोटकरी विवरणमा मनोज साह तेलीले बोक्सी हो भनी धारिलो हतियारले छातीमा प्रहार गरी हत्या गरेको भनी उल्लेख भएको देखिन्छ। उक्त छोटकरी विवरणमा यी प्रतिवादीहरू प्रभु भन्ने प्रमोद साह तेली र विनोद साह तेलीले वचन दिएको भनी उल्लेखसम्म पनि भएको देखिँदैन। वारदात मिति २०६५।०८।२३ भए पनि सोको जाहेरी मिति २०६५।०९।१८ मा मात्र परेको देखिन्छ। यसरी प्रत्यक्षदर्शीले वारदात देखेको र वारदातमा को कसको संलग्नता रहेको थियो भन्ने कुरा वारदात भएकै बेला थाहा भइसकेपछि वारदात भएको २४ दिनपछि मात्र जाहेरी पर्नुको कारणसमेत मिसिलबाट नदेखिने।

घटनाका प्रत्यक्षदर्शी भनिएका जवाहिर राउत अहिरले आफू दुईसय मिटर टाढाबाट प्रतिवादीहरू प्रभु भन्ने प्रमोद साह तेली र विनोद साह तेलीले मृतकलाई मार्न मनोज साहलाई वचन दिएको सुनेको हो भन्ने व्यहोराको कागज गरेको र अदालतसमक्ष उपस्थित भई बकपत्र गरेको देखिए पनि दुईसय मिटर टाढाबाट कसैले भनेको कुरा सुनेको हो भन्ने कुरा पनि विश्वसनीय हुन सक्दैन । खुल्ला ठाउँमा दुईसय मिटर टाढाबाट कसैले बोलेको कुरा सुनेको हुँ भन्ने निजको भनाइ पनि पत्यारलाग्दो नदेखिएको अवस्थामा सोही भनाइको आधारमा जाहेरवालाले दिएको जाहेरी र अदालतमा गरेको बकपत्रसमेतलाई यी प्रतिवादीहरूलाई दोषी ठहर गर्न प्रमाणको रूपमा ग्रहण गर्न मिल्दैन। वस्तुस्थिति मुचुल्काका मानिसहरू प्रत्यक्षदर्शी नभएको र निजहरूले पनि सुनेको भरमा

आफ्नो व्यहोरा लेखाएकोले निजहरूको व्यहोरा प्रमाणग्राह्य हुन नसक्ने।

फौजदारी मुद्दामा प्रतिवादीहरूउपर लगाएको आरोप शङ्कारहित तवरले प्रमाणित गराउने दायित्व वादी नेपाल सरकारको हुन्छ । यसरी दाबी प्रमाणित गर्न पेस गरेको प्रमाण विश्वसनीय हुनुकासाथै यसले शङ्कारहित तवरले दाबी प्रमाणित गरेको हुनुपर्दछ । तर प्रस्तुत वारदातमा पेस गरिएको प्रमाण विश्वसनीय नदेखिनुका साथै यसले प्रतिवादीहरूउपरको कसुरसमेत शङ्कारहित तवरले प्रमाणित गर्न सकेको देखिएन । फौजदारी मुद्दामा शङ्काको सुविधा अभियुक्तले पाउने हुँदा प्रस्तुत वारदातमा प्रतिवादीहरूले वारदातस्थलमा उपस्थित भई मृतकलाई मार्न वचन दिएको तथ्य मिसिल संलग्न कागज प्रमाण एवम् शङ्कारहित तवरबाट पुष्टि नभएको हुँदा शङ्काको सुविधा यी प्रतिवादीहरूले पाउने देखियो । प्रतिवादीहरूउपरको आरोपित कसुर शङ्कारहित तवरले पुष्टि हुन आएको नदेखिएकोले प्रतिवादीहरू प्रभु भन्ने प्रमोद साह तेली र विनोद साह तेलीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १६ नं. बमोजिम १५ वर्ष कैद हुने ठहरी भएको सुरू फैसलालाई उल्टी गरी ऐ.१३(४) नं.को कसुरमा सोही नं. बमोजिम जन्मकैद हुने ठहऱ्याएको पुनरावेदन अदालतको फैसला कायम रहन सक्ने देखिएन। अभियोग माग दाबीबमोजिम सजाय गरेको पुनरावेदन अदालतको फैसला सदर हुनुपर्दछ भन्ने वादी नेपाल सरकारका तर्फबाट उपस्थित विद्वान् उपन्यायाधिवक्ताको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

तसर्थ, माथि विवेचित आधार, कारण एवम् प्रमाणबाट प्रतिवादीहरूले मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १६ नं. बमोजिमको कसुर गरेकोमा सोहीबमोजिम १५ वर्ष कैद सजाय हुने ठहऱ्याएको बारा जिल्ला अदालतको मिति २०६६।११।१९ को फैसला र सो फैसला केही उल्टी गरी प्रतिवादीहरूले अभियोग दाबीबमोजिम मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १३(४) नं.को कसुर कायम गरी सोही नं. बमोजिम जन्मकैदको सजाय हुने ठहऱ्याएको पुनरावेदन अदालत हेटौंडाको मिति २०६७।१०।१८ को फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई प्रतिवादीहरू प्रभु साह भन्ने प्रमोद साह तेली र विनोद साह तेलीले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने।

इजलास अधिकृत: रामु शर्मा

इति संवत् २०७३ साल जेठ १७ गते रोज २ शुभम्।

## इजलास नं. १

१

**मा.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री दीपकराज जोशी,** ०६४-CI-०६८३, ०६५-CI-०५२०, पर्खाल भत्काइ बाटो कायम, *तिमिला यमी थापा वि. हरिप्रसाद नेपालसमेत, शुभेषराज कायस्थ वि. तिमिला यमी थापा*

विवादित जग्गा विन्दु सिलवाललाई हालैको बकसपत्र गरिदिने कुवा अवालेले नै बाटोको लागि भनी दिएको देखिँदा त्यसमा विन्दु सिलबालकोसमेत हक लाग्ने देखिँदैन भने निजले नामसारी गरी दिएको विपक्षी हरिप्रसाद नेपाल र पछि हरिप्रसाद नेपाल यी प्रतिवादी सुमेषराज कायस्थको नाममा नामसारी गरी दिए पनि सो जग्गा निजको निजी कायम हुन सक्दैन। दाता कुवा अवालेले विन्दु सिलबालको नाममा पास गरेको राजीनामाको लिखतमा बाटो भनी आफ्नो हकको नभई हक परित्याग गरेको पाइन्छ। सुरू मिसिल संलग्न जिल्ला अदालतबाट भई आएको नक्साको

नक्सा नं. २ र ३ को जग्गा हाल बाटोको रूपमा प्रयोग भइरहेको देखिएको छैन तर साबिक स्रेस्ताबाट वादी तथा प्रतिवादीसमेतले उपभोग गर्ने साझा बाटोको रूपमा रहेको देखिएको अवस्थामा सो बाटोमा अवरोध हुने गरी न.नं. २ र ३ को बिचमा लगाएको पर्खाल कानूनअनुरूप लगाएको मान्न नमिल्ने।

पुनरावेदक वादी तिमिला यमी थापाले आफ्नो साबिक कित्ता नं. ४८२ को जग्गाबाट ८ फिट जग्गा बाटोको लागि छोडेको भनी दाबी लिए पनि ८ फिट जग्गा बाटोको लागि छुट्याइसकेपछि निजको नाम दर्ताको उक्त कि.नं. ४८२ को जग्गाको क्षेत्रफल घट्नुपर्नेमा वादीको स्रेस्ता भन्दा निजको जग्गा बढी रहेको देखिएको अवस्थामा विवादित जग्गामध्ये ८ फिट जग्गा वादीको रहेको मान्न मिलेन। ४ फिट जग्गा मात्र साझा बाटो कायम गरी बाँकी ८ फिट जग्गा वादीको निजी बाटो कायम हुनु पर्दछ भन्ने वादीको पुनरावेदन जिकिर एवम् कि.नं. १२८ को जग्गा मेरो निजी दर्ताको जग्गा भएकोले सम्पूर्ण जग्गा नै बाटो कायम हुने गरी भएको फैसला उल्टी हुनु पर्दछ भनी लिएको प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

तसर्थ, उल्लिखित आधार, कारण एवम् प्रमाणबाट विवादको कि.नं. १२८ को ४ फिट जग्गा मात्र बाटो कायम गर्ने गरेको काठमाडौं जिल्ला अदालतको फैसलालाई केही उल्टी गरी सुरू जिल्ला अदालतबाट भई आएको नक्सा मुचुल्कामा झगडा जनिएको न.नं. २ र ३ को पूरै जग्गा साझा बाटो कायम हुने ठहऱ्याएको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०६४।३।३ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: रामु शर्मा

इति संवत् २०७२ साल फागुन ३० गते रोज १ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री देवेन्द्र गोपाल श्रेष्ठ,** ०६४-CI-०८३०, जग्गा खिचोला, *छविलाल भन्ने राजन रेग्मी वि. डिलाराम कँडेल*

मिति २०७०।६।१० मा भई आएको नक्सा मुचुल्काको न.नं.४ मा प्रतिवादीको कि.न. ५४३ को जग्गा देखाई उक्त जग्गाको क्षेत्रफल ०-०-११ रहेको भन्ने देखिन्छ। उक्त क्षेत्रफलमा न.नं ५ मा रहेको विवादित जग्गाको ०-०-३$^{३}/_{४}$ क्षेत्रफलसमेत जोड्दा प्रतिवादीको जग्गाको क्षेत्रफल बढि हुन आउँछ। विवादित जग्गाको ०-०-३$^{३}/_{४}$ क्षेत्रफलसमेत जोड्दा वादीको जग्गाको क्षेत्रफल पुग्ने देखिँदैन। त्यसैगरी मिसिल संलग्न नापी कार्यालय चितवनको मिति २०७०।५।२७ को पत्रसाथ प्राप्त ट्राइलचेक हेर्दा वादीको दक्षिण पश्चिमतर्फको चौडाई २० मिटर रहेको देखिन्छ भने अदालतबाट भई आएको नक्सा मुचुल्काबाट १९ मिटर रहेको भन्ने देखिन आउँछ। यसरी २०५९।१०।२१ मा भई आएको नक्सा मुचुल्काको न.नं.१ख सम्म वादीको जग्गा पुनरावेदक प्रतिवादीले खिचोला गरेको भन्ने अदालतबाट भइआएको नक्सा मुचुल्का र मिसिल सामेल रहेको विवादित जग्गाको नक्सा ट्रेशसमेतका कागज प्रमाणबाट देखिन आएकोले यस अदालतबाट भएको विपक्षी झिकाउने आदेशमा उल्लिखित आधारसँग सहमत हुन सकिएन। आफ्नो जग्गाको क्षेत्रफलसम्ममा भोग रहेको भन्ने पुनरावेदन जिकिर मनासिब नदेखिँदा पुनरावेदन अदालत हेटौंडाबाट भएको फैसला अन्यथा भएको भन्न मिल्ने नदेखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: दिलीपराज पन्त

इति संवत् २०७२ साल माघ १८ गते रोज २ शुभम्।

**इजलास नं. २**

१

**मा.न्या.श्री गोपाल पराजुली र मा.न्या.श्री देवेन्द्र गोपाल श्रेष्ठ,** ०६६-CI-०१८५, घर बहाल दिलाई घरबाट उठाई चलन चलाईपाउँ, *मंगलनारायण मानन्धर वि. कृष्णप्रसाद मानन्धर*

जग्गा असोक बिनायक राज गुठीको भई सो जग्गामा प्रतिवादीले घर बनाई बसोबास गरेको स्पष्ट भएको हुँदा अशोकविनायक राज गुठीको जग्गा व्यक्तिको हुन सक्दैन। गुठीयारहरू सबैको हुने।

गुठीयारको बयान, धर्मलोप र निर्णय दर्ता बदर हक कायमलगायतका मुद्दाहरूबाट पनि जग्गा असोक बिनायक राज गुठीको भएको देखिएको अवस्था र परिस्थितिलाई हृदयङ्गम गर्दा सबै गुठीयारको आपसी सहमति र छलफलबाट पुनरावेदक प्रतिवादीलाई विवादित घरबाट निस्काशन गर्ने गरी निष्कर्षमा पुग्नु न्यायोचित हुने देखिँदा गुठीयारले आपसी सहमतिमा प्रतिवादीलाई हटाउन चाहेमा हटाउन सक्ने नै हुने । प्रतिवादीलाई घरबाट निष्काशन गर्नुपूर्व गुठीयारहरूको विचमा आपसी सहमति छलफल भएको भन्ने प्रमाण मिसिल सामेल भएको नदेखिँदा एकजना गुठीयारको उजुरीले मात्र प्रतिवादीलाई घरबाट हटाएको हदसम्म पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०६३।७।२० को फैसला केही उल्टी हुने।

इजलास अधिकृतः भीमबहादुर निरौला

इति संवत् २०७२ साल चैत १ गते रोज २ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री गोपाल पराजुली र मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा.,** ०६८-CR-१०२१, मानव बेचबिखन, *नेपाल सरकार वि. लक्ष्मी भण्डारीसमेत*

प्रतिवादी लक्ष्मी भण्डारीलाई गिता धामीले भा.रू.३५००।- रकम पठाएकोमा लक्ष्मी भण्डारी र गीता धामी आमा छोरी नाताको भएकोमा आमाले आफ्नो छोरीलाई रकम पठाउने कुरालाई स्वाभाविक नै मान्नुपर्ने हुन्छ। पैसा दिएको भन्ने आधारमा मात्र प्रतिवादीहरूले मानव बेचबिखनजस्तो गम्भीर कसुर गरेको भनी अनुमान गर्नु उचित हुँदैन। पीडित प्रतिवादी लक्ष्मी भण्डारीको घरमा बस्ने गरेको र गीता धामी पनि लक्ष्मी भण्डारीको घरमा बेलाबेलामा आउने जाने गरेको हुँदा पीडित र गीता धामी एकआपसमा परिचित नै रहेको देखिन्छ। यसरी पूर्वपरिचित आफन्तको साथमा बसेको कुरालाई मानब बेचबिखन जस्तो अपराधसँग जोडेर अन्यथा सोच्नु न्यायोचित नहुने।

मिसिल संलग्न प्रमाणबाट पीडित भारत पुगेको कुरामा विवाद देखिँदैन। तर एक स्थानबाट अर्को स्थानसम्म पुग्नुलाई नेपाल कानूनले निषेधित गरेको पनि छैन। यस्तोमा पीडित कुन उद्देश्यले त्यस स्थानमा पुगेको हो भन्ने कुरा मात्र प्रमुख हुने हो। प्रस्तुत वारदातमा पीडित भारत पुग्नुको मक्सद बेचबिखन नभई आफ्नो आफन्तसँग भेटघाटको लागि गएको भन्ने तथ्य प्रमाणित भइरहेको अवस्था छ। पीडित आफ्नो खुसीले आफन्तसँग भेटघाट गर्नको लागि भारत पुगेको भन्ने देखिएको हुँदा अभियोग माग दाबीबमोजिमको कानूनी प्रावधान आकर्षित हुने नदेखिने।

प्रतिवादीहरूले मौका र अदालतमा अभियोग दाबीबमोजिम आरोपित कसुरमा इन्कारी रही बयान गरेको र उक्त इन्कारी बयानलाई समर्थन गर्ने गरी निज प्रतिवादीहरूको साक्षीले अदालतमा बकपत्रसमेत गरिदिएको देखिनुका साथै, प्रतिवादीले मानव बेचबिखन जस्तो कार्य गरेको प्रत्यक्ष देख्ने चस्मदिद गवाहको अभावजस्ता विषयबाट प्रतिवादीको निर्दोषिता प्रमाणित भइरहेको देखिँदा प्रतिवादीहरूलाई

अभियोग दाबीबमोजिम आरोपित कसुरबाट सफाइ दिने गरी भएको पुनरावेदन अदालत महेन्द्रनगरको फैसलामा कानूनी त्रुटि रहेको नदेखिने।

अतः उल्लिखित आधार कारणबाट प्रतिवादीहरू लक्ष्मी बोहरा र लक्ष्मी भण्डारीलाई सुरू कञ्चनपुर जिल्ला अदालतबाट मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा १५(१)(च) बमोजिम जनही २ वर्ष ६ महिना कैद सजाय हुने ठहऱ्याएको मिति २०६८।२।२ को फैसला उल्टी गरी प्रतिवादीहरूले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत महेन्द्रनगरको मिति २०६८।७।२८ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृतः मीना गुरूङ

इति संवत् २०७३ साल माघ २४ गते रोज २ शुभम्।

३

**मा.न्या.श्री गोपाल पराजुली र मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा.,** ०६८-CR-१०३२ र ०६८-CR-१०७१, जबरजस्ती करणी, *नीरकुमार राई वि. नेपाल सरकार र नेपाल सरकार वि. नीरकुमार राई*

प्रतिवादी अध्ययन गर्ने विद्यालय पशुपति मा.वि., तिम्मा ९ भोजपुरबाट प्राप्त मिति २०६७।९।११ को जन्ममिति खुलाई पठाइएको सम्बन्धमा प्रेषित पत्रमा निज प्रतिवादीको जन्मदर्ता प्रमाणपत्रको आधारमा विद्यालयको विद्यार्थी भर्ना अभिलेखमा उल्लेख भएबमोजिम २०५१।७।२७ हो भन्ने व्यहोरा उल्लेख भएको देखिन्छ। विद्यालयबाट प्राप्त विवरणलाई प्रतिवादीको उमेर यकिन गर्ने सम्बन्धमा प्रमाणमा लिन इन्कार गर्नुपर्ने कुनै वस्तुनिष्ठ आधार रहेको देखिँदैन। यसबाट वारदात मिति २०६७।७।२७ को दिन निज प्रतिवादीको उमेर १५ वर्ष ९ महिना २५ दिन मात्र भई १६ वर्षभन्दा कम उमेर भएको देखिन आयो। बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०४८ को दफा २(क) मा "बालक भन्नाले १६ वर्ष पूरा नगरेको ब्यक्ति" भनी उल्लेख गरेको हुँदा प्रस्तुत वारदातका प्रतिवादी नीरकुमार राई वारदात समयमा नाबालक नै रहेको पुष्टि हुन आयो। यसैले प्रतिवादी १६ वर्ष पुगिसकेको भन्ने प्रस्ट हुँदाहुँदै १६ वर्ष नपुगेको भनी आधा सजाय गरेको फैसला त्रुटिपूर्ण हुँदा बदर गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

पीडितलाई प्रतिवादीले जबरजस्ती करणी गरेको ठहर भएको हुँदा पीडितलाई क्षतिपूर्ति भराई दिनुपर्ने देखियो। प्रतिवादी नीरकुमार राईलाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ३(५) नं. बमोजिम ५ वर्ष र ३क नं. बमोजिम थप ५ वर्षसमेत गरी जम्मा १० वर्ष कैद सजाय हुने ठहरी बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०४८ को दफा ११(३) बमोजिम आधा कैद वर्ष ५ हुने ठहऱ्याई क्षतिपूर्तिसमेत भराउने गरी पुनरावेदन अदालत धनकुटाबाट भएको फैसलामा कानूनी त्रुटि रहेको नदेखिने।

अतः उल्लिखित आधार र कारणबाट प्रतिवादी नीरकुमार राईलाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको १ र ३ नं.को देहाय ५ को कसुरमा ऐ. ३ नं. को देहाय ५बमोजिम ५ वर्ष कैद तथा ऐ. ३क नं. बमोजिम थप ५ वर्ष कैद सजाय गरी जम्मा १० वर्ष कैद सजाय हुने ठहरी बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०४८ को दफा ११(३) बमोजिम आधा सजाय ५ वर्ष कैद र क्षतिपूर्ति दिलाई दिन नमिल्ने ठहर गरी भएको सुरू भोजपुर जिल्ला अदालतको मिति २०६७।१०।२३ को फैसला कैदको हकमा सदर कायम गरी प्रतिवादीबाट पीडितलाई क्षतिपूर्ति नभराएको हदसम्म केही उल्टी भई प्रतिवादीबाट पीडितले रू.१०,०००।- क्षतिपूर्ति भरी पाउने ठहऱ्याएको पुनरावेदन अदालत धनकुटाको मिति २०६८।७।३० को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर

हुने।

इजलास अधिकृतः मीना गुरूङ

कम्प्युटर: अभिषेक कुमार राय

इति संवत् २०७३ साल माघ २४ गते रोज २ शुभम्।

४

**मा.न्या.श्री गोपाल पराजुली र मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे,** ०७१-CR-०१६२, अपहरण तथा शरीर बन्धक, *गुणराज आचार्य वि. नेपाल सरकार र नेपाल सरकार वि. गोपीकृष्ण भुर्तेलसमेत*

प्रतिवादी गोपीकृष्ण भुर्तेलको मोबाइल फोन नं.९८०४३७७२८० रहेको र उक्त नं. मा वारदात भएको मिति २०६५।११।९ गते अर्का प्रतिवादी शम्भु चौधरीको मोबाइल नं.९८०४३६१७२२ मा १९ पटक फोन सम्पर्क भएको देखिन्छ। प्रतिवादीहरूबीच वारदातको समयमा भएको उक्त लगातार फोन सम्पर्कको अन्य नै विश्वसनीय कारण उल्लेख गर्न सकेका पनि छैनन् । प्रतिवादीहरूबीच वारदातको समयमा भएको लगातारको फोन सम्पर्कलाई संयोग मात्र हो भनी मान्न सक्ने स्थिति पनि देखिएन । प्रतिवादी गोपीकृष्ण भुर्तेलसँग प्रतिवादीहरू प्रदीप चौधरी र हरिष भन्ने हरि चौधरीकोबीचमा प्रत्यक्ष र अप्रत्यक्षरूपमा अपहरणको समयमा एबम् अपहरणको अगाडी र पछाडी लगातार फोनमा कुराकानी हुनुले पनि जाहेरवालाको छोराको अपहरणमा यी प्रतिवादीहरूको संलग्नता पुष्टि हुन आउने।

अपहरणमा परेका पीडित नाबालक अनिमेस आचार्यले आफू अपहरणमा परेर मुक्त हुँदासम्मको विवरण खुलाई अदालतमा गरेको बकपत्रमा प्रतिवादी गोपीकृष्ण भुर्तेलसमेतका व्यक्तीहरू मोटरसाइकलमा हालेर लिएर गएको, बाटोमा पुगे पछी गुणराज आचार्य अङ्कलसँग भेट भएको भनी आरोपित प्रतिवादीहरूको नाउँ उल्लेख गरेको देखिन्छ । जाहेरवालाले पनि प्रतिवादी गोपीकृष्ण भुर्तेलसमेतका व्यक्तिहरू आई छोरा अनिमेष आचार्यलाई अपहरण गरी लगेका हुन् भनी आफ्नो जाहेरी दरखास्तको व्यहोरालाई पुष्टि गरी अदालतमा बकपत्र गरिदिएका छन् । वारदातका प्रत्यक्षदर्शीहरू दुर्गा भट्टराईसमेतका व्यक्तिहरूले प्रतिवादी गोपीकृष्ण भुर्तेलसमेतका व्यक्तिहरूले नाबालक अनिमेष आचार्यलाई मोटरसाइकलमा राखेर अपहरण गरेर लिएर गएका हुन् भनी बकपत्र गरिदिएकोबाट अपहरणको वारदातमा आरोपित प्रतिवादीहरूको संलग्नता रहेको पुष्टि हुन आउछ।

प्रतिवादीहरूले जाहेरवालाको छोरालाई अपहरण गर्ने सम्बन्धमा अन्य प्रतिवादीहरूसँग सल्लाह, मिलेमतो गरेको भन्ने पनि देखिएको छैन । नाबालक अनिमेष आचार्यलाई अपहरण गर्ने कार्यमा यी प्रतिवादीहरूको सम्लग्नता रहेको भन्ने कुरा अन्य सह-प्रतिवादीहरूले पोल गर्न सकेको पनि पाइँदैन । अपहरणको वारदात भएको समयमा वारदातस्थलमा यी प्रतिवादीहरू शम्भु चौधरी, विरेन्द्र चौधरी, तारा आचार्यको भौतिक उपस्थिति नदेखिएको हुँदा अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने।

प्रतिवादीहरूलाई मुलुकी ऐन, अपहरण तथा शरीर बन्धक लिनेको महलको ७ नं. र ९ नं. बमोजिम थप सजाय हुनुपर्ने नै देखिन्छ। प्रतिवादीहरू गोपीकृष्ण भुर्तेल, गुणराज आचार्य, प्रदीप चौधरी, हरि भन्ने हरिष चौधरीलाई कसुरदार ठहर गरी अन्य प्रतिवादीहरू शम्भु चौधरी, विरेन्द्र चौधरी, तारा आचार्यले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने गरी भएको पुनरावेदन अदालत विराटनगरको फैसलामा कानूनी त्रुटि रहेको नदेखिने।

अतः माथि विवेचित आधार र कारणहरूबाट मुलुकी ऐन, अपहरण र शरीर बन्धक लिनेको महलको १ नं.विपरीतको कसुरमा प्रतिवादीहरू गोपीकृष्ण भुर्तेल, गुणराज आचार्य, तारा आचार्य, प्रदीप चौधरी र

हरि भन्ने हरिष चौधरीलाई ऐ. महलको ३ नं. बमोजिम ७ वर्ष कैद र रू. ५०,०००।- जरिवाना हुने ठहरी भएको सुनसरी जिल्ला अदालतको मिति २०६९।२।१ को फैसला पुनरावेदन अदालत विराटनगरबाट सफाइ पाउने प्रतिवादीहरूको हकमा सदर हुने र अन्य प्रतिवादीहरूको हकमा केही उल्टी गरी प्रतिवादी तारा आचार्यले सफाइ पाउने तथा अन्य प्रतिवादीहरू गोपीकृष्ण भुर्तेल, गुणराज आचार्य, प्रदीप चौधरी र हरि भन्ने हरिष चौधरीलाई ऐ. महलको ३ नं. ले ४ वर्ष कैद र रू. २५,००० जरिवाना, ऐ. को ७ नं. बमोजिम २ वर्ष थप कैद र ऐ. को ९ नं. बमोजिम २ वर्ष थप कैद गरी जनही ८ वर्ष कैद र रू. २५,०००। जरिवाना हुने तथा प्रतिवादीहरू गोपीकृष्ण भुर्तेल, गुणराज आचार्य, प्रदीप चौधरी र हरि भन्ने हरिष चौधरीबाट पीडितले अपहरण परेको २० दिनको प्रतिदिनको रू. ५००।- का दरले जनही क्षतिपुर्ती पाउने ठहर गरी भएको मिति २०७०।६।६ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृतः मीना गुरूङ

कम्प्युटर: अभिषेक कुमार राय

इति संवत् २०७३ साल चैत ९ गते रोज ४ शुभम्।

५

**मा.न्या.श्री गोपाल पराजुली र मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे,** ०७०-CR-१६३० र ०७०-CR-१६८५, कर्तव्य ज्यान, *नेपाल सरकार वि. ज्याम्बल तामाङ र ज्याम्बल तामाङ वि. नेपाल सरकार*

प्रतिवादी र मृतक श्रीमान् र श्रीमती रहेका र मृतकलाई जोखमी हतियार प्रहार गरी मारेको नभई आपसी वादविवाद हुँदा रिसको झोंकमा कोदालोको बिँडले हान्दा मृतक श्रीमतीको मृत्यु हुन गएको अवस्था स्थापित भएको पाइन्छ। यी प्रतिवादीको श्रीमतीको ज्यान मार्न कुनै इवी लाग र मनसाय रहेको, लुकी चोरी हानेको भन्ने पनि देखिँदैन। यसरी श्रीमान् र श्रीमतीकाबीचमा घरायसी वादविवाद हुँदा तत्काल उठेको रिसबाट प्रस्तुत वारदात घटित हुन गई जोखिमी हतियारले प्रहार नगरी कोदालोको बिँडले हान्दा मृतकको मृत्यु भएको देखिँदा प्रस्तुत मुद्दामा मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. आकर्षित नभई ऐ. महलको १४ नं. आकर्षित हुने देखिन आयो। तसर्थ यी प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. बमोजिम १० वर्ष कैद सजाय हुने ठहर गरेको सुरू र पुनरावेदन अदालत पाटनको फैसला मिलेकै देखिन आउने।

आफ्नै श्रीमतीउपर चोट छाडी मार्ने यी प्रतिवादी घटना घटाउँदाको अवस्थामा आफूले गरेको कामको प्रकृति र परिणाम थाहा नपाउने गरी मगज बिग्रेको र बौलाएका मानिस हुन भन्ने कुरा निजले प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २७ बमोजिम प्रमाणित गराउन सकेको पाइँदैन। निजले अधिकारप्राप्त अधिकारी र अदालतमा बयान गर्दासमेत श्रीमतीले घर व्यवहारका विषयमा कचकच गरेको हुँदा निजको टाउकोमा कोदालाको बिंडले प्रहार गर्दा निजको मृत्यु हुन गएको हो भनी प्रष्टसँग जवाफ दिएको पाइन्छ। अनुसन्धान र अदालतमा समेत बयानको क्रममा सोधिएका प्रश्नको राम्रोसँग युक्तियुक्त जवाफ दिएको अवस्थासमेत रहे भएको देखिँदा यी पुनरावेदक प्रतिवादीले मानसिक सन्तुलन गुमेको अवस्थामा घटित वारदात हुन पुगेको हो भनी मुलुकी ऐन, दण्ड सजायको महलको १ नं. आकर्षित हुनुपर्दछ भनी लिएको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

तसर्थ, माथि विवेचित आधार कारण र कानूनी व्यवस्थासमेतबाट यी प्रतिवादी ज्याम्बल तामाङलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. बमोजिम १० वर्ष कैद सजाय हुने ठहर गरेको सुरू काभ्रेपलान्चोक जिल्ला अदालतको फैसला सदर

हुने ठहर गरको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०७०।९।९ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।
इजलास अधिकृतः नगेन्द्रकुमार कालाखेती
कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ
इति संवत् २०७३ साल पुस १७ गते रोज १ शुभम् ।

६

**मा.न्या.श्री गोपाल पराजुली र मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे,** ०७१-CR-१००१ र ०७१-CR-१३०४, कर्तव्य ज्यान, *नेपाल सरकार वि. टकमा के.सी. र शिवबहादुर परी वि. नेपाल सरकार*

प्रतिवादी शिवबहादुर र टकमा के.सी. को मौकाको बयान एक आपसमा मिले भिडेको र मौकामा कागज गर्ने व्यक्तिहरूको भनाईसमेतबाट उक्त बयान समर्थित भइरहेको देखिँदा मृतकलाई कर्तव्य गरी मार्ने कार्यमा यी प्रतिवादी शिवबहादुर पुरीको संलग्नता रहेको तथ्य पुष्टि हुन आएको हुँदा पुनरावेदन अदालत तुलसीपुरले निजलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वश्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ठहर गरेको फैसला मनासिब नै देखिन आउने ।

प्रतिवादी टकमा के.सी. ले मृतकलाई मार्न बचन दिएको वा मार्नलाई संयोग पारिदिन निमित्त मृतकको जीउमा हातहाली पक्री समातेको भन्ने कुनै मिसिल संलग्न प्रमाणबाट देखिँदैन । बाबुले दाउराले हिर्काई मृतकलाई मारी सकेपछि लास फाल्नका लागि मत सल्लाहमा पसी लास लुकाई छुपाउने कार्यमासम्म सहयोग गरेको देखिँदा निजले मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(४) नं. को कसुर गरेको नदेखिई ऐ महलको १७(३) नं.सम्मको कसुर गरेको देखिँदा निजलाई सोही नं. बमोजिम २ वर्ष ६ महिना कैद सजाय गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत तुलसीपुरको फैसला मनासिब नै देखिने

मृतक आफ्नै छोरीसँग एउटै ओछ्यानमा सुतेको देखेपछि रिसको झोंकमा आवेगमा आई प्रस्तुत दुखद् घटना घट्न पुगेको अवस्था रहेको पाइन्छ । यी प्रतिवादीले मृतक लिलाबहादुर घर्तीलाई मार्ने मनसाय राखी तयारीका साथ अग्रिम योजना बनाएको पनि देखिँदैन । यसरी प्रतिवादीको मृतकलाई मार्ने पूर्वयोजना र तयारी रहेको नदेखिएको, घातक हतियार प्रहार गरेको नपाइएको घटित वारदातको समग्र परिस्थितिलाई विचार गर्दा भवितव्य हो कि भन्नेसम्मको आशङ्का रहेको देखिँदा प्रतिवादी शिवबहादुर पुरीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वश्वसहित जन्मकैदको सजाय गर्दा न्यायको रोहमा चर्को पर्न जाने देखिँदा निजलाई मुलुकी ऐन, अ.बं. १८८ नं. बमोजिम १२ वर्ष कैद सजाय गर्दा दण्डको उद्देश्यसमेत पूरा हुने हुँदा निजलाई १२ वर्ष कैद सजाय गर्न मनासिब हुने भनी पुनरावेदन अदालत तुलसीपुरबाट व्यक्त गरेको राय मनासिब नै रहेको देखिन आउने ।

तसर्थ, उल्लिखित तथ्य, कानून तथा विवेचित आधार र कारणसमेतबाट प्रतिवादीहरूमध्ये गोठी भन्ने टकमा के.सी.लाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १७(३) नं. बमोजिम २ वर्ष ६ महिना कैद र अर्का प्रतिवादी शिवबहादुर पुरीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वश्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने र मुलुकी ऐन, अ.बं. १८८ नं. बमोजिम १२ वर्ष कैद गर्न मनासिब हुने भनी व्यक्त गरेको रायसहितको सुरू प्यूठान जिल्ला अदालतको फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत तुलसीपुरको मिति २०७१।८।८ को फैसला मिलेकै देखिँदा रायसहित सदर हुने ।
इजलास अधिकृत: नगेन्द्रकुमार कालाखेती
इति संवत् २०७३ साल पुस २१ गते रोज ५ शुभम् ।

७

**मा.न्या.श्री गोपाल पराजुली र मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे,** ०७०-CR-१४६१ र ०७२-RC-००३६, कर्तव्य ज्यान, *मदन सुनार वि. नेपाल सरकार र नेपाल सरकार वि. गंगे वि.क.समेत*

प्रतिवादीहरूको अधिकारप्राप्त अधिकारी समक्षको बयान मिसिल संलग्न प्रमाणहरूबाट मालाकाररूपमा पुष्टि भएको पाइन्छ । साथै यी प्रतिवादीहरूले अदालतसमक्ष कसुरमा इन्कार रही बयान गरे तापनि सो इन्कारी पुष्टि हुने प्रमाणहरू प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २७ बमोजिम निजहरूले प्रमाणित गर्न सकेको पाइँदैन । यसरी निजहरूको अधिकारप्राप्त अधिकारसमक्षको बयान अन्य स्वतन्त्र प्रमाणहरूबाट समर्थित भएको हुँदा सो बयानलाई प्रमाणमा लिन मिल्ने नै देखिँदा यी प्रतिवादीहरूको चोट प्रहारबाटै मृतकको मृत्यु भएको तथ्य पुष्टि हुन आउने ।

प्रतिवादीमध्येका मदन सुनार र गंगे वि.क.ले मृतकलाई धारिलो हतियार मृतकको शरीरका विभिन्न अङ्गमा प्रहार गरेको मिसिलबाट पुष्टि भएको जाहेरवालाले अदालतमा बकपत्र गर्दासमेत सो कुरा लेखाई दिएकोसमेतका प्रमाणहरूबाट यी प्रतिवादीमध्ये मदन सुनार र गंगे वि.क.लाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वश्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने र राजकुमार हमालले वियरको बोतल र लाठा मुक्काले प्रहार गरेको तथ्य पुष्टि भएको हुँदा निजलाई ऐ १३(३) बमोजिम जन्मकैदको सजाय हुने ठहर गरेको सुरू जिल्ला अदालतको फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत सुर्खेतको फैसला अन्यथा देखिन नआउने ।

प्रतिवादी मदन सुनार वारदातस्थलमा उपस्थित भई मृतकलाई खुकुरी प्रहार गरेको कुरामा साबित रहेका र सो कुरासँगै पक्राउ परेका अन्य सह अभियुक्तहरू समेतले यी नै पुनरावेदक प्रतिवादीको खुकुरी प्रहारको चोटबाट मृतकको मृत्यु भएको हो भनी किटानीसाथ लेखाई दिएको पाइन्छ । साथै घटनास्थल मुचुल्का, लास जाँच मुचुल्का, शव परीक्षण प्रतिवेदन मौकामा कागज गर्ने व्यक्तिहरूको मौकाको कागज र उनीहरूको अदालतसमक्षको बकपत्र, जाहेरवालाले अदालतसमक्ष गरेको बकपत्रसमेतबाट यी प्रतिवादीको अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्षको साबिती बयान मालाकार रूपमा पुष्टि भइरहेको हुँदा यी प्रतिवादीले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउनु पर्छ भनी लिएको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

प्रतिवादीहरूको मृतकलाई मार्ने पूर्वयोजना र तयारी रहेको नदेखिएको, प्रतिवादीहरूको कारणबाट प्रस्तुत वारदात घटित नभई मृतकको कारणबाट घटित हुनु पुगेको, घटना घट्दाका अवस्थामा यी प्रतिवादीहरू केवल १९ र २२ वर्षका मात्र रहेकालगायतका घटित वारदातको समग्र परिस्थितिलाई विचार गर्दा यी प्रतिवादीहरू मदन सुनार, गंगे वि.क. र राजकुमार हमाललाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) र १३(३) नं. बमोजिम सर्वश्वसहित जन्मकैद र जन्मकैदको सजाय गर्दा न्यायको रवहमा चर्को पर्न जाने देखिँदा प्रतिवादीहरूमध्येका मदन सुनार र गंगे वि.क.लाई जनही १० वर्ष कैद र राजकुमार हमाललाई ८ वर्ष कैद सजाय गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत सुर्खेतबाट अ.बं. १८८ नं. बमोजिम व्यक्त गरेको रायसमेत मिलेकै देखिन आउने ।

तसर्थ उल्लिखित तथ्य कानून तथा विवेचित आधार र कारणहरूसमेतबाट प्रतिवादीहरू मदन सुनार र गंगे वि.क.लाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वश्वसहित जन्मकैद र अर्को प्रतिवादी राजकुमार हमाललाई ऐ महलको १३(३) नं. बमोजिम जन्मकैदको सजाय हुने ठहर गरेको सुरू

सुर्खेत जिल्ला अदालतको फैसला सदर हुने ठहर गरी अ.बं. १८८ नं. बमोजिम प्रतिवादीहरूमध्ये मदन सुनार र गंगे वि.क.लाई जनही १० वर्ष कैद र प्रतिवादी राजकुमार हमाललाई ८ वर्ष कैद सजाय गर्न मनासिब हुने भनी राय व्यक्त गरी पुनरावेदन अदालत सुर्खेतबाट मिति २०७०।८।२४ मा भएको फैसला रायसहित साधक सदर हुने।

इजलास अधिकृत: नगेन्द्रकुमार कालाखेती

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७३ साल पुस २१ गते रोज ५ शुभम्।

८

**मा.न्या.श्री गोपाल पराजुली र मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की,** ०७१-CR-०११८ र ०७१-CR-०३७४, कर्तव्य ज्यान, *नेपाल सरकार वि. हेमन्त जोशी र हेमन्त जोशी वि. नेपाल सरकार*

सामान्य किसिमबाट बच्चा हातबाट फुत्की चोट लागेको नभई जोडसँग फ्याँकेको कारण गम्भीर घाइते भई नाबालकको मृत्यु हुन गएको भन्ने मृतक बालकको लासको प्रकृति, शव परीक्षण प्रतिवेदन तथा शव परीक्षण गर्ने चिकित्सकको बकपत्रसमेतबाट पुष्टि हुन आएको हुँदा उक्त वारदातलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको ५ नं.अन्तर्गतको भवितव्य परेको मान्न मिल्ने नदेखिने।

प्रतिवादीको छोरा २८ दिनको बच्चासँग पूर्व रिसइवी रहने अवस्था छैन । निजलाई मार्नुपर्ने पूर्व योजना बनाएकोसमेत देखिँदैन । मार्नको लागि कुनै घातक हतियार प्रयोग भएको छैन । प्रतिवादीले आफ्नै छोरालाई मार्नुपर्नेसम्मको मनसाय रहेको भन्ने कुरा मिसिल संलग्न प्रमाणहरूबाट खुल्न आएको देखिँदैन । यस्तो अवस्थामा प्रतिवादीले अभियोग मागदाबी बमोजिम ज्यानसम्बन्धीको १३(३) नं. बमोजिम कसुर गरेको ठहर गर्न न्यायोचित हुने नदेखिने।

रक्सी सेवन गरी नशामा रहेका प्रतिवादीले बच्चा रून नछाडेको कारण उसै मौकामा आवेशमा आई सिर्जना गरेको वारदात उक्त कानूनी व्यवस्थाअन्तर्गतको देखिन आएकोले पुनरावेदन अदालत दिपायलबाट प्रतिवादीले ज्यानसम्बन्धीको १४ नं. बमोजिमको कसुर गरेको ठहऱ्याई १० वर्ष कैद सजाय हुने गरी भएको फैसला कानूनसम्मत नै हुँदा परिवर्तन गर्नुपर्ने नदेखिने।

तसर्थ, उपर्युक्तबमोजिम उल्लिखित वारदातको प्रकृति, मिसिल संलग्न कागज प्रमाण तथा सम्बन्धित कानूनी व्यवस्थासमेतको सन्दर्भमा प्रतिवादीले मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १४ नं.अन्तर्गतको कसुर गरेको देखिँदा निजलाई ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सजाय गर्ने गरेको सुरू कैलाली जिल्ला अदालतको फैसला केही उल्टी गरी निज प्रतिवादी हेमन्त जोशीलाई ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं .बमोजिम १० वर्ष कैद हुने ठहऱ्याएको पुनरावेदन अदालत दिपायलको मिति २०७०।११।२१ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृतः महेश खनाल

कम्प्युटरः मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७३ साल कात्तिक २४ गते रोज ४ शुभम्।

९

**मा.न्या.श्री गोपाल पराजुली र मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की,** ०७३-WO-०००५, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, *प्रजिता प्रसाई भुर्तेल वि. शिवकुमार प्रसाईसमेत*

आमा मिति २०७३।४।१८ मा क्यानाडाबाट फर्केर आएको यति लामो अवधिसम्म पनि विपक्षीहरूले आमालाई छोराछोरीसँग भेटघाट गर्न नदिनुले छोराछोरीहरू आमासँगको सामिप्यता र वात्सल्यताबाट

विमुख भएको मान्नुपर्ने देखिन्छ । त्यसो गरिनु बाल मनोविज्ञानको दृष्टिले न्यायोचित हुँदैन। आमाबाट पूर्णत: अलग राखिँदा छोराछोरीहरूको कलिलो मस्तिष्कमा नकारात्मक प्रभाव परी उप्रान्त भविष्यसम्म दुस्प्रभाव पर्न सक्छ। निवेदिका विदेशमा रहँदासम्म विपक्षीहरूले निज छोराछोरीलाई पालनपोषण गरी संरक्षकत्व प्रदान गरेको कार्य सह्रानीय देखिन्छ। आमासरहको व्यवहार पनि भएको होला। सधैँभरी यसै प्रकारको व्यवहार गर्ने प्रतिबद्धता पनि आएको छ । तर आमा हाल नेपालमा नै भएको अवस्थामा साना र कलिला मस्तिष्कका छोराछोरीलाई हेर्दा निवेदिका आमाको मागबाट पन्छिन मिल्ने अवस्था नदेखिने।

अत: उल्लिखित आधार, कारण र न्यायको मान्य सिद्धान्तबाट विपक्षी पुरूषोत्तम प्रसाईको जिम्मामा रहेका बालक प्रज्योत प्रसाई र बालिका छोरी प्रत्युसा प्रसाईलाई आजैका मितिदेखि निजहरूकी आमा निवेदिका प्रजिता प्रसाई भुर्तेलले सुरक्षितसँग पालनपोषण गर्न गराउन निजहरूको शिक्षा, स्वास्थ्य उपचारलगायतका सबै कार्यहरू गरी छोराछोरीको अधिकतम एवम् सर्वोत्तम हित ग्राह्य अभिभावकत्व र प्राकृतिक संरक्षकत्व निवेदिकामा रहने गरी विपक्षीहरूको नाममा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुने।

इजलास अधिकृत: भीमबहादुर निरौला
कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट
इति संवत् २०७३ साल भदौ ६ गते रोज २ शुभम्।

१०

**मा.न्या.श्री गोपाल पराजुली र मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ,** ०७०-WO-०५७६, उत्प्रेषण / परमादेश, *निर्मल झा वि. विद्यालय शिक्षक किताबखाना, छाउनी मार्गसमेत*

शिक्षा नियमावली, २०५९ को नियम १२६ को उपनियम (२) को खण्ड (घ) बमोजिम उमेरको कारणबाट अनिवार्य अवकाश पाउने शिक्षकलाई अवकाश पाउने मितिसमेत खुलाई छ महिना अगावै जानकारी गराउने कानूनबमोजिमको दायित्व विपक्षी विद्यालय शिक्षक किताबखानाको हो । उक्त विपक्षी विद्यालय शिक्षक किताबखानाले निवेदिकालाई छ महिना अगावै अनिवार्य अवकाश हुने कुराको जानकारी दिएको भन्ने कुरा लिखित जवाफबाट देखिँदैन । बरू नेपाल आदर्श माध्यमिक विद्यालयले निवेदिकालाई नागरिकता प्रमाणपत्रमा उल्लिखित जन्ममितिलाई आधारमानी मिति २०६५।११।१७ देखि अनिवार्य अवकाश पाउने पत्र मिति २०६५।५।२२ मा दिएको देखिँदा विपक्षी विद्यालय शिक्षक किताबखानाले कानूनबमोजिमको दायित्व पूरा गरेको नदेखिने।

आधिकारिक निकायबाट अवकाश पत्र नदिई साबिकबमोजिम नै नियमित काम गरेको अवधिको तलब, भत्ता नपाउने भन्न मिल्ने हुँदैन । यस्तो अवस्थामा बढी अवधि कार्य गरी निजले पाउने रकम औषधी उपचार र बिरामी बिदाको रकमबाट कट्टा गरी नपुग रकम पेन्सनबाट कट्टा गर्नु उपयुक्त हुन्छ भन्ने लिखित जवाफ व्यहोरालाई मान्दा निवेदिकाको संविधान प्रदत्त समानता र स्वतन्त्रता एवम् कानूनी हकमा आघात पुग्ने।

तसर्थ यी रिट निवेदिकालाई मिति २०६२।३।६ देखि मिति २०६५।११।१७ सम्म काम गरेको अवधिको खाई पाई सकेको तलब, भत्ता र अन्य सुविधा निवेदिकाले नियमानुसार पाउने औषधी उपचारको रकमबाट कट्टा गर्ने गरी विद्यालय शिक्षक किताबखानाबाट भएका सम्पूर्ण काम कारवाही र सो विद्यालय शिक्षक किताबखानाले निवेदिकाको रकम कट्टा गर्न निवृत्तिभरण व्यवस्थापन कार्यालयलाई लेखेको पत्रसमेत नेपालको अन्तरिम संविधान,

२०६३ को धारा १०७ को उपधारा (२) र नेपालको संविधानको धारा १३३ को उपधारा (२) एवम् (३) बमोजिम उत्प्रेषणको आदेशले बदर गरिदिएको छ । अब निवेदिकाले नेपाल आदर्श माध्यामिक विद्यालय गणबहालमा मिति २०६२।३।६ देखि मिति २०६५।११।१७सम्म काम गरेको अवधिको तलब भत्ता एवम् अन्य आर्थिक सुविधाको रकम औषधी उपचारको रकम, बिदाको रकम र पेनसनबाट कट्टा नगरी पूरै रकम निवेदिकालाई भुक्तानी दिनु भनी विपक्षी विद्यालय शिक्षक किताबखाना, जिल्ला शिक्षा कार्यालय र निवृत्तिभरण व्यवस्थापन कार्यालय त्रिपुरेश्वरको नाममा परमादेशको आदेश जारी हुने।

इजलास अधिकृतः भीमबहादुर निरौला

कम्प्युटरः मन्दिरा राणाभाट

इति संवत् २०७३ साल चैत १ गते रोज ३ शुभम् ।

११

**मा.न्या.श्री गोपाल पराजुली र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी,** ०७०-CR-१६६१, लागु औषध (डाइजेपामसमेत), *नेपाल सरकार वि. भीमबहादुर शाहीसमेत*

मिसिल संलग्न तथ्यबाट प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरूले सेवन गर्ने प्रयोजनका लागि बरामद लागु औषध खरिद गरी साथमा ल्याएको देखिएको हुँदा निजहरूलाई सेवनको कसुरमा सजाय गर्ने गरी पुनरावेदन अदालतबाट भएको फैसलामा कुनै कानूनी त्रुटि रहेको नदेखिने।

तसर्थ, विवेचित आधार कारणबाट प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरू भिमबहादुर शाही, झकबहादुर गुरूङ र श्यामबहादुर सार्कीलाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१) (ज) बमोजिम जनही २ महिना कैद र रू. २०००।– जरिवाना सजाय हुने गरी रूपन्देही जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर हुने ठहऱ्याई पुनरावेदन अदालत बुटवलबाट मिति २०७०।१।१५ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: कपिलमणी गौतम

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७३ साल फागुन १५ गते रोज १ शुभम् ।

## इजलास नं. ३

१

**मा.न्या.श्री दीपकराज जोशी र मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा.,** ०७३-RC-००८१, नवजात शिशु जन्माई मारी फालेको कर्तव्य ज्यान, *नेपाल सरकार वि. सोनी खातुन*

प्रतिवादीको अवैध गर्भ रहेको भन्ने कुरामा कुनै सन्देह छैन । प्रतिवादीले वारदात मितिमा बच्चा जिउँदो जन्मेको भनी स्वीकार गरेकी छिन । निज बच्चा जन्मेपछि आफू बेहोस भएको र होस खुलेपछि बच्चा मरेकोले त्यहाँ राखी राख्न उपयुक्त नहुने भनी बाटोमा लगेर फालिदिएको भन्ने प्रतिवादीको भनाई रहेको पाईदा जिउँदो जन्मेर प्रतिवादीले भनेबमोजिम नै यदि बच्चा मरेको भए निजले सो कुराको जानकारी सम्बन्धित निकायमा गराउन सक्नु पर्ने या आफू प्रसव पिडाले रोएको भनी उल्लेख भएकोमा त्यो स्थितिमा अन्य कसैलाई जानकारी गराउनु सक्नु पर्ने अवस्था रहन जान्छ । बच्चा मृत देखी बाटामा लगी फाल्न सक्ने प्रतिवादीले आफू बेहोस भएको भनी बयानमा लेखाई दिएको व्यहोरा विश्वासनीय देखिन प्रतिवादीले अवैध रूपमा रहन गएको अनइच्छुक गर्भ धारणलाई लोकलज्जा, डर आदीको कारणले आफ्नो स्वास्थ्यसमेतमा पर्ने जोखिम लिई गर्भावस्थाको समय

पूरा नहुँदै २८-३० हप्ताको गर्भ पतन गराउने औषधी सेवन गर्नु, बच्चा जिउँदै जन्मनु र बच्चालाई बाटोमा फाल्नु जस्ता कुरा मालाकार रूपमा रहेकोले यी परिस्थितिजन्य प्रमाणहरूसमेतबाट प्रतिवादी सोनी खातुनले मनसायपूर्वक जिउँदो बच्चालाई जन्म दिई मारी फालेको भन्ने तथ्य स्थापित हुन आई प्रतिवादीले जिउँदो बच्चा जन्माई मारी फाली ज्यानसम्बन्धी कसुर गरेको पुष्टि हुन आयो । यस्तो अवस्थामा प्रतिवादीलाई प्रस्तुत मुद्दामा माथि उल्लिखित तथ्य एवम् विवेचित आधार कारणहरूबाट ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्म कैदको सजाय हुने ठहऱ्याई पुनरावेदन अदालत विराटनगरले गरेको फैसला मिलेको नै देखिन आउने ।

प्रतिवादी एक असहाय कलिलो उमेरकी भएकी, बाध्यात्मक परिस्थितिमा र जानकारीबेगर अनइच्छुक रूपमा गर्भ रहन गई सामाजिक लोकलज्जा तथा लान्छनासमेतबाट बच्ने उद्देश्यले आफ्नो आपराधिक कार्य ढाकछोप गर्ने प्रयास गरेको अवस्था देखिन आयो । अपराध गर्नेलाई सजाय दिनु फौजदारी न्यायको मूल मर्म भए पनि त्यो सजायबाट अपराधी सुध्रन सकोस् भन्ने नै फौज्दारी न्यायको नविनतम धारणा एवम् मान्यता रही आएको छ । यस्तो अवस्थामा यी प्रतिवादी सोनी खातुनलाई ठहर भएबमोजिमको सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय गर्दा चर्को पर्न जाने चित्तमा लागेकोले सो सजाय घटाई प्रतिवादी सोनी खातुनलाई अ.बं. १८८ नं. बमोजिम दुई वर्ष कैद सजाय गर्दा पनि कानूनको मकसद पूरा हुने भएकोले पुनरावेदन अदालत विराटनगरले व्यक्त गरेको रायसमेत मिलेको नै देखिने ।

अतः उल्लिखित मिसिल संलग्न कागजातहरूबाट प्रतिवादी सोनी खातुनलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको ६(२) नं. को कसुरमा सोही महलको ६(२) नं.अनुसार पाँच सय रूपैयाँ जरिवाना र दुई वर्ष कैद गरिएको सुरू मोरङ जिल्ला अदालतको मिति २०७१।१०।४ को फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी गरी प्रतिवादी सोनी खातुनलाई ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ठहर गरी प्रतिवादीको उमेर र घटना हुँदाको परिस्थितिसमेतलाई मध्यनजर गरी प्रतिवादी सोनी खातुनलाई अ.बं. १८८ नं. बमोजिम दुई वर्ष कैद गर्ने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत विराटनगरको मिति २०७२।१।२७ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृतः प्रेम खड्का

कम्प्युटर: रमेश आचार्य

इति संवत् २०७३ साल फागुन ६ गते रोज ६ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री दीपकराज जोशी र मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की,** ०६८-CR-०३४३, कर्तव्य ज्यान, *नेपाल सरकार वि. नुहानु कुर्मी*

मृतकको टाउकोमा भएको घाउ खत ५" र ४" को घाउ रहेको देखिन्छ । जुन आयातकार आकारको देखिन्छ । लठ्ठीले हिर्काएको भए त्यस्तो आयातकार आकारको घाउ हुने थिएन, त्यसका साथसाथै इँटामा लडेको भनी जाहेरवालाहरूले भनी रहेको अवस्थामा इँटाले बनाएको घाउ आयातकार आकारको हुनसक्ने भएकोले पनि मृतकको टाउकोमा भएको घाउ इँटाको चोटबाट भएको देखिन्छ । मृतक के कारणले मरेको हो भन्ने सम्बन्धमा जिल्ला स्वास्थ्य कार्यालयको मिति २०६७।३।१ को पत्रमा मृतकको मृत्युको कारण टाउकोको चोटबाट हुन सक्ने भन्ने उल्लेख भएकोले पनि मृतकको टाउकोमा परेको चोटबाट मरेको भन्ने पुष्टि हुन्छ । मिति २०६६।४।३ मा राजकुमार कुर्मी मरेको घटना पश्चात मिति २०६६।५।२३ मा मात्र प्रतिवादी पक्राउ परेको मिसिलसंलग्न कागजातबाट

देखिन्छ । मिति २०६६।४।३ मा भएको घटनास्थल लास जाँच मुचुल्काको कागजमा यी प्रतिवादी नुहाउनु कुर्मीलाई अभियुक्त देखाउँदै दस्तखत गराएको देखिन्छ जुन अस्वभाविक रूपमा भएको देखियो । यी प्रतिवादी नुहानु कुर्मीलाई प्रस्तुत वारदातमा जसरी पनि ज्यान मारेको कसुरमा सजाय गर्ने हेतुले कागजात तयार गरेको देखिने । वादी नेपाल सरकारले प्रतिवादीउपर लगाएको कसुर प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ बमोजिम पुष्टि गर्नुपर्नेमा सो नगरेको अवस्थामा ज्यानसम्बन्धी गम्भीर फौजदारी मुद्दामा यी प्रतिवादीलाई आशङ्काको भरमा मात्र कसुरदार ठहर गरी सजाय गर्न मिल्ने देखिँदैन । यस्तो अवस्थामा प्रतिवादी नुहानु कुर्मीलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिने ठहर गरी पुनरावेदन अदालत बुटवलले गरेको फैसला मिलेको नै देखिने ।

अतः उल्लिखित तथ्य एवम् आधार प्रमाणहरूबाट प्रतिवादी नुहानु कुर्मीलाई ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिमको सजायको अभियोग दाबी रहेकोमा सोही महलको १४नं. बमोजिम १०(दश) वर्ष कैद सजाय हुने ठहर्‍याई भएको सुरू कपिलवस्तु जिल्ला अदालतको मिति २०६७।३।२१ को फैसलालाई उल्टी गरी प्रतिवादी नुहानु कुर्मीले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत बुटवलले मिति २०६७।१२।१६ मा गरेको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: प्रेम खड्का

कम्प्युटर: बासुदेव गिरी

इति संवत् २०७३ साल मङ्सिर १५ गते रोज ४ शुभम् ।

३

**मा.न्या.श्री दीपकराज जोशी र मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की,** ०७१-CR-०८९५, कर्तव्य ज्यान, *तारा राई (गुरूङ) वि. नेपाल सरकार*

प्रतिवादीका साक्षी धनकुमार राई, वंश राईको बकपत्रमा "वारदातको दिन मृतक र प्रतिवादीबीच झगडा हुँदा मृतकले टेवुलमाथी राखेको खुकुरी उठाई तारामाथी प्रहार गर्न खोजी सोही निहुँको आधारमा दुई जनाबीच ठेलाठेल हुँदा र आफ्नो ज्यानको सुरक्षा गर्दा धनजित गुरूङले आफैँले बोकेको हतियार आफैँलाई लागी निजको मृत्यु भएको" भनी बकपत्र गरे तापनि निजहरू वारदातका प्रत्यथदर्शी व्यक्ति होइनन् । जुन कुरा निजहरूले अनुमानको भरमा प्रकट गरेको देखिन्छ । प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २७ मा *प्रतिवादीले प्रमाण पुर्‍याउनु पर्ने भार*अन्तर्गत उपदफा (१) मा "प्रचलित कानूनबमोजिम सजायमा कमी वा छुट हुने वा सजायबाट रिहाई पाउने कुनै कुराको जिकिर प्रतिवादीले लिएमा सो कुराको प्रमाण पुर्‍याउने भार निजको हुनेछ" भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको छ । उक्त कानूनी व्यवस्थाका आधारमा प्रस्तुत विवादका मृतक धनजित गुरूङले उक्त हतियार (दाउ) यी प्रतिवादीलाई प्रहार गर्न खोजेको भन्ने पुष्टि हुने प्रमाणको अभाव रहेको यस्तो अवस्थामा प्रतिवादीले आत्मरक्षाको लागि मृतकउपर दाउ प्रहार गर्दा निजको मृत्यु भएको हो भन्ने प्रतिवादीको दाबी जिकिर विश्वासलायक मान्न नमिल्ने ।

तसर्थ माथि उल्लेख भएबमोजिम प्रतिवादी तारा राई (गुरूङ) ले मृतकलाई जोखिमी हतियारले संवेदनशील ठाउँमा प्रहार गरी आरोपित कसुर गरेको ठहर गरेको हदसम्म सुरू मोरङ जिल्ला अदालतको मिति २०७०।३।२१ को फैसला सदर भई सजायतर्फ मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको दफा १३ को देहाय १ बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद गर्नुपर्नेमा जन्म कैद मात्र गर्ने ठहर गरेको हदसम्म उक्त फैसला मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी भई निज प्रतिवादीलाई सर्वस्वसहित जन्म कैद हुने गरी भएको पुनरावेदन अदालत विराटनगरको मिति २०७०।१२।१२ को

फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

प्रतिवादीका पति मादक पदार्थ सेवन गरिरहने तथा मादक पदार्थ सेवन गर्न पैसा मागिरहने कारण अगाडी देखि नै मृतक र प्रतिवादीकाबीच झगडा तथा वाद विवाद भइरहने कारण मेलमिलाप नरहेको र उक्त वारदातको दिन पनि निजका पतिले पैसा मागी रक्सी खाएर आई भनाभन तथा हातपातसमेत भएको अवस्थाबाट आजित भई एक्कासी आवेसमा आई प्रतिवादीले उक्त अपराध गरेको भन्ने मिसिलसंलग्न प्रमाणबाट देखिएकोले प्रतिवादीलाई ऐनबमोजिम भएको उक्त सजाय घटाउँदाको अवस्थामा पनि ऐनको उद्वेश्य पूरा हुने देखिँदा प्रतिवादीलाई कैद ५ वर्ष र सर्वस्व तर्फको सबै सजाय घटाउने गरी पुनरावेदन अदालत विराटनगरले अ.बं. १८८ नं. बमोजिम जाहेर गरेको रायसमेत मनासिब रहेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: शकुन्तला कार्की

कम्प्युटर: रमेश आचार्य

इति संवत् २०७३ साल पुस ३ गते रोज १ शुभम्।

४

**मा.न्या.श्री दीपकराज जोशी र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत,** ०७१-CR-०४०३, ०९७०, कर्तव्य ज्यान, *तेजबहादुर सारू मगर वि. नेपाल सरकार र नेपाल सरकार वि. तेजबहादुर सारूमगर*

मृतक प्रतिवादीको पत्नी रही निजको साथमै बसी आएकी, जाहेरवाली देवी राना सेनले आफ्ना झट्केला बाबु यी प्रतिवादीले पहिले पनि आमालाई कुट्ने पिट्ने गरेका, प्रहरीमा मिलापत्र पनि भएको तथा यी प्रतिवादीले आमालाई टाईफाईड भयो भनेका तर उपचारको क्रममा चिकित्सकले टाउकोमा रगत जमेको भनेपछी मृतक विस्तराबाट लडेको भनी कुरा फेरेका, आमालाई बाबुले बेल्नाले पिटेको भनी जाहेरीमा उल्लेख भएको र बकपत्र गर्दासमेत जाहेरवालीले सो व्यहोरालाई समर्थन गरेकी। शरीर भरी नीलडाम रहेको भन्ने लास जाँच प्रतिवेदनको व्यहोरा तथा घटनास्थलबाट रोटी बेल्ने बेल्ना बरामद भएको पाइएबाट यी प्रतिवादीकै चोट कर्तव्यबाट मृतकको मृत्यु भएको पुष्टि हुन आएको छ । यस तथ्यलाई मृतककी अर्की छोरी शान्ती पचभईयाले आमालाई मिति ०६९।८।२८ मा घरमा भेटन जाँदा निजको अनुहार तथा टाउकोमा नीलडाम देखी के भयो भनी सोध्दा बाबुले हातले तथा रोटी बेल्ने बेल्नाले हान्नु भएको भनी मौकाको कागजमा खुलाई सोही व्यहोरालाई बकपत्रबाट समेत समर्थन गरिदिएबाट यसैको कर्तव्यबाट मृतकको मृत्यु भएको हो भन्ने प्रत्यक्ष प्रमाण मिसिलसंलग्न कागजातबाट नदेखिए पनि माथि उल्लिखित परिस्थितिजन्य प्रमाणहरू (Circumstantial Evidence) ले यी प्रतिवादीको कर्तव्यबाट नै मृतकको मृत्यु भएको भन्ने पुष्टि हुने।

मृतक मादक पदार्थ सेवन गर्ने बानी भएकी र वारदातको दिन पनि मृतकले मादक पदार्थ सेवन गरी हिँडेको अवस्थामा प्रतिवादिले बेल्ना ल्याई मार्छु भनी डर देखाई घरभित्र लगेको देखेको हो, सोही राति निज खाटबाट लडी घाइते भई उपचारको लागि लगेकोमा पछि मृत्यु भएको हो भन्ने सुनि थाहा पाएको हो भन्ने वस्तुस्थिति मुचुल्काका मानिसले लेखाइदिएको र वस्तुस्थिति मुचुल्कामा कागज गर्नेमध्येका प्रतिवादीका साक्षी शान्ता भुषालले बकपत्र गरी वारदातको कारणलाई प्रष्ट्याएको देखिन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा अभियोजन लगाउने पक्षले मृतकलाई प्रतिवादीले ज्यान लिने मनसायले कुटपिट गरी मारेका हुन् भनी तथ्यपूर्ण एवम् शङ्कारहित तबरले पुष्टि गर्न सकेकोसमेत नदेखिएको अवस्थामा उक्त वारदात मनसायप्रेरित नभई आवेशप्रेरित भन्ने देखिने।

मृतक जहिले पनि रक्सी सेवन गर्ने वारदातको

दिन पनि निज मादक पदार्थ सेवन गरी आएको भनी देखिएकोले एउटी महिलाले मादक पदार्थ सेवन गरी आएको रिस थाम्न नसकी निजलाई बेल्नाले हान्छु भन्दै आवेगमा आई बरामद भएको बेल्नाले शरीरको टाउकोलगायत जुनसुकै भागमा हानी कुटपिट गरेको र सोही चोटको कारणले नरकुमारीको मृत्यु भएको मिसिल संलग्न प्रमाणबाट देखिएकोले प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. बमोजिम १० वर्ष कैद हुने देखिन्छ। ज्यान सम्बन्धीको महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने देखिन नआउने।

तसर्थ उल्लिखित तथ्य एवम् विवेचनासमेतको आधारमा प्रतिवादी जुमानसिंह भन्ने तेजबहादुर सारू मगरलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय गर्ने ठहरेको सुरू जिल्ला अदालतको मिति २०७०।०२।२० को फैसला केही उल्टी गरी मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. बमोजिम १० वर्ष कैद सजाय गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत बुटवलको मिति २०७०।११।०४ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: शकुन्तला कार्की

कम्प्युटर: कृष्णमाया खतिवडा

इति संवत् २०७३ साल फाल्गुन १५ गते रोज १ शुभम्।

५

**मा.न्या.श्री दीपकराज जोशी र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत,** ०७०-CR-१०६४, ०९५२ ०७२-RC-०१९३, कर्तव्य ज्यान, *गोलमती राजवंशी वि.नेपाल सरकार, जंगे चौधरीसमेत वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. चन्द्र राजवंशी र पचानन्द राजवंशी वि. नेपाल सरकार*

प्रतिवादी पञ्चानन्द राजवंशीले पुनरावेदन गर्ने क्रममा आफू निर्दोष रहेको भनी पुनरावेदन गरे तापनि अनुसन्धानको क्रममा तथा अदालतमा समेत बयान गर्दा प्रतिवादी गोलमती राजवंशीसँग यौन सम्बन्ध रहेको कारण गोलमतीको पति मृतक धनपतलाल राजवंशीलाई मार्न भनी प्रतिवादीहरू जंगे, रमेश र चन्द्रलाई दुईलाख रुपैयाँ दिने भनी मार्न लागएको हो भनी सुरू तथा अदालतमा समेत साबित रही बयान गरेका छन्। सह-अभियुक्तहरू जंगे चौधरी, रमेश चौधरी र चन्द्र राजवंशीको सुरू तथा अदालतको बयानसमेतबाट यी पुनरावेदक पञ्चानन्दले पैसा दिने आश्वासन दिई मृतकलाई मार्न लगाएको हो भन्ने कुरा खुल्न आएको छ। जाहेरीमा निजको नाम किटानी छ मृतकको लास जाँच मुचुल्का, शव परीक्षण प्रतिवेदन, बुझिएका व्यक्तिहरूको कागज र अदालतमा जाहेरवाला तथा अन्यले गरेको बकपत्रसमेतका आधारमा यी प्रतिवादी पञ्चानन्द राजवंशी वारदातस्थलमा उपस्थित नभए तापनि निजकै वचनसमेतको आधारमा मृतकलाई ज्यान मारेको भन्ने पुष्टि भएको देखिएकोले निज पञ्चानन्द राजवंशीलाई ज्यानसम्बन्धीको १३(४) नं. बमोजिम सजाय गर्ने गरी भएको पुनरावेदन अदालत इलामको फैसलालाई अन्यथा भन्न सकिने अवस्था नरहने।

प्रतिवादी चन्द्र राजवंशी आफूसमेत भई मृतकलाई ज्यान मारेको कुरामा अधिकार प्राप्त अधिकारीसमक्ष तथा अदालतमा समेत साबित भई बयान गरेको देखिन्छ। प्रतिवादी रमेश चौधरीको बयानबाट समेत यी चन्द्र राजवंशीले पछाडीबाट मृतकलाई समातेको भन्ने खुल्न आएको छ। यी प्रतिवादीले समेत आफूले मृतकलाई समातेको हो भनी बयान गरेको देखिएको मृतकलाई मार्नुपर्ने कारणको रूपमा पञ्चानन्दले रू. २,००,०००।- दिन्छु भनी बचन दिएको भन्ने देखिएको तथा बुझिएका

व्यक्तिको कागज र बकपत्र, जाहेरवालाको जाहेरी तथा अदालतमा भएको बकपत्रसमेतको प्रमाणको आधारमा यी प्रतिवादी चन्द्र राजवंशीसमेत भई मृतकालई जिउमा हातहाली पक्री समाती दिई मार्नमा संयोग पारी दिएको पुष्टि भएकोले निजलाई ज्यानसम्बन्धीको १३(४) नं. बमोजिम सजाय गर्ने गरी भएको पुनरावेदन अदालत इलामको फैसला मिलेकै देखिँदा सो हदसम्मलाई अन्यथा भन्न सकिने नदेखिने।

प्रतिवादी रमेश चौधरीले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष बयान गर्दा पञ्चानन्द राजवंशीले रू. २,००,०००।- रूपैयाँ दिन्छु धनपतलालको ज्यान मारिदिनु भनी भनेको कारण जंगे चौधरी, चन्द्र राजवंशीसमेत भई रातिको समयमा बाटो ढुकी जंगे चौधरीले पछाडीबाट घाँटी समातेको, चन्द्र राजवंशीले पछाडीबाट हात समातेको र आफूले छुरीले मृतकको घाँटी रेटी ज्यान मारेको भनी साबित भई बयान गरेको र अदालतमा समेत बयान गर्दा कसुरमा साबित रही बयान गरेको देखिन्छ । तथा प्रतिवादी जंगे चौधरीले समेत अनुसन्धान र अदालतमा समेत बयान गर्दा रकम पाइन्छ भन्ने आशमा आफू वारदातस्थलमा ज्यान मार्ने कार्यमा संलग्न भएको भनी बयान गरेको देखिएको तथा बुझिएका पदम श्रेष्ठ, सम्झना राजवंशीसमेतको कागज तथा निजहरूको बकपत्र जाहेरी दरखास्त तथा जाहेरवालाको बकपत्र, लास जाँच मुचुल्का, शव परीक्षण प्रतिवेदनसमेतको आधारमा प्रतिवादी रमेश चौधरीले छुरी हानी मृतकलाई मारेको भन्ने सप्रमाण पुष्टि भइरहेको अवस्था हुँदा निज रमेश चौधरीलाई ज्यानसम्बन्धीको १३(१) नं. बमोजिम तथा अर्का प्रतिवादी जंगे चौधरीले मृतकालई जिउमा हातहाली पक्री समाती दिई ज्यान मार्नमा संयोग पारी दिएको पुष्टि भएकोले निज जंगे चौधरीलाई ज्यानसम्बन्धीको १३(४) नं. बमोजिम सजाय गर्ने गरी भएको पुनरावेदन अदालत इलामको फैसला मिलेकै देखिएकोले अन्यथा भन्न सकिने अवस्था नरहने।

प्रतिवादी गोलमती राजवंशीले अनुसन्धानको क्रममा प्रतिवादी पञ्चानन्दसँग शारीरिक सम्पर्क रहेको कुरा स्वीकार गर्दै निज पञ्चानन्दले आफ्नो श्रीमान् मृतक धनपतलाललाई मारिदिन्छु भनी आफूलाई भनेको भन्ने कुरासमेत स्वीकार गरेको अवस्था देखिन्छ । अदालतमा बयान गर्दा इन्कार भई बयान गरे तापनि सह-अभियुक्तहरूले अनुसन्धानको क्रममा तथा अदालतमा बयान गर्दासमेत यी पुनरावेदक प्रतिवादी गोलमती राजवंशीसमेतको सल्लाह सहमतिमा ज्यानमारेको हो भनी आफूसमेत साबित भई यी प्रतिवादी गोलमती राजवंशीसमेतलाई पोल गरी दिएको देखिन्छ । सह-अभियुक्तहरूको भनाईमा यी पुनरावेदकले दुई लाख रूपैयाँ दिने भनी भनेको भन्ने देखिएको र निज प्रतिवादीहरूको बयानमा उल्लिखित कारणबाहेक मृतकलाई मान्नुपर्नेसम्मको अन्य कुनै रिसइवी वा कारण नदेखिएकोसमेतका यावत तथ्य प्रमाणको आधारमा यी पुनरावेदक प्रतिवादी गोलमती राजवंशीकै वचन र सल्लाहका आधारमा प्रस्तुत वारदात भएको पुष्टि भइरहेको हुँदा निजलाई ज्यानसम्बन्धीको १३(४) नं. बमोजिम सजाय गर्ने गरी भएको पुनरावेदन अदालत इलामको फैसला मिलेकै देखिँदा निजको हकमा समेत अन्यथा भन्न नसकिने।

अतः उल्लिखित तथ्य प्रमाणहरूका आधारमा पुनरावेदन अदालत इलामबाट प्रतिवादीहरूमध्ये रमेश चौधरीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने गरी तथा प्रतिवादीहरू चन्द्र राजवंशी, जंगे चौधरी, पञ्चानन्द राजवंशी र गोलमती राजवंशीलाई ज्यानसम्बन्धीको १३(४) नं. बमोजिम जन्मकैदको सजाय गर्ने गरी भएको पुनरावेदन अदालत इलामको

मिति २०७०।१।२९ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने । प्रतिवादीमध्ये गोलमती राजवंशीको हकमा सजाय सम्बन्धमा हेर्दा मृतकलाई ज्यान मार्नेसम्मको पूर्व रिसइवी रहेको नदेखिएको, निजको घटना स्थलमा उपस्थिति नदेखिएको, घटनाको बस्तुस्थिति, घटना घट्दाको समग्र परिस्थितिसमेतको अवस्थालाई विचार गर्दा निज प्रतिवादी गोलमती राजवंशीलाई ऐनबमोजिम हुने हदैसम्मको सजाय गर्दा चर्को हुने देखिएको र मुलुकी ऐन, अ.बं. १८८ नं. बमोजिम १२ (बाह्र) वर्ष कैद गर्दा न्यायको उद्देश्यसमेत परिपूर्ति हुने देखिएकोले प्रतिवादी गोलमती राजवंशीलाई मुलुकी ऐन, अ.बं. १८८ नं. बमोजिम कैद वर्ष १२ हुने ।

इजलास अधिकृत: सुमन कुमार न्यौपाने

कम्प्युटर: बासुदेव गिरी

इति संवत् २०७३ साल माघ १८ गते रोज ३ शुभम् ।

## इजलास नं. ४

१

**मा.न्या.श्री गोविन्दकुमार उपाध्याय र मा.न्या.श्री ओमप्रकाश मिश्र,** ०६९-WO-०२२१, उत्प्रेषण, *जिल्ला ललितपुर लामाटार गा.वि.स. वडा नं. ८ स्थित जिविस महासंघ, नेपाल केन्द्रीय समितिको तर्फबाट माधवप्रसाद पौडेल वि. संघीय मामिला तथा स्थानीय विकास मन्त्रालयसमेत*

निवेदकले चुनौति गरेको निर्णय र परिपत्रले मान्यता पाउने गरी यस अदालतको संयुक्त इजलासबाट भएको फैसलाले प्रस्तुत विषयको निरूपण गरेको अवस्था छ । निर्वाचन नभएसम्म स्थानीय निकाय जनप्रतिनिधि विहीन हुने कुरा निश्चित छ । तर सो निकायबाट भई आएको संविधान र ऐन, नियमबमोजिमको काम कुरा नभएमा सर्वसाधारणलाई झन् मर्का पर्ने कुरा पनि उत्तिकै पक्का छ । उल्लिखित निर्णय र परिपत्रहरू यथार्थमा स्थानीय निकाय जनप्रतिनिधि विहीन रहेको अवस्थामा जनसाधारणसँग सम्बन्धित प्रत्यक्ष काम कुरा सुचारू चलिरहोस् र जनता जनार्दनलाई कुनै मर्का नपरोस् भन्ने उद्देश्यबाट प्रशासनिक संरचना मिलाउने कुरासँग सम्बन्धित देखिन्छन् । तिनले केही अधिकार र कर्तव्यहरूको प्रयोगबारे नेपाल सरकारका कर्मचारीहरूको स्थितिमा हल्काफुल्का परिवर्तन गरेकोसम्म देखिने ।

नेपाल सरकार मातहतको विभाग र त्यहाँ कार्यरत कर्मचारीहरूको कार्यविभाजन र तिनीहरूको अधिकार र कर्तव्य तथा दायित्वको बारेमा नेपाल सरकारले उचित व्यवस्था गर्न सक्ने ।

नेपालको संविधान २०७२ ले गरेको प्रान्तीय सरकारको गठनपछि ती परिपत्रहरू त्यसै पनि स्वत: परीक्षणको कसीमा पर्ने र कदाचित सो समयमा पनि यी परिपत्रलाई आधार बनाई निर्वाचित निकायको विकल्पको रूपमा सरकारी प्रशासन यन्त्रलाई राख्ने काम भएमा सो कुराको निरूपण सोही बेलामा हुने नै देखिँदा निवेदकको मागबमोजिमको आदेश गर्न मिलेन । प्रस्तुत निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: यमप्रसाद देवकोटा

कम्प्युटर: चन्द्रा तिमल्सेना

इति संवत् २०७३ साल असार १५ गते रोज ४ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री गोविन्दकुमार उपाध्याय र मा.न्या. श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा.,** ०६९-WO-०८२२, उत्प्रेषण / परमादेश, *रामविलास मुसहरसमेत वि. संघीय मामिला तथा स्थानीय विकास मन्त्रालयसमेत*

उपेक्षित, उत्पीडित र दलित वर्ग उत्थान विकास समिति (गठन) आदेश २०५४ को दफा ३(३) मा मनोनित सदस्यहरूको पदावधि ४ वर्षको हुनेछ र

निजहरू पुन: मनोनित हुन सक्छन् भन्ने उल्लेख भएको पाइन्छ । निवेदकहरूको निवेदनबाट नेपाल सरकार संघीय मामिला तथा स्थानीय विकास मन्त्रालयको माननीय मन्त्रिस्तरको मिति २०६८।६।१० को निर्णयबमोजिम नियुक्ति भएको देखिएकोले उपेक्षित, उत्पीडित र दलित वर्ग उत्थान विकास समिति (गठन) आदेश २०५४ को दफा ३(३) बमोजिम निजहरूको पदावधि मिति ०७२।६।९ मा नै समाप्त भइसकेको देखिएकोले प्रस्तुत निवेदनको कुनै औचित्य नरहेकोले प्रस्तुत निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: गेहेन्द्रराज पन्त

इति संवत् २०७२ साल फागुन २ गते रोज १ शुभम् ।

## इजलास नं. ५

१

**मा.न्या.श्री ओमप्रकाश मिश्र र मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे,** ०७१-CR-१०८१ र ०७१-CR-१२३६, कर्तव्य ज्यान र रहजनी चोरी, *राजेन्द्र श्रेष्ठ वि. नेपाल सरकार र नेपाल सरकार वि. राजेन्द्र श्रेष्ठसमेत*

जाहेरी दरखास्त, घटना विवरण कागज, शव परीक्षण प्रतिवेदनसमेतका परिस्थितिजन्य प्रमाण तथा सहप्रतिवादी विष्णु लामिछानेले गरेको पोलबाट यी राजेन्द्र श्रेष्ठको कर्तव्यबाटै तुलकुमारी मर्स्याङ्गीको मृत्यु भएको तथ्य पुष्टि हुन आएको छ । मृतक तथा प्रतिवादीहरू विष्णु लामिछाने र राजेन्द्र श्रेष्ठ मिलीसँगै बसी रक्सी खाएको अवस्थामा अत्यधिक रक्सी सेवनबाट बेहोस भएकी तुलकुमारीको हत्या गरेको देखिँदा प्रतिवादी राजेन्द्र श्रेष्ठलाई जन्मकैद हुने ठहर गरेको सुरु तनहुँ जिल्ला अदालतको फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत पोखराको फैसला मिलेकै देखिने ।

तुलकुमारीको मृत्युको घटनाको बारेमा प्रतिवादी गमबहादुर कुँवरलाई थाहा जानकारी थियो। निजलाई थाहा जानकारी हुँदाहुँदै अभियुक्तलाई सजायबाट जोगाउनकै लागि जानीजानी भगाएको हो भन्ने तथ्ययुक्त प्रमाण वादी पक्षले गुजार्न सकेको पनि पाइँदैन । तथ्ययुक्त प्रमाणको अभावमा केवल शङ्काको भरमा मात्र सजाय गर्नु न्यायको मान्य सिद्धान्तविपरीत हुन्छ । तसर्थ सुरू जिल्ला अदालतले प्रतिवादी गमबहादुर कुँवरलाई अभियोगदाबीबाट सफाइ पाउने ठहऱ्याएको फैसलालाई सदर गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको फैसला मिलेकै देखिने ।

प्रतिवादीहरूले दाबीबमोजिम चोरी गरेको भन्ने तथ्य पुष्टि हुन नसकेको अवस्थामा निजहरूलाई चोरीको कसुरमा सजाय गर्नु न्यायको रोहमा युक्तिसँगत हुने देखिँदैन । तसर्थ प्रतिवादीहरू राजेन्द्र श्रेष्ठ र सुमीत्रा भन्ने विष्णु लामिछानेउपरको रहजनी चोरीको अभियोगदाबी पुग्न नसक्ने ठहर गरेको सुरू जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर गरेको पुनरावेदन अदालत पोखराको फैसला मिलेकै देखिने ।

अतः जाहेरी दरखास्त, घटना विवरण कागज, शव परीक्षण प्रतिवेदन, सहअभियुक्त विष्णु लामिछानेले गरेको पोलसमेतका मालाकार रूपमा आएका परिस्थितिजन्य प्रमाणहरूबाट प्रतिवादी राजेन्द्र श्रेष्ठको कर्तव्यबाट तुलकुमारी मर्स्याङ्गीको मृत्यु भएको तथ्य पुष्टि हुन आएको छ । प्रतिवादी सुमीत्रा भन्ने विष्णु लामिछानेको सहयोगमा प्रतिवादी राजेन्द्र श्रेष्ठको गैरकानूनी कार्यबाट तुलकुमारीको मृत्यु भएको देखिँदा यी प्रतिवादी राजेन्द्र श्रेष्ठलाई जन्मकैद हुने ठहर गरेको सुरू तनहुँ जिल्ला अदालतको मिति २०७०।२।१३ को फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत पोखराको मिति २०७१।८।२२ को फैसला

मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

वारदातमा मृतकलाई योजनाबद्धरूपमा क्रूर तरिकाबाट हत्या गरेको अवस्था देखिएको छैन। वारदातमा उपस्थित प्रतिवादीहरू र मृतकसमेत तीनैजना मिली रक्सी सेवन गरेको र पछिल्लो चोटीको रक्सी मृतक र प्रतिवादी राजेन्द्र श्रेष्ठसमेत भई सेवन गरेको कुरा प्रतिवादी विष्णु लामिछानेको अधिकारप्राप्त अधिकारी र अदालतमा भएको बयानबाट खुलेको छ भने मृतक बेहोस भएपछि आफैँ पानीमा गई डुबेर मर्ने सम्भावना छैन । प्रतिवादी विष्णु लामिछानेको अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्षको बयानमा मृतकलाई प्रतिवादीले पानीमा फालेको कुरा उल्लेख भएबाट रक्सी सेवनपछि बेहोस भएको देखी मरेको ठानी आत्तिएर तुलकुमारीलाई पानीमा फाली भाग्नसक्ने र सोही अवस्थामा निजको पानीमा डुबेर मृत्यु भएको हुनसक्ने समेतका सम्भावनालाई दृष्टिगत गरी प्रतिवादी राजेन्द्र श्रेष्ठको हकमा अ.बं.१८८ नं. को प्रयोग गरी सजायमा कमी गर्नु दण्ड निर्धारणको प्रचलित न्यायिक पद्धतिअनुरूप न्यायसम्मत नै हुने देखिने।

विष खुवाई मारेको भन्ने तथ्य खुल्ने गरी मृतकको भिसेरा परीक्षणसमेत हुन नसकेको अवस्था तथा मृतक तुलकुमारी र प्रतिवादी राजेन्द्र श्रेष्ठसमेतले रक्सी सेवन गरेको कारणले मात्रा बढी हुन गई तुलकुमारी बेहोस भएबाट निजलाई आत्तिएर यी प्रतिवादीले पानीमा फाली गएको कारणबाट तुलकुमारीको पानीमा डुबेर मृत्यु भएको कुरा मिसिल संलग्न प्रमाणबाट पुष्टि भइरहेकोले प्रतिवादी राजेन्द्र श्रेष्ठलाई ऐनबमोजिम हदैसम्म सजाय गर्दा न्यायसम्मत नभई चर्को पर्न जाने देखिँदा अ.बं. १८८ नं.अनुसार निज प्रतिवादीलाई १०(दस) वर्ष कैद सजाय हुने।

इजलास अधिकृत: गेहेन्द्रराज रेग्मी

इति संवत् २०७३ साल मङ्सिर २ गते रोज ५ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री ओमप्रकाश मिश्र र मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे,** ०७१-CR-०२०३, कर्तव्य ज्यान, *नेपाल सरकार वि. भीमबहादुर राई, सागर थापा वि. नेपाल सरकार र खेमबहादुर राई वि. नेपाल सरकार*

प्रतिवादीहरूमध्ये रामकुमार राई, भीमकुमार राई, सिलास राई, सीताराम विष्ट, वर्नेम्मा भन्ने रूपमाया राई, बलबहादुर भन्ने बलिमान विश्वकर्मा, रमेश भन्ने मानबहादुर वि.क., सुन्दरकुमार राई, मिलन राई, सुवास भन्ने शम्भु परियार, कुमार भन्ने शेरबहादुर राई, सुरेन्द्र बहादुर वि.क., रामकुमार राई र राजन भन्ने राजेन्द्र कार्कीको अभियोग दाबीबमोजिम कसुरमा संलग्न रहेको भन्ने आसयको पुष्ट्याईं शङ्कारहित तवरबाट हुन सकेको नदेखिँदा निजहरूलाई अभियोग दाबीबमोजिम कसुरदार ठहर गर्न नमिल्ने।

अतः प्रतिवादी सिजन भन्ने खेमबहादुर राई र सागर थापालाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम जन्मकैदको सजाय हुने र प्रतिवादीहरू भिमकुमार राई, सिलास राई, सीताराम विष्ट, वर्नेम्मा भन्ने रूपमाया राई, बल बहादुर भन्ने बलिराम विश्वकर्मा, रमेश भन्ने मान बहादुर विश्वकर्मा, सुन्दर कुमार राई, मिलन राई, सुवास भन्ने शम्भु परियार, कुमार भन्ने शेर बहादुर राई, सन्दीप भन्ने सुरेन्द्र वि.क., राम कुमार राई र राजन भन्ने राजेन्द्र कार्कीसमेतको हकमा आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने ठहर गरेको उदयपुर जिल्ला अदालतको फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत राजविराजको मिति २०७०।२।२२ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

मृतकलाई मार्नुपर्नेसम्मको पूर्वरिसइवी नभएको र रूपमायालाई जबरजस्ती करणी गर्न प्रयास गरेको विषयको सम्बन्धमा छलफलको लागि

जाऔं भन्दा भागी जान खोजेकोले तत्काल आवेशमा आई लाठी तथा ढुङ्गा हानेको अवस्था देखियो । प्रतिवादीहरू सागर थापा र सिजन भन्ने खेम बहादुर राईले मृतकलाई आवेशमा आई कुटपिट गरेको र उपचारको लागि एम्बुलेन्समा हाली लैजाने क्रममा सो चोटबाट उदिम राईको मृत्यु भएको देखिँदा वारदातको कारकतत्त्व स्वयम् यी मृतक भएबाट तत्काल उठेको रिसको आवेगमा कुटपिट गर्दा मृतकको मृत्यु भएकोले सो कुरालाई विचार गरी विवेकसम्मत रूपबाट सजाय निर्धारण गर्नुपर्ने वारदातमा जोखिमी हतियार प्रयोग गरी क्रूर तरिकाबाट हत्या गरेको अवस्था रहेको नदेखिएको, घाइते भएपछि मृतकलाई उपचारको लागि अस्पतालतर्फ लगिएको, मृतकले रूपमाया राईलाई जबरजस्ती करणी गर्ने प्रयास गरेको र वारदातको मितिमा यी प्रतिवादीहरूको उमेर २० वर्ष रहेकोसमेतका तथ्यलाई दृष्टिगत गरी प्रतिवादीहरू सागर थापा र सिजन भन्ने खेमबहादुर राईको हकमाउपरोक्त १८८ नं. को प्रयोग गरी सजायमा कमी गर्नु दण्ड निर्धारणको प्रचलित न्यायिक पद्वतिअनुरूप न्यायसम्मत नै हुने ।

मृतकले जबरजस्ती करणी गर्न खोजेको भन्ने कुराको छलफलको लागि निजलाई भन्दा निज भागिजान खोजेको अवस्थामा धरपकड गर्ने सन्दर्भमा कुटपिट गर्दा उदिम राईको मृत्यु भएको अवस्था भएकोले प्रतिवादीहरू सागर थापा र सिजन भन्ने खेमबहादुर राईलाई ऐनबमोजिम हदैसम्म सजाय गर्दा कसुरको अनुपातमा न्यायसम्मत नभ चर्को पर्न जाने देखिँदा अ.बं. १८८ नं.अनुसार निज प्रतिवादीहरूलाई १० (दस) वर्ष कैद सजाय हुने ।

इजलास अधिकृत: गेहेन्द्र राज रेग्मी

कम्प्युटर: सबिना अधिकारी

इति संवत् २०७३ साल मङ्सिर २ गते रोज ५ शुभम् ।

३

**मा.न्या.श्री ओमप्रकाश मिश्र र मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे,** ०६९-CR-०७४१, कर्तव्य ज्यान, *किरण वि.क. वि. नेपाल सरकार, संजिव राई वि. नेपाल सरकार र नेपाल सरकार वि. अशोक राईसमेत*

प्रतिवादीहरू नम्बरी भन्ने अशोक राई, विजय खड्का, बाबुराम चौधरी, देउती भन्ने रमेश अधिकारी, वागसिंह भन्ने संजिव राई र किरण वि.क.समेत भई मृतक रविन चौधरीलाई कुटपिट गरेका र सोही कुटपिटका कारण मृतक रविन चौधरीको मृत्यु भएको तथ्य मिसिल संलग्न शव परीक्षण प्रतिवेदन बस्तुस्थिति मुचुल्काका मानिसहरूको भनाई डेविट चौधरीले अनुसन्धानको क्रममा गरेको कागज र अदालतमा गरेको बकपत्र तथा प्रतिवादी  नम्बरी भन्ने अशोक राईको अदालत समक्षको बयानसमेतका मिसिल संलग्न कागजातहरूबाट पुष्टि हुन आएकोले, हामी पुनरावेदकहरूलाई हदैसम्मको सजाय गरी भएको सुरू तथा पुनरावेदन अदालतको फैसला त्रुटिपूर्ण हुँदा उल्टी गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदक प्रतिवादीहरू किरण वि.क. र वागसिह भन्ने संजिव राईको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

तसर्थ प्रतिवादीहरूलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं.को कसुरमा सोही दफाबमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहऱ्याई भएको सुरू सुनसरी जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत विराटनगरबाट मिति २०६९।५।६ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

साधकको रोहमा विचार गर्दा, सिता लिम्बू र डेभिट चौधरीले अनुसन्धानको क्रममा लेखाएको व्यहोरा र सीता लिम्बूले अदालतमा आई सुरूको

व्यहोरालाई समर्थन हुने गरी गरिदिएको बकपत्र तथा अशोक राईको अदालतमा भएको बयानसमेतका आधारमा प्रतिवादीहरूले धारिलो हतियार प्रयोग गरी आरोपित कसुर गरेको तथ्यको पुष्ट्याई भएबाट निज प्रतिवादीहरू अशोक राई, बाबुराम चौधरी, रमेश अधिकारी र विजय खड्कालाई सर्वस्वसहित जन्मकैद गर्ने गरी भएको फैसला मिलेकै देखिँदा साधक सदर हुने।

प्रतिवादीहरू र मृतकबीच मार्नुपर्नेसम्मको पूर्वरिसइवी भएको नदेखिएको मृतकलाई मार्न भनी यी प्रतिवादीहरूले पूर्वयोजना तयारी र मनसाय राखेको देखिन आएन। प्रतिवादहरू होटलमा बसी रक्सी मासु खाइरहेको समयमा मृतक रविन चौधरीसँग भेट भएको अवस्थामा सामान्य विवाद भई कुटपिट भएको र सोही कुटपिटका कारणबाट मृतकको मृत्यु हुन गएको घटना घट्दाको अवस्थामा प्रतिवादीहरूको उमेर १८ देखि २५ वर्षसम्म भएको तथ्यलाई समेत दृष्टिगत गर्दा सर्वस्वसहित जन्मकैद गर्दा चर्को पर्न जाने देखिँदा, मुलुकी ऐन, अदालती बन्दोवस्तको १८८ नं. ले जनही १५ वर्षका दरले कैदको सजाय हुने।

इजलास अधिकृतः मुकुन्द आचार्य

कम्प्युटर: देवीमाया खतिवडा (देबिना)

इति संवत् २०७३ साल मङ्सिर ६ गते रोज २ शुभम्।

४

**मा.न्या.श्री ओमप्रकाश मिश्र र मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की,** ०७०-WO-०९५४, उत्प्रेषण / परमादेश, *प्रा.डा. द्विजराज भट्ट वि. त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुरसमेत*

विज्ञानअन्तर्गत विभिन्न निकायहरूका लागि आवश्यक पर्ने शिक्षकहरूको व्यवस्था गर्ने दायित्व र जिम्मेवारी सम्बन्धित डिनको हुन्छ। त्रिचन्द्र क्याम्पसमा माइक्रो स्नातकोतर तहको शैक्षिक कार्यक्रम सञ्चालनमा रहेको, विद्यार्थीहरूको संख्या पनि बढिरहेकोले शिक्षकको आवश्यकता रहेको, किर्तिपुरमा विद्यार्थीको संख्या कम रहेको कारणले विज्ञान तथा प्रविधि अध्ययन संस्थानअन्तर्गत त्रिचन्द्र क्याम्पसबाट जियोलोजी विषयको प्राध्यापकहरू अनिवार्य अवकाश हुनु भएको डा. विशालनाथ उप्रेती दरबन्दी खाली रहेको हुँदा निवेदकलाई उक्त पदमा सरूवा गरिएकोमा निज निवेदकको आवश्यकता केन्द्रीय विभागमै रहेको भन्ने कुरा सम्बन्धित विभागबाट अनुरोध भएकोले निजलाई विभागबाट रमाना नदिने भनी केन्द्रीय विभागमा मिति २०७१।३।२७ मा पत्र पठाई सरूवा स्थगित वा रद्द गरिसकिएको हुँदा यस सम्बन्धमा रिट निवेदन तथासम्मानित अदालतको आदेशसमेत स्वतः निस्प्रयोजन हुने भएकोले विपक्षीले दायर गरेको रिट निवेदन खारेज गरिपाउँ भन्नेसमेत व्यहोराको विपक्षीमध्येका त्रिभुवन विश्वविद्यालय, विज्ञान तथा प्रविधि अध्ययन संस्थान किर्तिपुरसमेतको तर्फबाट डिनको लिखित जवाफ वेहोरा रहेको प्रस्तुत निवेदनमा विपक्षी डिनको कार्यालयको लिखित जवाफमा निवेदकलाई मिति २०७१।४।१ देखि लागु हुने गरी सरूवा गरिएकोमा उक्त मितिको सरूवा रद्द गरिसकिएको भन्ने उल्लेख गरेको देखिँदा निवेदकको निवेदनको माग पूरा भई सकेको देखिने।

अतः माथि विवेचित तथ्य, कानून र आधारबाट विपक्षीमध्येका त्रिभुवन विश्वविद्यालय, विज्ञान तथा प्रविधि अध्ययन संस्थान किर्तिपुरसमेतको तर्फबाट डिनको लिखित जवाफमा निवेदकलाई मिति २०७१।४।१ देखि लागु हुने गरी सरूवा गरिएको भन्नेसमेत व्यहोराको मिति २०७१।३।११ को पत्रबाट गरेको सरूवा रद्द गरिसकिएको भन्ने उल्लेख गरेको देखिँदा निवेदनको माग पूरा भई सकेको स्थितिमा रिट जारी गर्नुपर्ने आवश्यकता नरहेको हुँदा प्रस्तुत निवेदन

खारेज हुने ।
इजलास अधिकृत: कोशलेश्वर ज्ञवाली
कम्प्युटर: मन्जिता ढुंगाना
इति संवत् २०७३ साल कात्तिक २ गते रोज ३ शुभम् ।

## इजलास नं. ६

१

**मा.न्या.श्री देवेन्द्र गोपाल श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा.,** ०७०-CR-१६१२, जबरजस्ती करणी, *वीरबहादुर थिङ्ग वि. नेपाल सरकार*

प्रत्यक्षदर्शी प्रमाणले कसुर तथा कसुरदार ठहर गर्न महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह गर्ने भएपनि सबै वारदातमा प्रत्यक्ष प्रमाण तथा देखी जान्ने प्रमाण हुन्छ नै भन्ने र त्यस्तो प्रमाण नभए कसुर र कसुरदार पत्ता लाग्न नै सक्दैन भन्ने हुँदैन । स्वाभावैले जबरजस्ती करणीलगायतका कसुरहरू लुकिछिपी सकेसम्म कसैले थाहा पाउन नसकुन् भनी गरिने हुँदा यस्ता कसुरको वारदातमा प्रत्यक्ष तथा देखी जान्ने प्रमाणको अभाव रहनुलाई स्वाभाविक नै मान्नुपर्ने हुन्छ । यस्ता वारदातमा पीडित स्वयम् नै घटनाको प्रमुख प्रत्यक्ष द्रष्टा हुने भएकोले निजको भनाइलाई नै प्रत्यक्ष प्रमाणका रूपमा प्रमाणमा लिनुपर्ने ।

स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनबाट समेत कन्याजाली च्यातिएको नदेखिई पीडितको स्वास्थ्य सामान्य रहेको देखिएको भन्ने प्रतिवादीको जिकिरतर्फ हेर्दा माथि विवेचना गरिएअनुसार योनिमा लिङ्ग जोडिएमा मात्र पनि जबरजस्ती करणीको कसुर भएको मानिने देखिएबाट यस्तो केही मात्रामा लिङ्ग प्रवेश भएको वा योनिसँग जोडिएको मात्र अवस्थामा कन्याजाली च्यातिएको नै देखिनुपर्ने भन्ने हुँदैन। लिङ्ग कन्याजालीभित्र प्रवेश नभएको अवस्थामा कन्याजाली च्यातिन सक्दैन । यसमा लिङ्ग प्रवेश गराउन खोज्दा दुखेकोले पीडित भागेको देखिएबाट कन्याजाली च्याती लिङ्ग योनिभित्र प्रवेश नभएको हुन सक्ने देखिन्छ । साथै यस्तो अवस्थामा जबरजस्ती करणी भएको देखिने अन्य सङ्केत चिह्नसमेत पीडितमा नदेखिनुलाई अस्वाभाविक मान्न मिल्दैन । त्यसैले कन्याजाली नच्यातिएको र अन्य सङ्केत नदेखिएको आधारमा मात्र कसुर नभएको भनी मान्न मिल्दैन । तसर्थ यी प्रतिवादी वीरबहादुर थिङ्गले अभियोग दाबीबमोजिम जबरजस्ती करणीको कसुर गरेको देखिएकोले निजलाई १० वर्ष कैद र निजबाट पीडितलाई रू.१,००,०००।- क्षतिपूर्ति भराई दिने ठहर्‍याई सुरू अदालतले गरेको फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालतको फैसलालाई अन्यथा भन्न नसकिने ।

अतः माथि विवेचित आधार प्रमाणबाट यी प्रतिवादी वीरबहादुर थिङ्गलाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको १ नं. र ३(१) नं.को कसुरमा सोही महलको ३(१) नं. बमोजिम १० (दश) वर्ष कैद हुने र ऐ. महलको १० नं. बमोजिम प्रतिवादीबाट पीडितलाई रू.१,००,०००।- (एक लाख) क्षतिपूर्तिसमेत भराइदिने ठहर्‍याई सुरू मकवानपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०६९।१०।०२ मा भएको फैसला सदर हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत हेटौंडाबाट मिति २०७०।०९।३० मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।
इजलास अधिकृत: यदुराज शर्मा
कम्प्युटर: सिजन रेग्मी
इति संवत् २०७३ साल साउन २५ गते रोज ३ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री देवेन्द्र गोपाल श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा.,** ०७१-CR-०८७९, कर्तव्य ज्यान, *राजेश देउला (घोला) वि. नेपाल सरकार*

प्रतिवादीउपरको किटानी जाहेरी, प्रतिवादीको

अनुसन्धान तथा अदालतको साबिति बयान, मौकामा बुझिएका व्यक्तिहरूले उल्लेख गरिदिएको व्यहोरा, बरामदी मुचुल्काको वेहोरा र बरामद भएको रिभल्भर, पेस्तोललगायतका सामान र प्रतिवादीबाट बरामद भएको रिभल्भरबाट नै गोली प्रहार भएको भन्ने विधि विज्ञान प्रयोगशालाको प्रतिवेदनलगायत मिसिल संलग्न कागज प्रमाणहरूबाट यी प्रतिवादी राजेश पोडे (द्येउला) ले आफ्नो श्रीमती शोभा पोडेलाई मार्ने मनसायले आवश्यक तयारीसमेत गरी मृतक निदाएको रातको समयमा गोली प्रहार गरेको पुष्टि हुन आएको छ । यसमा यी प्रतिवादीले यस अदालतमा पुनरावेदन गर्दासमेत अन्यथा भनी कुनै जिकिर लिन सकेको नदेखिएबाट थप विवेचनासमेत गरिरहनु परेन। त्यसैले निजलाई अभियोग दाबीअनुसार मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३ (१) नं. बमोजिम कसुर गरेको ठहऱ्याई सर्वश्वसहित जन्मकैदको सजाय गर्ने गरी सुरू अदालतले गरेको फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालतको फैसला मिलेकै देखिन आउने।

एउटै कसुर कायम भए पनि सबै बिभिन्न अवस्था र परिस्थितिमा विभिन्न अवस्थाका कसुरदारहरूलाई एउटै प्रकारको सजाय दिँदा दण्डका निरोधात्मक, उपचारात्मक, प्रतिकारात्मक तथा सुधारात्मक जस्ता उद्देश्य पूरा हुन नसक्ने र कसुरदारलाई मार्का परी अन्यायसमेत पर्न जाने भएकोले यस्तो न्यायिक स्वविवेकाधिकारको अधिकार न्यायकर्तालाई दिएको हुन्छ। न्यायिक स्वविवेक प्रयोग गरी सजाय कम गर्न सकिने भएपनि यो अधिकारलाई स्वइच्छाचारी रूपमा भने कदापी प्रयोग गर्न सकिँदैन। यसको प्रयोग तार्किक रूपले सजाय घटाउनु उचित ठहऱ्याएको अवस्थामा मात्र गरी तार्किक तथा न्यायिक रूपले उचित देखेको मात्रामा मात्र सजाय घटाउने गरी गर्नुपर्ने हुन्छ । अर्थात यसरी सजाय घटाउँदा न्यायिकरूपले तर्क दिने प्रशस्त स्थान भएको हुनुपर्ने।

प्रतिवादीले बैंक तथा वित्तिय संस्थामा रकम लुट्ने प्रयोजनका लागि हतियार खरिद गरेको भन्ने निज स्वयम्को बयानबाट देखिएको छ । त्यस्तै पहिला पनि निजले बिमा संस्थान रामशाहपथमा लुटपाट गरी सजाय भोगेको बुझिन आएको छ । यसबाट निजमा पहिलादेखि नै अपाधिक मनोवृति भई अपराधसमेत गर्ने गरेको प्रस्ट हुन्छ। प्रस्तुत वारदात गर्न पनि यी प्रतिवादीले आफ्नो श्रीमतीको चरित्रउपर शङ्का गरी निजलाई मार्नुपर्छ भन्ने सोचि रिभल्भरमा गोली लोड गर्ने, त्यसलाई लुकाउने, आफू नसुती श्रीमतीलाई सुत्न दिई निज सुतिसकेपछि निजउपर कन्चटजस्तो संवेदनशील अङ्गमा गोली प्रहार गरी योजनाबद्ध रूपमा नियोजित हत्या गरेको देखिएको छ । यसरी हत्या गरेपछि पनि निज बिहानै सि.वि. भन्ने चतुर बहादुर लामा समेतको हत्या गर्न गई हत्याको प्रयाससमेत गर्न पुगेको देखिन्छ। यसरी यस वारदातपूर्व पनि आपराधिक नियत बोकी आपराधिक कार्यसमेत गरेको, प्रस्तुत कसुर गर्ने पनि पूर्ण रूपमा आपराधिक मनसाय राखी योजनाबद्ध रूपमा कसुर गर्न पुगेको र कसुर गरिसकेपछि पनि सोउपर कुनै पश्चातापको भावना व्यक्त गरेको देखिने क्रिया नगरी उल्टै अर्को अपराध गर्ने प्रयास गरेको कसुरदारलाई अ.बं. १८८ नं. को राय लगाई सजाय कम गर्दा उक्त कानूनी व्यवस्था तथा दण्डको उद्देश्यसमेत पूरा हुने नदेखिने।

अतः माथि विवेचित आधार प्रमाणबाट प्रतिवादी राजेश देउला (द्योला) लाई अभियोग दाबीबमोजिम मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३ (१) नं. बमोजिम सर्वश्वसहित जन्मकैद हुने ठहऱ्याई सुरू भक्तपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०६९।१०।१८

मा भएको फैसला सदर हुने ठहऱ्याई पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०७०।११।६ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । पुनरावेदक प्रतिवादीको अ.बं. १८८ नं. बमोजिम सजायमा छूट पाउनु पर्ने भन्ने पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने।

इजलास अधिकृत: यदुराज शर्मा

कम्प्युटर: सिजन रेग्मी

इति संवत् २०७३ साल साउन २४ गते रोज ३ शुभम्।

३

**मा.न्या.श्री देवेन्द्र गोपाल श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की,** ०७१-CR-०७५६, कर्तव्य ज्यान, *सचिन परियार वि. नेपाल सरकार*

मृतक र प्रतिवादीहरूबीच लेनदेन विषयमा विवाद तभएको तथ्यमा विवाद देखिँदैन । मृतकको साथमा रहेको चक्कु यी प्रतिवादीले खोसी आफ्नो नियन्त्रमा लिइसकेपछि सोही चक्कु र इट्टा ढुंगासमेतले मृतकलाई प्रहार गरी कर्तव्य गरेको देखिन्छ। मृतक एक्लै भएको र प्रतिवादीहरू २ जना रहेको तथा चक्कुसमेत प्रतिवादीहरू कै नियन्त्रणमा रहेको अवस्थामा प्रस्तुत वारदात घटाइएको देखिन्छ । धारिलो हतियार चक्कु र इँट्टासमेतले दुई जना प्रतिवादीहरू मिली मृतकलाई संवेदनशील अङ्गसमेतमा प्रहार गरी मारेको देखिन्छ। यसप्रकारको वारदातलाई मनसाय रहितको वारदात भन्न मिल्ने नदेखिँदा प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

प्रतिवादी रमेश गुरूङले अनुसान्धन अधिकारीसमक्ष आरोपित कसुरमा साबित रही अदालतमा इन्कारी बयान गरे तापनि प्रतिवादी सचिन परियारले अदालतसमक्षसमेत साबिति रही यी प्रतिवादीउपर समेत पोल गरेबाट इन्कारी बयान मिसिल प्रमाणबाट पुष्टि हुन सकेको देखिँदैन । निजको अनुसन्धान अधिकारीसमक्षको साबिती बयान सहप्रतिवादी सचिन परियारले यी प्रतिवादीलाई समेत पोल गरी गरेको साबिती बयान, लास जाँच मुचुल्का र शव परीक्षण प्रतिवेदनबाट समर्थित भएको छ । यसरी मिसिल संलग्न तथ्य प्रमाणबाट समर्थित भएको यी प्रतिवादी रमेश गुरूङको अनुसन्धान अधिकारीसमक्षको बयानलाई प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ९(१) बमोजिम निजका बिरूद्धमा प्रमाणमा लिन मिल्ने।

तसर्थ प्रतिवादीहरू सचिन परियार र रमेश गुरूङले मृतक राजु परियारलाई लेनदेनको विवादमा चक्कु तथा इट्टासमेतले प्रहार गरी कर्तव्य गरी मारेको पुष्टि हुन आएकोले निजहरूलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३ (३) नं. बमोजिम सजाय हुने ठहऱ्याई पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०७१।३।३१ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । पुनरावेदक प्रतिवादी सचिन परियारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न सक्दैन। अर्का प्रतिवादी रमेश गुरूङको हकमा पुनरावेदन अदालतको फैसला साधक सदर हुने।

इजलास अधिकृतः श्री मनकुमारी जि.एम.वि.क.

इति संवत् २०७३ साल असोज १२ गते रोज ४ शुभम्।

४

**मा.न्या.श्री देवेन्द्र गोपाल श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत,** ०७२-CR-०३१६, कर्तव्य ज्यान, *लालबहादुर थापा वि. नेपाल सरकार*

भवितव्य हुन मुख्यतः ज्यान मार्ने कुनै इबिलाग वा मनसाय नभएको हुनुपर्ने, आफूले गरेको कामबाट मानिस मर्ला भन्ने जस्तो नदेखिएको वा परिमाणको पूर्व ज्ञान वा इच्छा नभएको हुनुपर्ने, यस्तो ज्यान मर्न सक्छ भन्ने पूर्वज्ञान तथा ईच्छासमेत नभएको अवस्थामा कुनै काम सावधानीपूर्वक गर्दा अरूलाई लाग्न गई अप्रत्यासित रूपमा मानिस मर्न

गएको देखिएको अवस्थामा मात्र भवितव्य ज्यान हुन जान्छ । त्यसैले भवितव्य एक आकस्मिक घटना वा दुर्घटनाको हो । भवितव्य ज्यान हुन उल्लिखित यी सबै अवस्थाहरूको वारदातमा संयोजन रहे भएको हुनुपर्दछ। यीमध्ये कुनै एउटाको अभाव भएमा त्यसलाई भवितव्य मान्न नसकिने।

प्रतिवादीले आफ्नो श्रीमतीलाई मृतकले करणी गर्न लागेको देखी आवेशमा आई प्रहार गरेको देखिन्छ । यसरी आवेशमा आउनु मानवीय प्रकृतिको हिसाबले स्वाभाविक भए पनि यसले तत्काल यी प्रतिवादीमा मृतकलाई मार्नेसम्मको रिस उठेको प्रस्ट हुनजान्छ । त्यस्तै प्रतिवादीले नजिक रहेको सालको ८ इन्च गोलाइ र ३२ इन्च लम्बाइको दाउराले मृतकको संवेदनशील अङ्ग टाउको तथा निधारमा पटकपटक प्रहार गरेको प्रतिवादी स्वयम्को बयान, बरामद भएको दाउरा र मृतकको निधारमा र टाउकोमा लागेको चोटसमेतबाट पुष्टि हुन आएको छ । यसरी सालको जस्तो कडा दाउराले पटकपटक टाउको निधार जस्तो संवेदनशील अङ्गमा हान्दा मानिसको मृत्यु हुनसक्ने सम्भावनाको पूर्वज्ञान यी प्रतिवादीमा नरहेको भनी मान्न सकिँदैन । यसरी प्रहार गरेकोलाई निजले सावधानीपूर्वक नै कार्य गरेको भनेर पनि भन्न सकिँदैन । यी प्रतिवादीमा मृतकलाई मार्ने पूर्वरिसइबी नभए पनि मृतकको अनुचित क्रियाकलापको कारणबाट तत्काल भने मार्नेसम्मको रिस उठेको घटना हुँदाको परिस्थिति र निजले प्रहार गरेको साधन तथा प्रहार गर्ने तरिकाबाट पुष्टि हुनजान्छ । यस्तो अवस्थालाई उपर्युक्त कानूनी व्यवस्थाको आधारमा भवितव्य ज्यानअन्तर्गतको वारदात भन्न मिल्ने देखिएन। तसर्थ प्रतिवाद गर्न मात्र प्रहार गरेकोले भवितव्य ज्यानको वारदात हो भनी प्रतिवादीले लिएको पुनरावेदन जिकिर तथा निजका कानून व्यवसायीको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. मा "ज्यान मार्नाको मनसाय रहेनछ, ज्यान लिनुपर्नेसम्मको इबी पनि रहेनछ, लुकी चोरिकन हानेको पनि रहेनछ, उसै मौकामा उठेको कुनै कुरामा रिस थाम्न नसकी जोखिम हतियारले हानेको वा विष खुवाएकोबाहेक साधारण लाठा ढुङ्गा लात मुक्का आदिले हान्दा सोही चोट पीरले ऐन,का म्यादभित्र ज्यान मरेमा १० (दश) वर्ष कैद गर्नुपर्छ भन्ने व्यवस्था रहेको देखिन्छ ।" प्रस्तुत कानूनी व्यवस्था हेर्दा आवेशप्रेरित हत्या हुन मार्नुपर्ने पूर्वरिसइबी तथा मनसाय देखिनु नपर्ने, मार्ने योजना बनाएको पनि देखिनु नपर्ने, लुकी चोरी हानेको पनि नदेखिनुपर्ने र मौकामा केही कारणले रिस उठी सो रिस नियन्त्रण गर्न नसकी साधारण लाठा, ढुङ्गा, लात मुक्काले मात्र हानेको देखिनुपर्ने हुन्छ । प्रस्तुत वारदातका सन्दर्भमा हेर्दा पनि यी प्रतिवादीमा मृतकलाई मार्नेसम्मको रिसइबी रहेको र मार्ने पूर्वयोजना बनाई आएको मिसिलबाट देखिँदैन । त्यस्तै मृतकलाई लुकी चोरी र कुनै सांघातिक हतियारले नै हानेको पनि देखिएको छैन । मृतक र यी प्रतिवादीसमेतसँगै रक्सी खाएको अवस्थामा प्रतिवादी बाहिर गएको मौका पारी मृतकले आफ्नो श्रीमतीलाई करणी गर्न लागेको देखी आवेशमा आई आत्मनियन्त्रणसमेत गुमाई नजिकै रहेको दाउराले मृतकलाई प्रहार गरेको देखिन्छ । यसरी तत्काल आवेशमा आई गरेको प्रहारबाट भएको मृत्युलाईउपर्युक्त कानूनी व्यवस्थाअनुसार आवेशप्रेरित हत्याअन्तर्गतको कसुर नै मान्नुपर्ने हुँदा सुरू तथा पुनरावेदन अदालतको फैसलालाई अन्यथा भन्न नसकिने।

अतः माथि विवेचित आधार प्रमाणहरूबाट प्रतिवादी लालबहादुर थापालाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं.अनुसार आवेशप्रेरित

हत्याको कसुरमा ऐ. नं.अनुसार १० (दश) वर्ष कैद हुने ठहर्‍याई सुरू रूपन्देही जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०।०२।२१ मा भएको फैसला सदर हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत बुटवलबाट मिति २०७०।१०।२८ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: यदुराज शर्मा

कम्प्युटर: सिजन रेग्मी

इति संवत् २०७३ साल साउन २७ गते रोज ५ शुभम् ।

**इजलास नं. ७**

१

**मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ,** ०७०-CI-१०४५, निषेधाज्ञा, *तेजकुमार श्रेष्ठ वि. एलिना रावत*

निवेदनपत्रमा उल्लिखित निवेदकको कि.नं. ३८२ को जग्गा र प्रत्यर्थीको कि.नं. ३८३ को जग्गा दुवै पक्षले मिति २०३५।११।१ मा एउटै दाताबाट साबिक कि.नं. ९३ को जग्गाबाट कित्ताकाट गरी खरिद गरेको भन्ने कुरामा कुनै विवाद रहेको देखिएन । उक्त जग्गाहरूमा जान मूल सडकबाट १३ फिटको बाटो रहने गरी जग्गा खरिद गरेको उक्त राजीनामाहरूमा उल्लेख भएको व्यहोराबाट देखिन्छ । यसै विषयमा यीनै पक्ष विपक्ष वीच चलेको ०५७ सालको रिट नं.३७५९ को निषेधाज्ञा मुद्दामा सर्वोच्च अदालतबाट मिति २०५९।४।२९ मा फैसला हुँदा झगडा परेको जग्गामा भएको १३ फिटको बाटोमा कुनै किसिमले हस्तक्षेप हुनेगरी निर्माण कार्य नगर्नु भनी निषेधाज्ञाको आदेश जारी भएको भन्ने देखिन्छ । सोही विषयलाई पुनरावेदकले सर्वोच्च अदालतले समेत साझा बाटो भनी स्वीकार गरेको भन्ने अर्थ गरेको पाइन्छ । उक्त निषेधाज्ञा मुद्दामा यस अदालतबाट फैसला हुँदा यही जग्गाको विषयमा हक वेहक एवम् खिचोला मुद्दा काठमाडौं जिल्ला अदालतमा चलीरहेको भन्ने आधारमा उक्त जग्गालाई झगडा परेको जग्गा भनेको देखिन्छ । निषेधाज्ञा मुद्दामा हक वेहक सम्बन्धमा निर्क्योल गर्न नमिल्ने हुँदा बाटो साझा हो वा होइन भन्ने विषय प्रस्तुत मुद्दाको लागि विवादको विषय हुन नसक्ने ।

निवेदन पत्रमा २०३५ सालको लिखतअनुसार १३ फिटको साझा बाटो कायम गरेको भन्ने निवेदकले लिएको निवेदन दाबीलाई विपक्षीले लिखित जवाफमा सो जग्गामा साबिकमा बाटो थिएन, सो बाटो निवेदकले भनेकोअनुसारको होइन, १३ फिटको बाटोसम्म राख्ने मात्र लिखतमा उल्लेख गरेको हो भनी खण्डन गरेको देखियो । सो बाटो सम्बन्धमा देखिएको प्रस्तुत विवादित तथ्य प्रमाण बुझी न्यायिक निर्णय हुनुपर्ने प्रकृतिको देखिनाले प्रस्तुत निवेदनबाट सो तथ्यसम्बन्धी विवादको निरूपण हुनसक्ने देखिएन । २०३५ सालको लिखतबमोजिमको र निषेधाज्ञा मुद्दामा सर्वोच्च अदालतको फैसलामा उल्लेख भएको १३ फिटको बाटो कुन स्थानमा कायम गर्ने भन्ने सम्बन्धमा निवेदकले वैकल्पिक न्यायिक उपचारको मार्ग अवलम्बन गरेकोसमेत देखिएन । उक्त खिचोला मुद्दाको मिसिलमा संलग्न रहेको नक्सा मुचुल्का, जग्गाधनी दर्ता स्रेस्ता एवम् फिल्डबुक उतारसमेतबाट न.नं. २ को जग्गासमेत कि.नं. ३८३ भित्रको विपक्षीको नाउँ दर्ताको जग्गा भन्ने देखिन्छ । यस्तो अवस्था हुँदा सर्वोच्च अदालतले उक्त खिचोला मुद्दामा गरेको फैसला कार्यान्वयन भइसकेको स्थितिमा त्यसमा अन्यथा हुने गरी निवेदन मागबमोजिम निषेधाज्ञाको आदेश जारी गर्न नमिल्ने ।

अतः निवेदन मागबमोजिम निषेधाज्ञाको आदेश जारी हुने अवस्था नहुँदा खारेज हुने ठहर्‍याएको

पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०७०।१०।२९ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने
इजलास अधिकृत: आत्मदेव जोशी
कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल
इति संवत् २०७४ साल असार ४ गते रोज १ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा,** ०६८-CI-११६२, निषेधाज्ञा / परमादेश, *श्रीमती जयन्ती लम्साल वि. तारा गाउँ विकास समितिसमेत*

विवादको कि.नं. २२ को जग्गा तत्कालीन श्री ५ को सरकारको अधिग्रहणमा परेको देखिएकोले सो जग्गामा निवेदकको हक स्वामित्त्व रहेको पाइएन । सो कि.नं. मा रहेको साबिकबमोजिमको घर र घरले चर्चेको जग्गामा यस अदालतको मिति २०६२।२।१९ को फैसलाले पुनरावेदकको भोगाधिकारसम्म कायम भएको देखियो। पुनरावेदकले जिकिर लिएको ने.का.प. २०५४, अङ्क ७, नि.नं. ६४०३ मा प्रतिपादित कानूनी सिद्धान्त भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा २(ङ) ले गरेको “घरबारी” शब्दको परिभाषाको सन्दर्भमा उल्लेखन भएको पाइयो । भुमीसम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा २(ङ) ले गरेको “घरवारी” को परिभाषा घर र घरले चर्चेको सन्दर्भमा प्रस्तुत मुद्दामा आकर्षित हुनसक्ने देखिएन । तसर्थ घर र घरले चर्चेको जग्गामा मात्र पुनरावेदकको भोगाधिकार रहेको देखिएको छ । जग्गाको केही भागमा रहेको भोगाधिकारको आधारमा स्वामित्त्ववालाको हक समाप्त भई भोगाधिकारवालाको स्वामित्त्व सिर्जना हुन सक्ने होइन । यस अदालतको उल्लिखित फैसलाले पुनरावेदकको साबिकबमोजिमको घर र सो घरले चर्चेको जग्गामासम्म भोगाधिकार कायम रहने देखिएको छ । निजको साबिकदेखिको भोगाधिकार भएको घर र घरले चर्चेको जग्गामा विपक्षीको हस्तक्षेपको आशङ्का रहेको देखिन आएन । रिट खारेज हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालतको आदेश मनासिबदेखिन आउने ।

तसर्थ निवेदकले दाबी लिएको साबिक कि.नं. २२ को क्षेत्रफल ४-४-० जग्गामा रहेको निवेदकको भोगाधिकार भएको घर र घरले चर्चेको जग्गामा विपक्षीबाट पर्खाल बनाउने आशङ्काको अवस्था विद्यमान नदेखिएको भनी रिट निवेदन खारेज हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०६८।२।११ को आदेश मनासिब देखिँदा सदर हुने ।
इजलास अधिकृत: आनन्दराज पन्त
इति संवत् २०७४ साल वैशाख २५ गते रोज २ शुभम्।

**३**

**मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल,** ०७०-WO-००७४, उत्प्रेषण, *भगौतीप्रसाद अहर यादव वि. रमेशचन्द्र गौतमसमेत*

मिसिल संलग्न रहेको विपक्षी रमेशचन्द्र गौतमको मिति २०५३।९।१८ को निवेदनबाट मोही लगत कट्टाको माग भएको कित्ताहरूमध्येकै प्रस्तुत रिट निवेदनमा उल्लेख गरिएकै कि.न ं.४८।३४६ को जग्गामा रहेको भवानी अहिरको नामको मोही लगत कट्टाको माग गरिएको देखिएको र सोही निवेदन मागबमोजिम नै उक्त कित्ताको जग्गासमेतको मोही लगत कट्टा गरिएको भनी उक्त मिति २०५३।९।२१ को निर्णयबाट देखियो । निवेदकको बाबुको नाममा उक्त मोहियानी हक कायम भइसकेको, बाबु / छोराको नातामा विवाद नरहेको, पत्नि / आमाबाट पति / बाबुमा आएको मोहियानी हक हुँदा आमाको विवाह अघि माइतीकै थर हुँदैमा वैवाहिक नातामा विवाद नभई पति / बाबुमा हक कायम रहेको अवस्थामा आमासँग छोराको थर नमिलेको आधारमा मात्र छोराको हक नलाग्ने भन्ने तर्कसँग सहमत हुन नसकिने ।

यसरी भूमिसुधार कार्यालयको उक्त मिति २०५३।९।२१ को निर्णयले विवादको जग्गाको मोही लगत कट्टाको सम्बन्धमा निर्णय गरेको देखिन आई सो निर्णय हुँदाका अवस्थामा उक्त कित्ता न ं.४८।३४६ को जग्गाको मोहीमा भवानी अहिर अस्तित्वमा रहिरहेको भन्ने नै देखिएको र विपक्षीले उक्त जग्गाको मोही लगत कट्टा गरिपाउँ भनी दिएको सो निवेदनमा उक्त मोही वा निजको हकवाला कोही कसैलाई विपक्षी बनाएकोसमेत नदेखिएको र भूमिसुधार कार्यालयबाट समेत उक्त जग्गाको मोही लगत कट्टा गर्नुपूर्व उक्त मोही वा निजको हकदारसमेतका कोही कसैलाई बुझिएकोसमेत देखिन नआउने।

मिति २०५३।९।१८ गतेमा भूमिसुधार कार्यालय, बर्दियामा निवेदन दिने जग्गाधनीले उक्त कित्ता नं.४८।३४६ को जग्गाको मोही लगतमा भवानी अहिर अस्तित्वमा रहिरहेको भनी स्वीकार गरी निवेदन दिएको देखिएको छ । निजको उक्त निवेदनमा बिक्री वितरणबाट प्राप्त जग्गाको मोही स्वतः कट्टा हुनुपर्ने भन्ने सो निवेदनका आधारमा सो जग्गाको मोही लगत कट्टा गर्नको निमित्त उक्त भूमिसुधार कार्यालयबाट गरिएको सो निर्णयले प्रत्यक्ष प्रभाव र असर पर्न जाने मोही वा निजका हकदारका रूपमा रहेका यी रिट निवेदकलाई समेत बुझ्दै नबुझी उक्त जग्गाबाट मोही लगत कट्टा गर्ने गरी मिति २०५३।९।२१ मा गरिएको निर्णयबाट आघात पर्न जाने यी निवेदकलाई सो निर्णय गर्नुपूर्व सुनुवाइको मौका अनिवार्यरूपमा दिनुपर्नेमा सुनुवाइको मौका नै नदिई सो भूमिसुधार कार्यालयबाट भएको उक्त मिति २०५३।९।२१को निर्णयले न्यायिक प्रक्रियामा वैधानिक मान्यता प्राप्त गर्नसक्ने अवस्थासमेत देखिन नआउने।

अतः माथि विवेचित आधार, प्रमाण तथा सिद्धान्तसमेतबाट प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्तको उल्लङ्घन गरी एवम् कानूनबमोजिमको उचित प्रक्रियाको पालनासमेत नगरी गरिएको निर्णय कानूनको दृष्टिमा शून्य हुने हुँदा सो कि.नं. ४८।३४६को जग्गाको मोही लगत कट्टा गरिदिनु भनी भूमिसुधार कार्यालय, बर्दियाबाट भएको उक्त मिति २०५३।९।२१को निर्णय तथा उक्त जग्गाको मोही लगत कट्टा गरिदिनु भनी सोही मितिमा मालपोत कार्यालय, बर्दियामा गरिएको पत्राचार एवम् मालपोत कार्यालयबाट उक्त जग्गाको मोही लगत कट्टा गर्नेसमेतको कार्य न्यायोचित र कानूनसम्मत रहेको नदेखिँदा उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरिदिएको छ । अब निवेदकको निवेदन मागबमोजिम उक्त कि.नं. ४८/३४६को जग्गाको मोही पूर्ववत कायम गराई कानूनबमोजिम गर्नु भनी विपक्षीहरूका नाममा परमादेशको आदेशसमेत जारी हुने।

इजलास अधिकृत: सुरथप्रसाद तिमल्सेना

कम्प्युटर: हर्कमाया राई

इति संवत् २०७४ साल जेठ २८ गते रोज १ शुभम्।

४

**मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी.,** ०७१-CI-०३०७, निषेधाज्ञा, *ठाकुरप्रसाद पौडेल वि. तिर्थ राज्य लक्ष्मी शाह*

निवेदक तिर्थ राज्यलक्ष्मी शाहले अफिस कवल फ्लाटहरू मिति २०६८।५।३० खरिद गरी लिएको र उक्त अफिस कवलहरूमा निजको हकभोग रहेको देखिन्छ । उक्त पसल कवलहरू निवेदकले जे.डि.ए डेभलपर प्रा.लि.बाट मिति २०६८।५।३० मा र.नं. ६६६ (ग) राजीनामा लिखतबाट पारित गरी लिएको कुरामा अन्यथा मान्नसक्ने अवस्था देखिँदैन । जसबाट उपरोक्त पसल कवलहरूमा निवेदकको निर्विवाद हक कायम रहेको देखिन्छ । कानूनबमोजिम हरेक नागरिकलाई सम्पति आर्जन र भोग गर्ने अधिकार रहन्छ । निवेदकको निर्विवाद हक

भोगमा रहेका अफिस कवलहरूलाई सुदर्शन अर्यालले क्रिष्टल फाइनान्स कम्पनी लिमिटेडबाट लिएको कर्जा भुक्तानी बाँकी असुलउपर गर्ने प्रयोजनार्थ लिलाम गर्ने कार्यका लागि असम्बद्ध र कर्जा प्रवाहसँग कुनै सम्बन्ध नरहेका उनाउ व्यक्तिको सम्पति एकाले खाएको बैंक वा वित्तिय संस्थाले घरजग्गाको धितोमा आर्थिक कारोवार गर्दा उक्त घरजग्गा सम्बन्धित मालपोत कार्यलयमा रोक्का राख्नुपर्ने हुन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा उक्त अफिस कवालहरू पुनरावेदक क्रिस्टल फाईनान्स लिमिटेडले मालपोत कार्यलयमा रोक्का राखेको पनि देखिँदैन। निवेदिकाले आफ्नो नाउँकोउपरोक्त अफिस कवलहरू विपक्षी सुदर्शन अर्याललगायत अरू कोही कुनै व्यक्तिलाई कुनै लिखत मन्जुरनामा गरिदिएको पनि देखिदैन। उक्त अफिस कवल धितो राखी कहिकतैबाट ऋण पनि लिएको देखिँदैन। निवेदिकालाई निजका नाउँका उक्त कवल नं. ७०६, ७०७ र ७०८ को लिलामी कार्य अगाडी बढाउँदा बुझिएको पनि पाइँदैन । यसरी ऋण लिने व्यक्तिले ऋण नतिरी फरार रहेको स्थितिमा ऋण लिँदा कुनै सरोकार र सम्बन्ध नरहेका ऋण प्रवाह गर्दा साक्षी पनि नबसेका व्यक्तिका नाउँका अफिस कवलहरू लिलामी कार्य अगाडी बढाउने विपक्षी क्रिष्टल फाइनान्स लिमिटेडको कार्य त्रुटिपूर्ण देखिँदा पुनरावेदन अदालत पाटनको निषेधाज्ञाको आदेश खारेज गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदक विपक्षीको पुनरावेदन जिकिर पुग्न सक्ने नदेखिने।

तसर्थ विपक्षी क्रिष्टल फाइनान्स लिमिटेडले विपक्षी सुदर्शन अर्यालले लिएको ऋण कर्जाको असुलउपरका लागि निवेदक तिर्थ राज्य लक्ष्मी शाहका नाउँमा राजीनामाबाट प्राप्त भई हक भोग कायम रहेका अफिस कवलहरूलाई लिलाम बिक्री गर्न लिलामी सूचना प्रकाशित गरिएको कार्य प्रथम दृष्टि भई त्रुटिपूर्ण र कानूनको गम्भीर उल्लङ्घन भएको देखिन आयो। जसबाट निवेदकको सम्पति भोग र आर्जन गर्न पाउने संवैधानिक एवम् कानूनी हकमा नै असर पुग्न गएको देखियो । अतः माथि विवेचित आधार कारणहरूबाट विपक्षीहरूबाट भए गरेका उपरोक्त काम कारवाहीहरू कानूनको दृष्टिमा गैरकानूनी भई निवेदकको कानूनप्रदत्त सम्पतिसम्बन्धी हकमा आघात पर्ने किसिमका देखिएकोले निवेदकको हक भोग र दर्ता भएको उल्लिखित अफिस कवलहरू विपक्षीमध्येका सुदर्शन अर्यालको नाउँको कर्जाबापतमा लिलामी नगर्नु नगराउनु तथा त्यसमा कुनै प्रकारले आघात नपार्नु भनी विपक्षीहरूको नाउँमा निवेदन मागदाबीबमोजिम निषेधाज्ञाको आदेश जारी हुने ठहर्छ भनी पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०७०।९।२३ जारी भएको निषेधाज्ञाको आदेश मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: मुकुन्द आचार्य

कम्प्युटर: देवीमाया खतिवडा (देबिना)

इति संवत् २०७३ साल फागुन २३ गते रोज २ शुभम्।

- यसै लगाउको ०७१-CI-०३०८, निषेधाज्ञा, *ठाकुरप्रसाद पौडेल वि. तिर्थ राज्य लक्ष्मी शाह* भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ।

## इजलास नं. ८

१

**मा.न्या.श्री जगदीश शर्मा पौडेल र मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ,** ०६६-CI- ००७८, ०८६०, फैसला बदर, *विमाया घलेसमेत वि. धनबहादुर घले, धनप्रसाद घले वि. राजकुमार घलेसमेत*

पुनरावेदक प्रतिवादी विमाया घलेले तत्कालीन जिल्ला कार्यालय गोरखाबाट नागरिकताको प्रमाणपत्र प्राप्त गर्दा ना.प्र.नं. ग.गो. २५५८ मा पतिको

नाम थर महलमा धनप्रसाद घले भन्ने उल्लेख भइरहेको अवस्था देखियो । सो नागरिकताको प्रमाणपत्रमा निजको वतन गोरखा जिल्ला थुमी गा.वि.स. नै उल्लेख भइरहेको मा निजको छोरा राजकुमार घलेले सोही जिल्लाको जिल्ला प्रशासन कार्यालयबाट नागरिकता प्र.प.नं. ९४४७५ बाट नागरिकता प्राप्त गर्दासमेत वावुको नाम थर महलमा धनप्रसाद घले नै उल्लेख भएको पाइयो । उक्त नागरिकताको प्रमाणपत्रका सम्बन्धमा पुनरावेदक वादीले निज राजकुमार घलेले झुट्ठा नागरिकताको प्रमाणपत्र लिई प्रस्तुत मुद्दा दायर गरेको र सो सम्बन्धमा जिल्ला प्रशासन कार्यालयलगायतका निकायमा उजुरी गरेको व्यहोरा उल्लेख गरेको भए तापनि सोबारे तथ्ययुक्त जानकारी र प्रमाण पेस गर्न नसकेको देखिँदा सो जारी भएका नागरिकता प्रमाणपत्रहरूलाई अन्यथा मान्नु मनासिब नदेखिने।

मिसिल संलग्न नागरिकता प्रमाणपत्रका प्रतिलिपीहरूलाई आधार मान्दा निज विमाया घले निज धनप्रसाद घलेको श्रीमती र निजको छोरा राजकुमार घले भएको तथ्य अन्यथा प्रमाणित नभएसम्म स्थापित हुन आएको छ । नागरिकतामा उल्लिखित वतनबारे निज पुनरावेदक वादीले छोरा राजकुमार घलेका हकमा प्रश्न उठाए पनि श्रीमती विमाया घलेका हकमा कुनै प्रतिवाद गर्न नसक्नु भएको र निजको नागरिकताबारे प्रश्न उठेको पनि पाइँदैन । नागरिकताको प्रमाणपत्रमा उल्लिखित वतन अन्यथा प्रमाणित नभएसम्म यकिन वतन रहेको नै मान्नुपर्ने हुन्छ । निजसमेतलाई प्रतिवादी बनाई दायर भएको अंश मुद्दामा सगोलमा रहे भएका अन्य प्रतिवादीलाई थाहा जानकारी भएको कुरा निजलाई मात्र थाहा हुन सकेन भन्नु न्यायसँगत हुने पनि देखिँदैन । सुरू गोरखा जिल्ला अदालतबाट फैसला हुँदा तायदाती फाँटवारी पेस हुन नआएकोले फाँटवारी देखाई आएका बखत अंश छुट्याई दिने गरी उल्लेख भएको देखिँदा सोही फैसलाबमोजिम अंश छुट्याई दिएको व्यहोरालाई अन्यथा गर्न पर्ने अवस्था नदेखिने।

प्रतिवादी धनप्रसाद घलेले मुलुकी ऐन, ८६ नं. बमोजिम फैसला बदर मुद्दा दायर गरेको अवस्था देखिन्छ। सोही महलको २०८ नं. मा भएको व्यवस्थालाई हेर्दा “मुद्दाबाट जारी भएको समाव्हान इतलायनामाको म्याद तारेखमा प्रतिउत्तरपत्र नदिई म्याद गुजारी बसेका झगडियाको ऐनबमोजिम एकतर्फी प्रमाण बुझी भएका फैसलाउपर पुनरावेदन लाग्न सक्दैन । समाव्हान इतलायनामा तामेल गर्दा यसै महलको ११० नं. बमोजिम रीत नपुऱ्याई तामेल गरेकाले थाहा पाउन नसकी प्रतिवाद दिन नपाई म्याद गुज्रेको भन्ने उजुरीसाथ फैसला भएको छ महिनाभित्रमा थाहा पाएको पैँतीस दिनभित्र झगडियाले प्रतिउत्तर लेखी दिन ल्यायो भने पहिले मिसिल सामेल रहेको तामेली समाह्वान हेरी रीतपूर्वक तामेल भएको देखिन आएन भने सोही व्यहोराको पर्चा लेखी प्रतिउत्तरपत्र दर्ता गरी ऐनबमोजिम बुझ्नुपर्ने प्रमाण बुझी मुद्दा फैसला गर्नुपर्छ । रीत पुगी तामेल भएको देखिएमा सोही व्यहोरा खोली उजुर लाग्न सक्दैन भनी दरपिठ गरी फिर्ता दिनुपर्छ“ भन्ने उल्लिखित व्यवस्थालाई हेर्दा सो प्रक्रिया अवलम्बन गरेकोसमेत नपाइएको, यो तरिकाले बेरीतसँग म्याद तामेली गरेकोले बदर हुनुपर्छ भनी सो काम तामेल गर्ने कर्मचारी र तामेलीमा रोहबरमा बस्ने व्यक्तिसमेतलाई उजुरी गरी जालसाज गरेकोमा कारवाही चलाएकोसमेत नदेखिँदा विद्यमान कानूनी व्यवस्थाअनुरूप रीतपूर्वक तामेल भई गएको म्याद सूचना अन्यथा गरी भए गरेको भनी भन्नु र त्यसबाट भए गरेको काम कारवाहीलाई निस्तेज हुने गरी भएका फैसलालगायतका काम कारवाहीलाई बदर गर्नुपर्ने

औचित्य नदेखिने ।

फैसला बदर तर्फको माग दाबी लिँदा निज पुनरावेदक वादीले लिएको आधारमा एकमात्र वतनसम्बन्धी विवाद रहेको देखिन्छ । वतनसम्बन्धी गलत विवरण देखाई सो गलत वतनमा म्याद तामेली भएका कारण प्रतिवाद गर्न नपाएको भन्ने जिकिर लिनु मात्र यो परीस्थितिमा पर्याप्त छैन । लिए दिएको नागरिकताको प्रमाणपत्रमा उल्लिखित वतन नै देखाई मुद्दा दायर भएको र सोही वतनमा रीत पुर्‍याई म्याद तामेल गरीएको कुराले पुनरावेदक वादीको पुनरावेदन जिकिर पुग्न सक्ने नदेखिने ।

पुनरावेदक राजकुमार घलेले सुरू फिराद दायर गर्दा फिरादपत्र दायर भएको मिति २०५९।७।२५लाई नै मानो छुट्टिएको मिति कायम गरी फिराद दायर गरेको पाइन्छ । सोही फिरादपत्रका आधारमा तायदाती माग भएको र सोही मितिलाई मानो छुट्टिएको मिति कायम गरी सुरू गोरखा जिल्ला अदालतबाट समेत फैसला भएको अवस्था छ । अंशियारहरूबीच पूर्ववत सम्बन्ध जे जस्तो भएपनि अंश विवाद परी मुद्दा दायर गर्दा नै फिरादीले मानो छुट्टिएको जिकिर गरी फिराद परेको मितिलाई मानो छुट्टिएको मिति उल्लेख गरेपछि सोही फिराद परेको मितिलाई नै मानो छुट्टिएको मिति कायम गरेको फैसला मनासिब देखिने ।

मानो छुट्टिएको मिति कायम गरेको र उक्त मानो छुट्टिएको मितिलाई दुवै पक्षले स्वीकार गरी बसेको अवस्था देखिन्छ । माथि उल्लिखित कानूनी व्यवस्थाअनुसार मानो छुट्टिएको मिति पछिको सम्पत्ति बन्डा गर्न कर नलाग्ने अवस्थालाई हेर्दा उक्त मानो छुट्टिएको मिति २०५९।७।२५ भन्दा पछि खरिद गरेको काठमाडौं जिल्ला स्वडल्लु गा.वि.स. वडा नं. ८ को कि.नं. ३४७ को घर जग्गा मुलुकी ऐन, अंशबन्डाको १८ नं. ले बन्डा नलाग्नेमा सोसमेत बन्डा गरिएको प्रमाणमा रहेको बन्डासम्बन्धी मिसिलबाट देखिएकोले मानो छुट्टिएको मिति भन्दा अगाडीको सम्पत्तिसम्म मात्र फैसलाबमोजिम भनी बन्डा गर्नुपर्ने बाध्यात्मक कानूनी व्यवस्था भएकोमा सो भन्दा पछि मिति २०६०।७।२७ मा खरिद गरिएको कि.नं. ३४७ को घर जग्गासमेत बन्डा गरेको कार्यलाई बदर नगरी सदरै गर्ने गरेको मिति २०६३।९।१९ को सुरू फैसला सो हदसम्म केही उल्टी हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत पोखराबाट मिति २०६६।१।१६।४ मा भएको फैसला मनासिब नै देखिने ।

उल्लिखित तथ्य विवेचित कानून आधार र प्रमाणबाट पुनरावेदन अदालत पोखराको मिति २०६६।१।१६ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । दुवै पक्ष विपक्षको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत: नगेन्द्रकेशरी पोखरेल

कम्प्युटर: यामप्रसाद रेग्मी

इति संवत् २०७३ साल पुस १३ गते रोज ४ शुभम् ।

- यसै लगाउको ०६६-CI- ००७९, ०८५९, फैसला बदर, *विमाया घलेसमेत वि. धनबहादुर घले, धनप्रसाद घले वि. राजकुमार घलेसमेत* भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

२

**मा.न्या.श्री जगदीश शर्मा पौडेल र मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ,** ०६८-WO- १२००, उत्प्रेषण / परमादेश, *भारती जोशी वि. अख्तियार दुरूपयोग अनुसन्धान आयोग, टङ्गाल काठमाडौंसमेत*

महेन्द्रनगर नगर विकास समितिबाट भिमदत्त नगरपालिका वडा नं. ६ कि.नं. १५४३ को जग्गामध्ये ०-०-१० जग्गा रिट निवेदिका भारती जोशीलाई मिति २०५३।२।२५ को उक्त नगर विकास समितिको

बैठकको निर्णयको आधारमा समितिका अध्यक्षको तोक आदेशबमोजिम जम्मा मूल्य रू. २१,९५,०४०।– लिई उपलब्ध गराउने निर्णय भएको कुरामा विवाद देखिएन । यस सन्दर्भमा नगर विकास समितिको मिति २०६४।८।३ को बैठकको निर्णयअनुसार नगर विकास समितिको जग्गा पहिलादेखि नै भोगी चर्ची आउने व्यक्तिलाई हालको मूल्य लिई जग्गा उपलब्ध गराउने भन्ने रहेको देखिन्छ । सो सम्बन्धमा हालको मूल्य के कसरी कायम भएको हो भन्ने सम्बन्धमा समितिको बैठकबाट निर्णय नभई केवल समितिका अध्यक्षको ठाडो तोक आदेशलाई मात्र आधार लिएको अवस्थामा अख्तियार दुरूपयोग अनुसन्धान आयोगमा उजुरी परी आयोगले कारवाही प्रक्रियामा रोक लगाएको अवस्था देखिन्छ। नगर विकास समितिको मिति २०५३।२।२५ को निर्णय कार्यान्वयनका सम्बन्धमा केवल रिट निवेदिका भारती जोशीलाई मात्र जग्गा वितरण नगरेको भन्ने व्यहोरासमेत निवेदिकाले जिकिर लिन सकेको नदेखिने ।

मिति २०६७।०६।१७ मा मन्त्रिस्तरबाट उक्त जग्गा दिनेसम्बन्धी कुनै निर्णय भएको मन्त्रालयको अभिलेखबाट नदेखिएको र सो निर्णय प्रक्रियामा रहेको महेन्दगर नगर विकास समितिको मिति २०५३।२।२५ को निर्णय नम्बर ८ मा उल्लिखित भारती जोशीलाई जग्गा दिने सम्बन्धमा कानूनसम्मत आधार खुलाई पठाउन र त्यस्ता अन्य व्यक्तिहरूको लिस्टसमेत पठाउन र नगर विकास समितिको रायसमेत उपलब्ध गराउन भौतिक योजना तथा निर्माण मन्त्रालयको सचिवस्तरबाट मिति २०६८।०८।१२ मा निर्देशन दिएको भन्ने व्यहोरा उल्लेख गरी उक्त मन्त्रालयको निर्णयसहितको फाइल शहरी विकास मन्त्रालयको पत्र संख्या ०७१।०७२।२५६ मिति २०७१।१०।२० गतेको पत्रबाट लेखी पठाएको देखिने ।

अत: मिति २०५३।२।२५ मा निवेदिकाको नाममा जग्गा उपलब्ध गराउने सम्बन्धमा मन्त्रालयबाट योजना स्वीकृत भई आएपछि निर्णय गर्ने भनी महेन्द्रनगर नगर विकास समितिको निर्णय भएकोमा सहरी विकास मन्त्रालयको मिति २०७१।१०।२० को पत्रअनुसार मन्त्रालयले सो सम्बन्धमा कुनै निर्णय नगरेको भनी उल्लेख गरेको र निवेदिकाले रिट निवेदनमा दाबी लिएको उक्त जग्गामा निवेदिकाको हक भोगको स्थितिसमेत नदेखिएको अवस्थासमेतबाट निवेदन मागबमोजिम रिट जारी गर्नुपर्ने अवस्था नदेखिँदा प्रस्तुत रिट खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: मुकुन्द आचार्य

कम्प्युटर: चन्द्रा तिमल्सेना

इति संवत् २०७३ साल पुस ४ गते रोज २ शुभम् ।

## इजलास नं. ९

१

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या. श्री केदारप्रसाद चालिसे,** ०७२-WH-००८३, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, *पासाङ थाबचेत तामाङसमेत वि. सिन्धुपाल्चोक जिल्ला अदालत सिन्धुपाल्चोक चौतारासमेत*

प्रत्यर्थीहरूको लिखित जवाफ तथा स्वयम् रिट निवेदकको रिट निवेदनमा खुलाइएका तथ्य प्रमाणहरूका आधारमा सिन्धुपाल्चोक जिल्ला मार्मिङ्ग गा.वि.स.वडा नं.५ बस्ने पासाङ्ग थाक्चुङ तामाङ र ऐ.ऐ.बस्ने छेसाङ तामाङसमेतका विरूद्ध ज्यानमार्ने उद्योग मुद्दा दायर भई कानूनबमोजिम नै अनुसन्धान तहकिकात भएको, अभियोगपत्र दायर भएको र सिन्धुपाल्चोक जिल्ला अदालतबाट फैसलासमेत भएको देखियो । यसरी कानूनबमोजिम

अधिकारप्राप्त न्यायिक निकायबाट कैद सजाय पाएका प्रतिवादीहरू पासाङ थाक्चुङ तामाङ र छेसाङ तामाङलाई कैद सजाय असूलउपर गर्नका लागि पक्राउ गरी थुनामा राख्ने कार्य कानूनबमोजिम नै भए गरेको देखिन आउने ।

जहाँसम्म रिट निवेदकको प्रत्यर्थी सिन्धुपाल्चोक जिल्ला अदालतमा दायर भएको ज्यान मार्ने उद्योग मुद्दा मेरा पिता पासाङ थावचेत र छेवाङ लामु तामाङ्नीका विरूद्ध दायर भएकै छैन । उल्लिखित मुद्दा पासाङ्ग थाक्चुङ र छेसाङ तामाङका बिरूद्ध दायर भई निजहरूलाई नै कैद ठहर भएको हो । पितामाताका नाउँमा म्याद नै जारी भएको छैन, यसरी मुद्दा नै दायर नभएका, प्रतिवादी नै नबनाइएका मेरा पितामातालाई कैद ठहर भएको भनी जबरजस्तीपूर्वक गैरकानूनी रूपले थुनामा राखिएको हो भनी लिएको जिकिर छ सो सम्बन्धमा विचार गर्दा जाहेरवाली छेवी तामाङले आफ्नो जाहेरी दरखास्तमा, अदालतमा उपस्थित भई गरेको बकपत्र तथा यस अदालतमा पेस गरेको लिखित जवाफमा समेत निज प्रतिवादीहरू मेरो देवर तथा देउरानी हुन भनी स्पष्टरूपमा लेखाएको देखिन्छ । ज्यानमार्ने उद्योगजस्तो गम्भीर प्रकृतिको मुद्दामा आफू वास्तविक अन्यायमा परी आफ्नै देवर र देउरानी विरूद्ध किटानी जाहेरी दिएको देखिन्छ । यस्तो अवस्थामा जाहेरवालीले आफ्नै देवर देउरानीलाई चिन्न नसक्ने भन्ने कुराको अनुमान गर्नसक्ने स्थिति नरहने ।

ज्यान मार्ने उद्योग मुद्दामा कसुर ठहर भएका व्यक्ति पासाङ थाक्चुङ तामाङ र छेसाङ तामाङ हुन निवेदक पासाङ थाप्चेत तामाङ र छेवाङ लामु तामाङ होइनन् भन्ने मूल रिट निवेदन जिकिर देखिन्छ । निवेदकहरूउपर लोग्ने स्वास्नी भनी अभियोगपत्र दायर भएको छ । रिट निवेदनबाट पनि निजहरू पतिपत्नी भएकोमा स्वीकार गरेका छन् । जाहेरवाली छेवी तामाङले निज प्रतिवादीहरू आफ्नो देवर देउरानी हुन, बाबु ससुराको नाम कोठे तामाङ भनी ज्यान मार्ने उद्योग मुद्दामा सजाय पाएका अरू होइनन् यीनै प्रतिवादीहरू हुन् भनी लिखित जवाफमा उल्लेख गरेको देखिन्छ । कोठे तामाङको छोरा बुहारी आफूहरू नभएको भन्न रिट निवेदकहरूले सकेको छैनन् । ज्यान मार्ने उद्योग मुद्दामा उल्लेख गरिएको वतन र निवेदकहरूको वतन मिलेको छ । नागरिकतामा आफूहरूको नाम पासाङ थावचेत तामाङ र छेवाङ लामु तामाङनी भएकोले हुबहु नाम नमिलेको आधार देखाई रिट निवेदकहरूको प्रस्तुत रिट निवेदन परेको देखिन्छ । नागरिकतामा लेखिएको नाम र चलन चल्तीमा बोलाउने नाम फरक हुन सक्छ । नागरिकतामा लेखिएको र अभियोगपत्रमा उल्लेख नाममा सामान्य फरक मात्र परेकै आधारमा अन्य प्रमाणहरूबाट ज्यान मार्ने उद्योग मुद्दामा सजाय पाएका व्यक्तिहरू यीनै प्रतिवादीहरू हुन भनी स्पष्ट र निर्विवाद रूपमा पुष्टि भइरहेको अवस्थामा रिट निवेदन जिकिर र निजहरूको तर्फबाट उपस्थित विद्वान् कानून व्यवसायीहरूको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः छेवी तामाङको जाहेरीले वादी नेपाल सरकार प्रतिवादीहरू पासाङ थाक्चुङ तामाङ र छेसाङ तामाङ भएको ज्यानमार्ने उद्योग मुद्दामा यी प्रतिवादीहरूलाई सुरु सिन्धुपाल्चोक जिल्ला अदालतबाट मिति २०७२।२।२६ जनही ५(पाँच) वर्ष कैद सजाय हुने ठहर्‍याई अन्तिम भई सो फैसलाको कार्यान्वयनको क्रममा पक्राउ गरी थुनामा राखेको देखिँदा गैरकानूनी थुनामा राखिएको भन्ने रिट निवेदकको दाबी पुग्न सक्ने अवस्था नदेखिँदा

मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्नुपर्ने देखिएन। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: उदविर नेपाली

कम्प्युटर: सबिना अधिकारी

इति संवत् २०७३ साल असोज १३ गते रोज ५ शुभम्।

- यसै लगाउको ०७२-WO-११७८, उत्प्रेषण, *पासाङ थाबचेत तामाङसमेत वि. सिन्धुपाल्चोक जिल्ला अदालत सिन्धुपाल्चोक चौतारासमेत* भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ।

२

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे,** ०६९-CR-०४०८, ०६९-CR-०६३०, र ०६९-CR-०६३१, कर्तव्य ज्यान, *नेपाल सरकार वि. सन्तबहादुर बस्नेतसमेत, दालबहादुर अर्याल वि. नेपाल सरकार* र *सन्तबहादुर बस्नेत वि. नेपाल सरकार*

प्रतिवादी बिलबहादुर अर्यालले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष बयान गर्दा आफूले रकम लिएको तर वारदातमा संलग्न नभएको भनी बयान गरेको पाइन्छ । यी प्रतिवादी वारदातस्थलमा गएको र मृतकलाई कर्तव्य गरी मार्नमा यिनकोसमेत संलग्नता थियो भनी वादी पक्षले स्वतन्त्र र वस्तुनिष्ठ प्रमाणद्वारा पुष्टि गर्न सकेको अवस्था देखिँदैन। फौजदारी मुद्दामा दाबी प्रमाणित गर्ने प्रमाणको भार वादी पक्षमा रहने भनी प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ ले समेत व्यवस्था गरेको देखिन्छ। तसर्थ निज प्रतिवादीलाई सफाइ दिने गरी भएको पुनरावेदन अदालतको फैसलालाई अन्यथा मान्न नमिल्ने।

रू.३,००,०००।- (तीन लाख) चोरीको बिगो कायम गर्नुपर्नेमा रू.१ लाख मात्र कायम गरेको सुरूको फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालतको फैसला नमिलेको भन्ने वादी पक्षको पुनरावेदन जिकिरतर्फ विचार गर्दा, अदालतमा साबित हुने प्रतिवादी साइला भन्ने दालबहादुरले मृतकको साथमा भएको रू.१ लाख चोरी गरेको भनी बयान गरेको, मृतकबाट चोरी गरी लिएको रूपैयाँ प्रतिवादी मनु मल्ललाई लुकाउन दिएको र सो रूपैयाँ बाँडफाँड गर्दासमेत रू.१ लाखमात्र रहेको भन्ने प्रतिवादीहरूको बयानबाट देखिएको छ । रू.३ लाख मृतकसँग साथमा रहेको र रू. ३ लाख रूपैयाँ नै चोरी भएको भन्ने तथ्य मिसिल संलग्न प्रमाणबाट प्रमाणित हुन नसकेको अवस्थामा केवल जाहेरी पोलकै आधारमा अभियोग पत्रमा दाबी लिएको बिगो कायम हुन सक्ने अवस्था देखिन नआएकोले सुरू अदालतले चोरीको बिगो रू. १ लाख कामय गरेको फैसलालाई सदर गरेको पुनरावेदन अदालतको फैसलालाई अन्यथा मान्न मिल्ने नदेखिने।

प्रस्तुत वारदातमा यी प्रतिवादी मनु मल्ल प्रतिवादी सन्तबहादुर बस्नेत र साइला भन्ने दालबहादुर अर्यालका साथमा मृतकको घरसम्म गएको, निज सन्तबहादुर र दालबहादुर मृतकको कोठामा प्रवेश गरेकोमा यी प्रतिवादी मनु मल्ल बाहिर बसेको भित्र गएका प्रतिवादीहरूले मृतकलाई कुटपिट गरी चोरी गरी ल्याएको रूपैयाँ यिनै प्रतिवादीलाई राख्न दिएको र निजले राखेको सो रूपैयाँ आपसमा बाँडी लिएको तथ्य अनुसन्धानमा भएको बयानमा स्वीकार गरेको र अदालतमा समेत आफूले पाएको रू.३५,०००।- मध्ये बाँकी रू.२०,०००।- आफूबाट बरामद भएको तथ्य स्वीकार गरेको देखिन्छ। यसरी यी प्रतिवादी सन्तबहादुर बस्नेतसमेतको मत सल्लाहमा पसी मृतकको घरसम्मसँगै गई प्रतिवादी सन्तबहादुर र दालबहादुरले मृतकलाई मारी ल्याएको रूपैयाँ लिई लुकाई पछि आपसमा बाँडी लिएकोले मृतकको ज्यान मार्ने कुराको षड्यन्त्रमा सरिक रहेको भन्ने देखिएको

छ। अर्कोतर्फ यी प्रतिवादी मनु मल्ललाई सुरू भक्तपुर जिल्ला अदालतले मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १६ नं.को कसुरदार ठहर गरी ८ वर्ष कैद गरेको फैसलाउपर पुनरावेदन नै नगरी कसुर स्वीकार गरी बसेकोसमेतबाट निजले दाबीको कसुर गरेको प्रमाणित हुन आएको छ। यसरी उल्लिखित ज्यानसम्बन्धीको १६ नं. कसुर स्थापित भएपछि सो ऐनले व्यवस्था गरेको १० वर्षदेखि १५ वर्षसम्म कैदको सजाय हुने कानूनी व्यवस्था रहेकोमा न्यूनतम सजाय गर्दा पनि १० वर्ष कैद हुने देखिन्छ । निज प्रतिवादीलाई कैद वर्ष ८ मात्र गर्ने गरेको सुरू फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालतको फैसला सो हदसम्म मिलेको देखिन नआउने।

पुनरावेदक प्रतिवादी दालबहादुर अर्याललाई जन्मकैदको सजाय गर्दा चर्को पर्ने देखी मुलुकी ऐन, अ.बं. १८८ नं. बमोजिम १६ वर्ष कैद हुने गरी सुरू भक्तपुर जिल्ला अदालतले व्यक्त गरेको रायलाई पुनरावेदन अदालत पाटनले समर्थन गरेको मिलेको छैन भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरका सम्बन्धमा विचार गर्दा, निज प्रतिवादी दालबहादुर अर्यालले घटना विवरणलाई अधिकारप्राप्त अधिकारी र अदालतसमक्ष बयान गर्दासमेत यथार्थ कुरा लेखाई न्याय सम्पादन कार्यमा सहयोग गरेको देखिन्छ । अदालतमा आई सत्य साँचो कुरा बोल्ने प्रतिवादी र आफूले गरेको अपराधलाई लुकाई झुट्टो व्यहोरा लेखाउने प्रतिवादीलाई समानस्तरमा राख्ने हो भने साँचो बोली अदालतलाई न्याय सम्पादन गर्नमा सहयोग गरेको कार्यको कुनै अर्थ रहन नसक्ने हुन्छ । मुलुकी ऐन, अ.बं. १८८ नं.को व्यवस्था न्यायकर्ताको विवेकले प्रयोग हुने व्यवस्था हो। तल्लो तहका अदालतले उक्त नं. बमोजिम व्यक्त गरेको राय स्वयम्मा अन्तिम नभई यस अदालतबाट समर्थन भएमा मात्र क्रियाशील हुन्छ । त्यसरी तल्लो तहका अदालतले व्यक्त गरेको राय पुनरावेदनको विषय हुनसक्ने नदेखिने प्रस्तुत वारदातको सम्बन्धमा प्रतिवादी साइलाभन्ने दालबहादुर अर्यालले आफूले गरेको कसुर स्वीकार गरी वारदातको विवरण खुलस्त गरी सो वारदातमा संलग्न भएका अन्य प्रतिवादीलाई समेत सजायको दायरामा ल्याउन सहयोग गरेको आधारमा निजलाई सुरू अदालतले कैद वर्ष १६ हुन राय व्यक्त गरेको र पुनरावेदन अदालतबाट सो राय समर्थन भएको र निजलाई सोही रायबमोजिम सजाय गर्दा पनि न्यायको मकसद पूरा हुन जाने हुँदा मुलुकी ऐन, अ.बं. १८८ नं. बमोजिम कैद १६ वर्ष हुने गरी जाहेर गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको उक्त राय मनासिब देखिन आयो। वादी पक्षबाट अ.बं. १८८ नं. बमोजिम व्यक्त भएको रायका सम्बन्धमा लिएको पुनरावेदन जिकिर कानूनसम्मत देखिन नआउने।

उल्लिखित विवेचित प्रमाण आधारबाट प्रतिवादी मनु मल्ललाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १६ नं. बमोजिम कैद वर्ष ८ गर्ने गरेको सुरू भक्तपुर जिल्ला अदालतको फैसला सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको फैसला सो हदसम्म नमिलेकोले सो फैसला केही उल्टी भई निज प्रतिवादी मनु मल्ललाई उक्त ज्यानसम्बन्धीको १६ नं. बमोजिम कैद वर्ष दश (१०) हुने ठहर्छ। अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउँ भन्ने पुनरावेदक प्रतिवादी सन्तबहादुर बस्नेत र साइला भन्ने दालबहादुर अर्यालको, चोरीको बिगो रू. ३ लाख कायम गर्नुपर्नेमा रू.१ लाख ठहर गरेको र प्रतिवादी साइला भन्ने दालबहादुर अर्यालका हकमा कम सजाय राय व्यक्त गरेको मिलेन भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर सो हदसम्म पुग्न नसक्ने।

इजलास अधिकृतः यज्ञप्रसाद भट्टराई

इति संवत् २०७३ साल पुस ४ गते रोज २ शुभम्।

३

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की,** ०७२-WO-१०६४, उत्प्रेषण, *सपना चौहान रोक्का वि. गोपाल राज रोक्कासमेत*

मुलुकी ऐन, अंशबन्डाको २८ नं मा अंशबन्डा गर्दा असल कमसल मिलाई दिने लिनेका मन्जुरी भएकोमा मन्जुरीबमोजिम र मन्जुरी नभएकोमा गोला राखी बन्डा गरिदिनु पर्छ भन्ने व्यवस्था छ ।सो कानूनी ब्यबस्थाअनुसार दुवैपक्ष मन्जुरी भए सोहीबमोजिम र मन्जुरी नभए गोला हाली बन्डा गरिदिनु पर्ने व्यवस्था भएकोमा सो कानूनी व्यवस्थाको त्रुटि गरी बन्डा छुट्याइयो भन्न रिट निवेदीकाले सकेको अवस्था छैन । कुनै एक वा दुई ठाउँबाट आफूले बन्डा छुट्याई पाउनु पर्ने रिट निवेदन जिकिर भएकोमा सो कुरा दुई पक्षबीच मन्जुर हुँदाका अवस्थामासम्म हुने हुन्छ । मंजुर नभएको अवस्थामा गोला राखी बन्डा छुट्याउनु पर्ने स्पष्ट कानूनी व्यवस्था प्रतिकूलको रिट निवेदन जिकिर स्वीकारयोग्य देखिएन । यसरी कानूनबमोजिम भएको बन्डा मुचुल्काबाट रिट निवेदन जिकिरअनुसार कुनै संवैधानिक वा कानूनी हक हनन भएको मान्न नमिल्ने ।

अत: माथि विवेचित आधार र कारणसमेतबाट निवेदकले के कुन कारणले बन्डा मुचुल्का बेरित भयो भन्न नसकेको र मुलुकी ऐन, अ.बं. १७ नंबमोजिम निर्णय भइसकेको तथा निजले दुई तहको कानूनी उपचारको बाटोसमेत अवलम्वन गरिसकेको अवस्थामा निवेदकको जिकिरबमोजिम आदेश जारी गर्नुपर्ने देखिएन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृतः यज्ञप्रसाद भट्टराई

इति संवत् २०७३ साल मङ्सिर ९ गते रोज ५ शुभम् ।

४

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल,** ०७०-CR-१४५८, ०७०-CR-१४५९ र ०७०-CR-१५६०, कर्तव्य ज्यान, *हर्कध्वज लिम्बूसमेत वि. नेपाल सरकार, मनराज लिम्बू वि. नेपाल सरकार र नेपाल सरकार वि. हर्कध्वज लिम्बूसमेत*

प्रस्तुत मुद्दाको सन्दर्भमा हेर्दा प्रतिवादी हर्कध्वज लिम्बूले आफू घटनास्थलमा जाँदा आफ्नो साथमा भिरेको खुकुरी साथैमा रहेको भनी सुरू अदालत र अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष गरेको बयानबाट देखिन्छ । त्यसैगरी जाहेरवाला सन्तोष सम्बाहाम्फे लिम्बूले सुरू अदालतमा बयान गर्दा हर्कध्वजले पनि लामो तरवारजस्तै छुरी बोकेको थियो भनी भनेको अवस्था देखिन्छ । त्यसैगरी अन्य प्रतिवादीहरूसमेत घटनास्थलमा गई ज्यान मार्नमा मतलवमा पसेको तथा मृतकको ज्यान मार्ने कार्यको लागि उक्साहट गरेको मिसिल संलग्न प्रमाणहरूबाट देखिन्छ । यी प्रतिवादीहरूमध्ये प्रतिवादी हर्कध्वज खुकुरीका साथ वारदातस्थलमा गएको र रहेकोले हर्कध्वजको त्यस किसिमको उपस्थितिले वारदातलाई बिनाहतियार जाने र घटनास्थलमा रहने अरू प्रतिवादीहरूको उपस्थिति भन्दा थप खतरापूर्ण बनाएको देखिन्छ । खुकुरी लाने काम राम्रो नियतले गरेको भन्ने कुनै पनि तर्कको लागि स्थान रहँदैन । जोखिमी हतियारले अपराधलाई थप गम्भीर बनाउने कुरालाई फौजदारी न्यायले मानी त्यसलाई आफैँमा कसुर मानेको देखिन्छ । यसर्थ प्रतिवादी हर्कध्वज लिम्बू मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १७(१) नं. भित्रका कसुरदार देखियो । निजबाहेक अन्य प्रतिवादी संजिव लिम्बू, लिलन कुमार राई र चन्द्रकुशल भन्ने पदम राईले मृतकलाई चोट छाडेको भन्ने देखिँदैन । तर निजहरू मनराजसँग साथै गई मृतक तेजबहादुरलाई मार्ने कार्यमा घेरा दिने, बाटो छेक्ने वा भाग्न उम्कन नपाउनेसमेत गैह्र कार्य गरी मार्न संयोग पारिदिएको अवस्थासम्म मिसिलसंलग्न

प्रमाणबाट देखिँदा निज प्रतिवादीहरूका हकमा ज्यानसम्वन्धिको १७(२) को ब्यबस्था नै आकृष्ट हुने।

हर्कध्वजसमेतका प्रतिवादीहरूले आफू लगायत संजिव, लिलन, पदम त्यहाँ पुग्दा मनराजले तेजबहादुरलाई छुरीले हानिसकेको रहेछ भनी अदालतमा बयान गरेको देखिन्छ । प्रतिवादी मनराज र हर्कध्वजको मौकालगायतको बयानमा आफूले मृतक र अमृतलाई मार्ने मनसाय राखेको र त्यसमा अरू प्रतिवादीहरू सहमत भएको भन्ने कुरा उल्लेख भएको देखिँदैन । आराको कुरामा प्रतिवादी मनराजले अमृतलाई धकेलेको तथा अमृतले प्रतिवादी मनराजलाई गाली गरेको कुरा प्रतिवादी संजिवले मनराजलाई सुनाएको र सो सुनेपछि प्रतिवादी मनराजले छुरी लिई निज अमृतको घरमा हिँडेको र अमृतसँग वादविवाद गर्दागर्दै मृतक आएको र निज मृतकले प्रतिवादी मनराजको गलबन्दी समाउदा प्रतिवादी मनराजले कोखामा छुरी हानेको र निजको तत्काल मृत्यु भएको कुरामा प्रतिवादीहरूको कथन समान देखिएको छ । त्यो हदसम्मको तथ्यलाई प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ बमोजिम वादीले प्रमाणित गरेको माने पनि मृतकसँग प्रतिवादीहरूको पूर्वरिसइवी रहेको, मार्नुपर्नेसम्मको पूर्व योजना वा सल्लाह गरी गएको वा सो कुराको जानकारी अन्य प्रतिवादीहरूले पाएको वा प्रतिवादी मनराजबाहेकका अरू प्रतिवादीले मृतकको ज्यान लिने नियत एक्लै वा सामुहिक रूपमा लिई वारदातस्थलमा गएकोलगायतका मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(४) नं. नै आकर्षित हुने हदसम्मको कार्य गरेको भन्ने कुरा प्रमाणित हुन सकेको अवस्था देखिँदैन । फौजदारी विधिशास्त्रमा मनसायप्रेरित हत्या हुन प्रतिवादीले मार्ने मनसाय राखेको हुनैपर्ने र मार्नुपर्ने खास उद्देश्य भई त्यसको लागि तयारी र योजनाजस्ता कुराहरू रहनुपर्ने नै हुन आउने।

अतः माथि विवेचित तथ्य, प्रमाण, कानूनसमेतबाट प्रतिवादी मनराज सुब्बा लिम्बूलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं. को कसुर अपराधमा सोही महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद र अन्य प्रतिवादीहरू चन्द्रकुशल भन्ने पदम राई, हर्कध्वज लिम्बू, मिलन भन्ने लिलनकुमार राई, संजिव लिम्बू काम्वाङ्गसमेतलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं.को कसुर अपराधमा सोही महलको १३(४) नं. बमोजिम सजाय हुने र प्रतिवादीमध्येका संजिव लिम्बू (काम्वाङ्ग) को हकमा बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०४८ को दफा ११(३) बमोजिम निजलाई लागेको सजायको आधा कैद वर्ष १० हुने ठहऱ्याई इलाम जिल्ला अदालतबाट भएको मिति २०७०।२।२० को फैसलामा प्रतिवादी मनराज सुब्बा लिम्बूको हकमा मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद गर्ने गरी भएको फैसला सदर र अन्य प्रतिवादीहरूको हकमा सुरू फैसला केही उल्टी गरी प्रतिवादी हर्कध्वज लिम्बूको हकमा ऐ. १७(१) नं. बमोजिम १० वर्ष कैद, मिलन भन्ने लिलनकुमार राई, चन्द्रकुशल भन्ने पदम राईका हकमा ऐ. १७(२) नं. बमोजिम ५ (पाँच) वर्ष कैद र संजिव लिम्बू काम्वाङ्गको हकमा ऐ. १७(२) नं. बमोजिम ५ वर्ष कैद हुनेमा वालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०४८ को दफा ११(३) बमोजिम आधा २ वर्ष ६ महिना कैद सजाय हुने ठहऱ्याई भएको पुनरावेदन अदालत इलामको मिति २०७०।११।१२ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । पुनरावेदक प्रतिवादीहरू तथा पुनरावेदक वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने।

इजलास अधिकृतः यज्ञप्रसाद भट्टराई

इति संवत् २०७३ साल मङ्सिर १० गते रोज ६ शुभम्।

## इजलास नं. १०

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत,** ०६६-WO-११२५, उत्प्रेषण, *विपिन हाडा वि. मालपोत कार्यालय, भरतपु चितवनसमेत*

विपक्षी नेपाल एस.वि.आई. बैंकले सहवित्तीयकरणमा निवेदक हिमालयन बैंकलाई अगुवा बैंकको रूपमा स्वीकार गरी सम्झौता गरेको देखिएको, ऋणीको धितोमा रहेको स्थिर सम्पत्तिमा प्रथमाधिकार निवेदक बैंकको हुने सर्त स्वीकार गरेको देखिएकोमा ऋणी कम्पनीले कर्जा चुक्ता नगरेकाले धितोमा राखिएको स्थिर सम्पत्ति सहवित्तीयकरण सम्झौताअनुसार निवेदक बैंकले २०६३ सालमा नै आफूले सकार गरी नामसारी दर्ताको लागि विपक्षी मालपोत कार्यालयमा पत्राचार गरेको देखिएको छ । विपक्षी नेपाल एस.वि. आई. बैंकको तर्फबाट निवेदक बैंकले धितोमा राखिएको स्थिर सम्पत्ति सकार गरिलिए तर्फ कारवाही चलाई बदर गराएको अवस्था देखिँदैन । नेपाल एस.वि.आई. बैंकले रोक्का पत्र लेख्नु अघि नै रोक्का रहिरहेको धितो सहवित्तीयकरण सम्झौताबमोजिम प्रथमाधिकार प्राप्त निवेदक बैंकले आफ्नो नाउँमा सकार गरेको कारवाही अन्यथा नभएसम्म सकार गर्ने निवेदक बैंकको नाउँमा नामसारी दर्ता गरिलिन पाउने नै देखिने ।

तसर्थ प्रथमाधिकार प्राप्त निवेदक हिमालयन बैंकसमेतबाट रोक्का रहेको चितवन जिल्ला देवौली गा.वि.स. वडा नं. १ क स्थित कि.नं. ९७८, ९८१, ९८३, ९७५ र ९८५ को घरजग्गा र सोमा जडित मिल मेसिनरी नेपाल एस.वि.आई. बैंकको मिति २०६१।६।५ र मिति २०६३।३।१५ को पत्रहरूबाट पुन: रोक्का राख्ने कार्य सहवित्तीयकरण सम्झौता एवं यस अदालतबाट कायम भएको सिद्धान्तसमेतको विपरीत देखिएकोले विपक्षी नेपाल एस.वि.आई. बैंकको मिति २०६१।०६।०५ र मिति २०६२।०३।१५ को पत्रहरू उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरिदिएको छ । साथै निवेदक बैंकले सकार गरेको उल्लिखित घरजग्गा मेसिनरीसमेत निवेदक बैंकका नाममा दाखेल खारेज नामसारी गरिदिनु भनी विपक्षी मालपोत कार्यालय चितवनका नाउँमा परमादेशको आदेशसमेत जारी हुने ।

इजलास अधिकृत: विष्णुप्रसाद आचार्य

इति संवत् २०७४ साल वैशाख १९ गते रोज ३ शुभम् ।

## इजलास नं. ११

१

**मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे र मा.न्या. श्री मीरा खड्का,** ०६७-CR-०२३९, आयकर (आ.व.०५८।५९), *ठूला करदाता कार्यालय, हरिहरभवन वि. महेन्द्रबाबु श्रेष्ठ*

याक एण्ड यति होटल लि.ले तारा गाउँ रिजेन्सी होटलमा सेयर लगानी गरेको, सेयर नपरेको कारणबाट रकम फिर्ता आएको देखिन्छ । बैङ्कबाट ऋण लिई कारोवार गर्ने व्यापारिक प्रतिष्ठानले अर्को निकायको सेयरमा लगानी गर्न नपाउने भन्ने कानूनी व्यवस्था देखिँदैन । साथै सेयर खरिद गर्ने उद्देश्यले भुक्तानी गरेको रकम सेयर प्राप्त हुन नसकेको कारणले फिर्ता प्राप्त भएको अवस्थामा त्यस्तो अवधिको ब्याजको हिसाव गरी आयतर्फ समावेश गर्ने गरेको कार्य आयकर ऐन, २०५८ को दफा १४(१) अनुकूल नदेखिँदा सो रकम आयतर्फ समावेश गर्न नमिल्ने गरी भएको राजश्व न्यायाधिकरण काठमाडौंको फैसला परिवर्तन गरी रहन परेन । तसर्थ राजश्व न्यायाधिकरण काठमाडौंबाट मिति

२०६५।३।३० मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: भोजराज रेग्मी

इति संवत् २०७३ साल फागुन ११ गते रोज ४ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे र मा.न्या. श्री मीरा खड्का,** ०६७-CR-०२३२, आयकर (आ.व.०५९।६०), ठूला करदाता कार्यालय, *हरिहरभवन वि. महेन्द्रबाबु श्रेष्ठ*

भवन निर्माणमा यथार्थमा भुक्तानी भएको रकम नै सम्पत्तिको मूल्य देखाई कर दाताले लेखा अभिलेख राखेको तथ्यलाई कर अधिकृतले समेत स्वीकार गरेको देखिँदा करदाताले भवन निर्माणमा ढिलो कार्य गरेबापत निर्माणकर्तालाई कम भुक्तानी गरेको कारणले फरक परेको रकमसमेत आयमा समावेश गर्नु पर्छ भन्ने कुरा आयकर ऐन, २०५८ को दफा ७(२)(ग) अनुरूप नदेखिने।

होटल याक एण्ड यतिले तारा गाउँ रिजेन्सी होटलको सेयरमा लगानी गर्ने उद्देश्यले उक्त कम्पनीलाई रकम दिएको र सो कम्पनिबाट सेयर स्वीकृतीपत्र प्राप्त भइसकेकोले होटलले आय आर्जन गर्ने मनसायले नै उक्त कार्यमा रकम प्रयोग भएको देखिएकोले ब्याज खर्च रकम आयमा समावेश गर्न मिल्ने हुँदैन। तसर्थ राजश्व न्यायाधिकरण काठमाडौंबाट मिति २०६५।३।३० मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: भोजराज रेग्मी

कम्प्युटर: यामप्रसाद रेग्मी

इति संवत् २०७३ साल फागुन ११ गते रोज ४ शुभम्।

३

**मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे र मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ,** ०७०-CI-००९८, अंश दर्ता, *काशी राय यादव वि. पलधारी राय यादवसमेत*

अंशियारहरूमध्ये एकले अंश दर्ता मुद्दा दायर गर्दा प्रतिवादी वनाइएका अन्य अंशियारहरू अलग अलग रहेको भन्ने प्रमाण जिकिरबाट अन्यथा प्रमाणित नभएसम्म प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ६(क) को व्यवस्थाबमोजिम सगोलमै रहेको मान्नुपर्ने हुन्छ। यस स्थितिमा मिति २०६६।७।१ मा अर्कै पक्षको वादी दाबीबमोजिम भएको फैसलामा आफ्नो अंशहकसमेत बुझी लिने यी पुनरावेदक प्रतिवादी र प्रत्यर्थी वादीहरू एकासगोलमै रहे बसेका थिए भनी मान्नुपर्ने देखिने।

मिति २०६४।८।२७ मा पलधारी राय यादव र होतीलाल राय यादवबीच लेनदेन भएको र तत्पश्चात् अंश भई मिति २०६५।११।२७ मा लेनदेन मुद्दा दायर गरेको देखिन्छ। मिति २०६६।७।१ भन्दा अघि पेस भएको तायदाती फाराममा उल्लेख भएबमोजिमको सम्पत्तिमा अंश भाग लिने पुनरावेक प्रतिवादीसमेतका अंशियारहरूले आआफ्नो अंश भागबन्डा गरी लिनु दिनु गरेको अवस्थामा उक्त ऋण लिँदा यी अंशियारहरू सगोलमै रहे भएको देखिँदा सगोलमा रहेका वावुले लिएको ऋण अंश खाने छोराहरूलाई बराबर वाँडीदिनु न्यायको रोहमा मनासिब नै देखिने।

तसर्थ उल्लिखित कानून, आधार र कारणबाट मिति २०६४।८।२७ मा वावु पलधारी राय यादवले लिएको ऋण सगोलमै देखिएका छोराहरूसमेत काशी राय यादव, मदन राय यादव र ऋणि पलधारी राय यादवसमेतका हकमा भाग शान्तिले ऋण भाग लगाई तिर्न बुझाउन पर्ने गरी पुनरावेदन अदालत हेटौंडाबाट मिति २०६९।१०।८ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: नगेन्द्रकेशरी पोखरेल

कम्प्युटर: यामप्रसाद रेग्मी

इति संवत् २०७३ साल माघ १९ गते रोज ४ शुभम्।

४

**मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे र मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ,** ०७०-CI-१०८५, लेनदेन, *काशी रायजयनारायण यादव वि. अशोककुमार साहु सुडी*

लिखत प्रमाणअनुसार भएको लेनदेन व्यबहारको रकम तिर्ने बुझाउने प्रक्रिया पूरा गरिसकेको भन्ने स्पष्ट प्रमाण प्रतिवादीले दिन सकेको छैन । लिखत प्रमाणलाई प्रमाण ऐन, २०३१ ले प्रमाण ग्राह्य गर्नुपर्ने हुन्छ । कर्जा लिँदा सहिछाप गरी तमसुक तयार भएकोमा सो रकम तिरी सकेको छु भनी मौखिक भनाइलाई प्रमाण ऐन, २०३१ तथा लेनदेन व्यवहारको ५ नं को कानूनी व्यवस्थाले मान्यता दिन नमिल्ने ।

तसर्थ लिखतबमोजिमको साँवा ब्याज वादीलाई प्रतिवादीवाट भराई दिने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत राजविराजको मिति २०६६।२।२१ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: भोजराज रेग्मी

कम्प्युटर: यामप्रसाद रेग्मी

इति संवत् २०७३ साल फागुन १० गते रोज ३ शुभम् ।

५

**मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे र मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ,** ०७०-CR-०६६२, जबरजस्ती चोरी, *नेपाल सरकार वि. हिरामणी घर्तीमगर*

प्रतिवादी हिरामणी घर्ती मगरको साथबाट ट्रकको चाबी ब्लू बुक रेडसेल मोबाइल बरामद भएको छ । ट्रकको बा १ क ७५५० नं. परिवर्तन गरी भे.१ख ४३५६ बनाएको अवस्थामा ट्रक बरामद भएको छ । बरामदी मुचुल्का बेरीतको छ भन्ने प्रतिवादीहरूले प्रश्न उठाएको पनि छैन । बरामदी मुचुल्का मुलुकी ऐन, अ.बं. १७२ नं. को प्रक्रिया पूरा गरी तयार भएकोमा सन्देह देखिँदैन । मौकाको साबिती बयानलाई बरामदी मुचुल्काले पुष्टि गरिरहेको अवस्था छ । यी प्रतिवादीहरू पक्राउ परेको स्थान दाङ घोराहीबाटै ट्रकको नम्बर परिवर्तन गरी राखेको अवस्थामा ट्रक भेटिएको हुँदा यी प्रतिवादीहरूले चोरी गरी लिन खाने मनसायबाट नै गाडीको नम्बर परिवर्तन गरेको भन्ने पुष्टि भइरहेको अवस्था छ । केवल अदालतमा इन्कारी बयान साक्षीद्वारा पुष्टि गरेकै आधारमा चोरीका सामान प्रतिवादीहरूबाट बरामद भएको प्रत्यक्ष प्रमाणलाई नजरअन्दाज गरी प्रतिवादीहरूलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिने गरी भएको फैसला मिलेको नदेखिने ।

अतः उल्लिखित आधार कारणहरूबाट प्रतिवादीहरू हिरामणी घर्ती मगर, अम्बर बुढा मगर र तुनिल भन्ने टुनिल बुढा मगरलाई सुरू नवलपरासी जिल्ला अदालतको फैसलाले सफाइ दिने गरी भएको फैसलालाई सदर गरेको पुनरावेदन अदालत बुटवलको मिति २०६९।१२।२७ को फैसला उल्टी भई प्रतिवादीहरूले ट्रकसमेत कुल बिगो रू.१३२८५००।– बराबरको सम्पत्ति चोरी गरेको ठहरेकोले मुलुकी ऐन, चोरीको १ नं. विपरीतको कसुर गरेको पुष्टि भएकोले निज प्रतिवादीहरूलाई चोरीको १२ नं. बमोजिम बिगोबमोजिम जरिवाना र जनही १ महिना कैद हुने ।

इजलास अधिकृत: जीवनकुमार भण्डारी

कम्प्युटर: यामप्रसाद रेग्मी

इति संवत् २०७३ साल फागुन २ गते रोज २ शुभम् ।

६

**मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे र मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ,** ०७८६ र ०७०- CR-१३३३, अपहरण तथा शरीर बन्धक, *नेपाल सरकार वि. सत्यनारायण चौधरी र सत्यनारायण चौधरी वि. नेपाल सरकार*

प्रतिवादीमध्येका महमद मियाँको श्रीमती सरीदा खातुनले निजको घरमा बच्चालाललाई देखि

निजलाई सोध्दा मलाई सत्यनारायण चौधरी र महमद मियाले यहाँ ल्याई राखेका हुन,सत्य नारायण चौधरीले खाना ल्याइदिएको हुँदा खाँदैछु भन्दा सोही समयमा सत्यनारायण र मोहमद मियाँ आईपुगेँ भनी गरेको मौकाको कागज, प्रतिवादी सत्य नारायण चौधरीले बच्चालालसँग लिनुपर्ने रकम नदिएकोले बच्चालाल साईकल चढी कञ्चनपुरतिरबाट धोद्राहातिर जाँदै गरेको देखी बोलाउँदा नबोली सरासर जान लागेकोले कलिम मियाँको सहयोग लिई निजको मोटरसाईकलबाट केही परसम्म पिछा गरी समाती चोकमा ल्याई मोहमद मियाँलाई जिम्मा दिएको हुँ भनी अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष गरेको कागज, जाहेरवाला सुखनन्दन चौधरीले सत्यनारायणसँग बाबु बच्चालालको लेनदेनको विवादका कारण निज र विन्देश्वर चौधरी र महमद मियाँसमेत भई अपहरण गरेको भन्ने सत्यनारायणको मुखबाट थाहा पाएको हो भनी अदालतमा गरेको बकपत्र, प्रतिवादी सत्य नारायण चौधरीको घरबाट पीडितको साइकल बरामद भएको बरामदी मुचुल्कासमेतबाट प्रतिवादी सत्य नारायण चौधरी कै जरियाबाट कसुर अपराध भएको भन्ने देखिँदा प्रतिवादी विन्देश्वर चौधरी, कलिम मियाँ र मुखीलाल चौधरीलाई कसुरबाट सफाइ दिने ठहरी भएको फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत राजविराजको मिति २०६९।३।११ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

प्रतिवादी सत्य नारायण चौधरी र महमद मियाँको मिलेमतोबाट पीडित बच्चालाल चौधरीको अपहरण भएको देखिएकोले निजहरूलाई अपहरण तथा शरीर बन्धक लिनेको महलको १,२,३ नं. बमोजिमको कसुरमा सोही महलको ३ नं. बमोजिम जनही ८ वर्ष र ऐ.महलको ७ नं. बमोजिम जनही थप २ वर्ष कैद र रू.७५,०००।– जरिवाना गरेको पुनरावेदन अदालत राजविराजको मिति २०६९।३।११ को फैसला मिलेको भए पनि कसुर ठहर भएपछि पीडितलाई सोही महलको ७ नं. बमोजिम क्षतिपूर्ति भराइदिनु पर्नेमा क्षतिपूर्ति नभराई भएको फैसला मिलेको नहुँदा सो हदसम्म केही उल्टी भई प्रतिवादीहरूबाट पीडितलाई तजविजी क्षतिपूर्ति रू.१०,०००।– दश हजार भराइदिने ठहर्ने।

इजलास अधिकृत: जीवनकुमार भण्डारी

कम्प्युटर: सबिना अधिकारी

इति संवत् २०७३ साल फागुन ४ गते रोज ४ शुभम्।

## इजलास नं. १२

१

**मा.न्या.श्री मीरा खड्का र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा,** ०६७-CI-१६३५, दोहोरो दर्ता बदर / हक कायम, *सरोजकुमार श्रेष्ठ वि. नन्दबहादुर राना*

यिनै वादीले यिनै प्रतिवादीउपर यही कि.नं. ५५ को जग्गामा उखु लगाई खिचोला गरेकोले खिचोला मेटाई चलन चलाई पाउँ भनी दिएको खिचोला मुद्दामा वादी दाबी पुग्न नसक्ने ठहर्छ भनी कन्चनपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०६४।९।२४ मा फैसला भएको देखिन्छ। उक्त खिचोला मुद्दामा वादी दाबी नपुग्ने ठहरी मिति २०६४।९।२४ मा फैसला भएको भन्ने आधार लिई प्रस्तुत मुद्दामा पनि वादी दाबी नपुग्ने ठहऱ्याई सुरू कन्चनपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०६७।२।१९ मा फैसला भएको देखियो । यसबाट सुरू जिल्ला अदालतले सबुद प्रमाणहरूको मूल्याङ्कन तथा विवेचना गरी दोहोरो दर्ता भएको हो, होइन र दोहोरो दर्ता भएको भए उक्त दर्ता बदर भई वादीको हक कायम हुने हो, होइन? भन्ने प्रस्तुत मुद्दाको विवादित प्रश्नहरूको

न्यायिक निरूपण गरेको नदेखिने । न्याय प्रशासन ऐन, २०४८ को दफा १४(घ) ले तल्लो अदालतले मुद्दामा निर्णय गर्नुपर्ने प्रश्नहरू मध्ये केहीमा निर्णय गरी र केहीमा निर्णय नगरी फैसला गरेको रहेछ भने पनि सो बाँकी प्रश्नको निर्णय गरी मुद्दाको किनारा गर्नु भनी मिसिल तल्लो अदालतमा पठाउन सक्ने अधिकार पुनरावेदन सुन्ने अदालतलाई प्रदान गरेको पाइन्छ । यस दफा १४(घ) ले सुरू अदालतले निर्णय गर्नुपर्ने प्रश्नहरूमध्ये कुनै प्रश्नको निर्णय गरी कुनै प्रश्नको निर्णय नगरेको अवस्थामा पनि बाँकी प्रश्नको निर्णयको लागि पुनरावेदन अदालतले मिसिल सुरू अदालतमा पठाउन सक्ने व्यवस्था गरेबाट सुरू कन्चनपुर जिल्ला अदालतले प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादीले दोहोरो दर्ता गरेको हो, होइन र सो दर्ता बदर हुनुपर्ने हो, होइन भन्ने न्यायिक निर्णय गर्नुपर्ने प्रश्नहरूमा सबुद प्रमाण बुझी त्यसको मूल्याङ्कन तथा विवेचना गरी निर्णय गरेको नदेखिँदा सो आवश्यक प्रश्नहरूको निर्णयको लागि मिसिल सुरू जिल्ला अदालतमा पठाउन सक्ने नै देखिने।

तसर्थ कन्चनपुर जिल्ला अदालतबाट वादी दाबी नपुग्ने ठहर्‍याई मिति २०६७।२।१९ मा भएको फैसला बदर गरिदिएको छ। अब जे जो बुझ्नुपर्ने प्रमाण बुझी दोहोरो दर्ता बदर हुने नहुने विषयमा नै प्रस्तुत मुद्दामा मूल ठहर गर्नुपर्ने विषय हुँदा सो सम्बन्धमा प्रस्ट सबुद प्रमाणको मूल्याङ्कन गरी कानूनबमोजिम ठहर फैसला गर्न न्याय प्रशासन ऐन, २०४८ को दफा १४ को खण्ड (घ) बमोजिम मिसिल सुरू कन्चनपुर जिल्ला अदालतमा पठाइदिने ठहर्छ भनी पुनरावेदन अदालत महेन्द्रनगरबाट मिति २०६७।११।९ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा पुनरावेदक तथा निजतर्फका विद्वान् वरिष्ठ अधिवक्ताको बहस जिकिरअनुसार प्रत्यर्थी झिकाउनुपर्ने देखिएन । पुनरावेदन अदालत महेन्द्रनगरबाट भएको उक्त फैसला सदर हुने।

इजलास अधिकृत: शकुन्तला कार्की

कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७३ साल भदौ २७ गते रोज २ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री मीरा खड्का र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल,** ०६८-CR-०९८२, कर्तव्य ज्यान, *विनेश नायजु श्रेष्ठ वि. नेपाल सरकार*

घटना भएको समयमा वारदातस्थलमा मृतक र प्रतिवादीबाहेक अन्य व्यक्तिको उपस्थिति रहेको देखिँदैन। आफूले प्रेमविवाह गरी ल्याएको श्रीमती मरेँ भन्दै वान्ता गर्दै छट्पटिरहँदा प्रतिवादीले श्रीमतीको जीवन रक्षार्थ उपचारको कुनै प्रबन्ध नगरी बेफिक्री ढङ्गबाट खाटमा सुतिरहेको भन्ने तथ्य प्रतिवादीको बाबु लक्ष्मीबहादुर नाइजुको अदालतसमक्षको बकपत्रबाट देखिन आएको छ। मृतक आफैँले विषसेवन गरेको भएपनी श्रीमतीको बचाउको लागी उपचारको प्रबन्ध गर्नुपर्ने कर्तव्य प्रतिवादीको हो । तर सिकिस्त अवस्थामा रहेकी श्रीमतीको उपचारतर्फ बेवास्ता गरी श्रीमतीको मृत्यु भइसकेपछि लास बुझ्न मात्र प्रतिवादी अस्पताल गएको भन्ने मिसिलबाट देखिन्छ। मृत्युको मुखमा पुगेकी श्रीमतीको संवेदनशिल अवस्था लई बेवास्ता गरेको प्रतिवादीको व्यवहार, घटना घट्दाको अवस्था परिस्थितिबाट समेत मृतक आफैँले विष सेवन गरेको हो भनी निष्कर्षमा पुग्न सकिने नदेखिने।

प्रतिवादी आफैँले महानगरीय प्रहरी परिसर ललितपुरमा दिएको जाहेरी तथा अदालतमा गरेको बयानमा मृतक आफैँले विष सेवन गरेको हो भन्ने तथ्य उल्लेख गरेको पाइन्छ। यसैगरी मृतकका ससुरा लक्ष्मीबहादुर नाईजुले समेत मृतकले विष खाएको भनेकी थिईन भनी अदालतसमक्षको बकपत्रमा उल्लेख गरेको पाइन्छ । मृतकको शव परीक्षण प्रतिवेदनबाट

विष सेवन बाटै मृत्यु भएको भन्ने देखिएको छ । उक्त प्रतिवेदन व्यहोरालाई समर्थन गर्दै शव परीक्षण गर्ने डाक्टर इन्द्रप्रसाद पौडेलले अदालतसमक्ष उपस्थित भई बकपत्र गरेको देखिन्छ । मृतकको शरीरमा कुटपिटका चोट नीलडाम केही रहेको देखिँदैन । विष सेवनबाहेक अन्य कारणले मृत्यु भएको हो भन्न सकिने कुनै आधार मिसिलबाट देखिँदैन । यसरी प्रस्तुत वारदातलाई हेर्दा प्रतिवादीले नियोजितरूपमा श्रीमतीलाई मार्ने मनसायले रक्सीमा विषादी मिसाई घर ल्याएको र सोही विषादीयुक्त रक्सी सेवनको कारणबाटै मृतकको मृत्यु भएको भन्ने परिस्थितिजन्य प्रमाणसमेतबाट पुष्टि भइरहेको देखिँदा प्रतिवादीले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने भन्न नमिल्ने ।

माथि विवेचित आधार कारणबाट आफ्नो श्रीमती अस्मिता नायजुलाई मार्ने मनसायले योजनाबद्धरूपमा रक्सीमा विष मिसाई घरमा ल्याएकोमा सोही विषादीयुक्त रक्सी श्रीमतीले खाएको कारण उपचारको क्रममा मृत्यु भएको हो भनी प्रतिवादीले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष गरेको साबिती बयान मिसिल संलग्न किटानी जाहेरी दरखास्त, शव परीक्षण प्रतिवेदन, शव परीक्षण गर्ने चिकित्सकको बकपत्र, जाहेरवाला एव मौकामा बुझिएका मानिसहरूको बकपत्रसमेतका स्वतन्त्र प्रमाणबाट समर्थित हुन आएको देखिँदा प्रतिवादीले आरोपित कसुर गरेको तथ्य शङ्का रहित ढङ्गबाट पुष्टि हुन आउने ।

अतः प्रतिवादीलाई अभियोग मागदाबीबमोजिम मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(२) नं. बमोजिम सर्वश्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने भनी सुरू काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर हुने ठहऱ्याई मुलुकी ऐन, अ.बं. १८८ नं. बमोजिम प्रतिवादीलाई कैद वर्ष १० (दश) सजाय हुने गरी राय व्यक्त गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०६८।५।६ को फैसला मनासिब देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: सुरेशराज खनाल

कम्प्युटर: कृष्णमाया खतिवडा

इति संवत् २०७३ साल कात्तिक १० गते रोज ४ शुभम् ।

## इजलास नं. १३

१

**मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत,** ०६९-CR-०५८१ र ०६९-CR-०७६६, मानव बेचबिखन तथा ओसार पसार, *कमल राई वि. नेपाल सरकार र रामजी परियार वि. नेपाल सरकार*

पीडितहरूले किटानी जाहेरी र मौकाको बयानमा प्रतिवादीहरू कसुरदार हुन् भन्ने कुरालाई समर्थन गर्दै बयान गरी अदालतमा अनुपस्थित भएको अवस्थामा उक्त बयानलाई प्रमाणमा लिन सकिने नै देखियो । यसका साथै उक्त बयानलाई समर्थन हुने गरी प्रतिवादीहरूले पीडितलाई कपडा किनिदिने सर्त राखी नारायणघाटतर्फ लगी त्यहाँको लजमा राखेको कुरा स्वीकार गरी अदालतमा बयान गरेको स्वतन्त्र प्रमाणले समेत प्रतिवादीहरू कसुरदार हुन् भन्ने देखिएको अवस्थामा पीडितले अदालतमा आई बकपत्र नगरेको भन्ने आधारमा मात्र प्रतिवादीहरूले सजायबाट उन्मुक्ति पाउन सक्ने अवस्था नदेखिने ।

गोपाल भन्ने व्यक्ति पीडितहरूको आफ्नो दिदी भिनाजु नाताको पर्ने भए पीडितहरूलाई अगाडी देखि नै "कसैले सोधे दिदी भिनाजु नाताको पर्छन्" भनेर भन्नु भनी शङ्कास्पद तरीकाले सिकाउनु पर्ने कुनै त्यस्तो कारण देखिँदैन भने अर्कोतिर प्रतिवादीहरूले पीडितहरूलाई गोपाल भन्ने व्यक्तिको

घरमा नलगी होटलमा बास बस्न लगेको अवस्था देखिन्छ । पीडितहरूले निजहरूलाई प्रतिवादीहरूले ललाई फकाई बेचबिखन गर्ने उद्देश्य लिई गएको भन्ने पूर्ण विश्वास लाग्यो भनी अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष बयान गरेको अवस्था छ। निजहरूको उक्त बयान मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ६(२) बमोजिम अदालतबाट प्रमाणित भएको देखिने।

मौकामा बुझिएका सान्नानी परियारले अदालतमा आई बकपत्र गर्दा पीडितको जाहेरी व्यहोरालाई समर्थन गरी बकपत्र गरेको अवस्था देखिन्छ । त्यसका अतिरिक्त पीडितहरूलाई यी पुनरावेदक प्रतिवादीहरूले निजहरूको अभिभावकको सल्लाह र सहमतिमा लिई गएको भन्न सकेको कुरा पनि देखिएन । प्रमाणको भारको सम्वन्धमा मानव बेचबिखन तथा ओसार पसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ९ लाई हेर्दा "प्रचलित कानूनमा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि कुनै व्यक्तिलाई यस ऐनअन्तर्गतको कसुर गरेको अभियोग लागेमा सो कसुर आफूले गरेको छैन भन्ने कुराको प्रमाण निजले नै पुऱ्याउनु पर्नेछ ।" भन्ने उल्लेख भएको देखिन्छ । उक्त कानूनी व्यवस्थाबमोजिम यी प्रतिवादीहरूले आफूले पीडितहरूलाई लिई गएको भन्ने कुरा स्वीकार गरेको अवस्थामा बेचबिखन गर्न लगेको होइन भन्ने कुरा प्रमाणित गर्ने भार यिनै प्रतिवादीहरूमाथि रहने हुँदा सो कुरा कुनै तथ्ययुक्त प्रमाणले पुष्टि गरेकोसमेत नदेखिने।

अत: उल्लिखित तथ्य एवम् प्रमाणको विवेचनासमेतको आधारमा प्रतिवादीहरू रामजी परियार र कमल राईले पीडितहरूलाई बेचबिखन गर्न लगेको अवस्थामा भारतमा पुऱ्याई नसक्दै नेपाल भित्रैबाट पक्राउ परी निज प्रतिवादीहरूले मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ३ र ४(२) बमोजिम अपराध गरेको देखिँदा निजहरूलाई सोही ऐनको दफा १५(१)(ङ)(२) बमोजिम जनही १० वर्ष कैद र रू ७५०००।- जरिवाना हुने र ऐ. को दफा १७(१) बमोजिम पीडितलाई प्रतिवादीहरूबाट जनही रू. १,५०,०००।- (अक्षरूपी एक लाख पचास हजार) का दरले क्षतिपूर्तिसमेत भराई दिने ठहऱ्याएको सुरू मकवानपुर जिल्ला अदालतको मिति २०६८।१२।५ को फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत हेटौंडाको मिति २०६९।६।९ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: शकुन्तला कार्की

कम्प्युटर: रानु पौडेल

इति संवत् २०७३ साल कात्तिक ३० गते रोज ३ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी.,** ०७३-WO-०८०६, उत्प्रेषण / परमादेश, *सुनीत के.सी.समेत वि. लोक सेवा आयोग केन्द्रीय कार्यालयसमेत*

निवेदकहरू सिफारिस भएका खुला समूहको विज्ञापन एवम् सोही बखतको समावेशी समूहको विज्ञापनहरूको परीक्षा छुट्टा छुट्टै सञ्चालन भए पनि उक्त दुवै परीक्षाको लागी निर्धारण गरिएको पाठ्यक्रम एउटै रहेको छ । कुनै सेवा समूहको रिक्त रहेको पदको पदपूर्तिको लागि विज्ञापन गर्दा ४५ प्रतिशत आरक्षण र ५५ प्रतिशत खुला वर्गमा विज्ञापन गरिने कानूनी व्यवस्था रहेको देखिन्छ । यस्तो अवस्थामा समावेशी समूहको विज्ञापन नं. अगाडि हुँदैमा सो समूहको परीक्षामा उत्तिर्ण भई सिफारिस भएका उम्मेदवारहरू योग्यताक्रमा अगाडी र खुल्ला समूहको परीक्षामा उत्तीर्ण भई सिफारिस भएका उम्मेदवारहरू पछाडी हुनु न्यायोचित हुने

देखिएन । परीक्षा प्रणालीबाट रिक्त पदहरूको संख्या पूर्ति गर्नु भनेको योग्यता प्रणालीलाई स्वीकार गर्नु हो । योग्यता प्रणालीलाई स्वीकार गरी सकेपछि स्वतन्त्र एवम् निस्पक्षपूर्वक सञ्चालन भएको परीक्षामा कुनै उम्मेदवारले प्राप्त गरेको अङ्कको आधारमा उसको योग्यताक्रम निर्धारण गर्नु नै न्यायोचित हुने देखिन्छ । यस परिप्रेक्ष्यमा लोक सेवा आयोगबाट मिति २०७३।९।२४ मा विज्ञापन नम्बरको क्रमानुसार योग्यताक्रम निर्धारण गर्ने भनी भएको निर्णय यस अदालतबाट मिति २०६९।३।२४ मा जारी भएको आदेश एवम् लोक सेवा आयोग नियमावली, २०६७ को नियम ३१(१) र लोक सेवा आयोग (कार्य सञ्चालन) निर्देशिका, २०६७ को दफा ५५ क मा भएको कानूनी व्यवस्थाविपरीत रहेको देखिन आउने ।

तसर्थ, माथि विवेचित आधार, कारण एवम् यस अदालतबाट मिति २०६९।३।२४ मा जारी भएको आदेशसमेतबाट लोक सेवा आयोगको मिति २०७३।९।२४ को निर्णय एवम् सो निर्णयबमोजिम मिति २०७३।१०।३ मा सबै क्षेत्रीय निर्देशनालय एवम् अञ्चल कार्यालयहरू समेतमा गरेको पत्राचार कानूनसम्मत नहुँदा उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरी दिएको छ । अब निवेदकहरू सिफारिस भएको विज्ञापन नं. एवम् समावेशी समूहका सम्पूर्ण विज्ञापन नं. बाट सिफारिस भएका उम्मेदवारहरूले लिखित परीक्षा एवम् अन्तर्वार्तासमेतमा प्राप्त गरेका अङ्कसमेतका आधारमा एकमुष्ट योग्यताक्रम निर्धारण गर्नु गराउनु भनी विपक्षी लोक सेवा आयोग केन्द्रीय कार्यालयसमेतको नाममा परमादेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृतः रामु शर्मा

कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७४ जेठ १६ गते रोज ३ शुभम् ।

## इजलास नं. १४

१

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत,** ०७१-CI-०३६३, उत्प्रेषण, *सुनिता देवी मुराउत वि. मवनकुमार मौर्य*

जिल्ला प्रशासन कार्यालयलाई देवानी प्रकृतिको विषयमा कारवाही चलाई रकम दिनेछु भनी कागज गराउने कुनै कानूनले अधिकार दिएको पाइएन। कानूनले अख्तियार दिएको कार्यसम्म गर्न पाउने हुन्छ । अख्तियार विहिन कार्य गरेमा त्यस्तो कार्यले कानूनी मान्यता प्राप्त गर्न सक्तैन । कानूनले कुनै निकायलाई दिइएको अधिकारक्षेत्र नाघेर कार्य गर्ने हो भने कानूनी राज्यको (Rule of law) को सिद्धान्तविपरीत हुन्छ । अतः क्षेत्राधिकारको त्रेटि गरी मिति २०७०।१।८ मा जिल्ला प्रशासन कार्यालय बाँकेले गराएको कागज उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरी जग्गा लेनदेनको विषयमा निवेदकलाई पक्राउ नगर्नु थप कागज नगराउनु भनी पुनरावेदन अदालत नेपालगन्जबाट मिति २०७०।१०।२२ मा भएको आदेश मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: यमप्रसाद बास्कोटा

इति संवत् २०७३ साल असोज ११ गते रोज ३ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत,** ०७१-CI-१०५३, निषेधाज्ञा / परमादेश, *जनकलाल पुरवार वि. नेपालगन्ज उपमहानगरपालिकासमेत*

पुनरावेदन पत्रको व्यहोराबाट यही विवादित विषयमा विपक्षीले बनाएको घर भत्काई खिचोला मेटाई चलन चलाई पाउँ भन्ने मुद्दा बाँके जिल्ला अदालतमा

दायर भएको भन्ने देखिन्छ । सोही मुद्दाबाट निवेदकले कानूनी उपचार प्राप्त गर्ने अवस्था रहेको छ । नक्सा पास नगरी घर बनाउन लागेको भनी मिति २०७०।१२।७ मा यी पुनरावेदकले प्रत्यर्थी विपक्षी नेपालगन्ज नगरपालिकामा उजुरी दिएको भन्ने पनि देखिन्छ । सो उजुरी सम्बन्धमा प्रत्यर्थी विपक्षी नगरपालिका कार्यालयबाट कानूनबमोजिम निकासा हुने अवस्था पनि रहिरहेको हुँदा मागबमोजिम निषेधाज्ञायुक्त परमादेशको आदेश जारी गर्न मिलेन भनी रिट निवेदन खारेज हुने ठहऱ्याएको पुनरावेदन अदालत नेपालगन्जको मिति २०७१।३।४ को आदेश मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: यमप्रसाद बास्कोटा

कम्प्युटर: मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७३ साल असोज ११ गते रोज ३ शुभम् ।

३

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत,** ०७२-CR-१०७६, सवारी ज्यान, *नेपाल सरकार वि. बाबुराम खनालसमेत*

गल्छी भन्ने स्थानमा उकालो मोड रहेको सडकमा प्रतिवादीले हाँकी लगेको लोड रहेको मिनी ट्रक अनियन्त्रित द्रूत गतीमा चलाउन सक्ने अवस्था रहँदैन। आफ्नो साइडतर्फ सडक खाल्डा खुल्टी भएकोले बाध्यता भई केही साइड च्यापी सवारीलाई हाकेको भन्ने देखिन्छ । मृतकले चलाई चलेको मोटरसाइकल ओरालोमा तिव्र गतिमा हाँकी लगी ठक्कर लाग्न गएको भन्ने देखिन्छ । दुर्घटनास्थल सडकको अवस्था र स्थल कस्तो प्रकृतिको रहेछ भन्ने तथ्यले पनि सवारीचालकको सवारी हँकाई जानीजानी लापरवाही थियो थिएन भनी जाच्न सकिने एउटा आधार हुन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा सडकको विवरणबाट प्रतिवादीले जानीजानी लापरवाही गरी सवारी चलाएको देखिन नआउने ।

प्रतिवादी रामबहादुर तामाङसँग हेभी गाडी ट्रक चलाउने सवारीचालक अनुमति पत्र रहेको भन्ने तथ्यमा विवाद छैन । निजसँग कार, जीप, डेलिभरी भ्यान, ट्रक, बस, लरी चलाउने अनुमति भएको ००६-७०९६२८ नं. को सवारी चलाउने पाउने अनुमतिपत्र रहेको देखिन्छ । मिनी ट्रक, हेभी ट्रक भन्दा हल्का किसिमको सवारी हो । यी दुवै प्रकृतिको सवारीको यान्त्रिक अवस्थामा खासै फरक रहेको हुँदैन । मिनी ट्रक चलाउने अनुमति लिएर हेभी गाडी ट्रक चलाएको भए निश्चय नै हेभी गाडीको आकार ठूलो हुने भई साथै लोडको क्षमता आदीका कारण सवारीचालकलाई सो गाडी चलाउन सक्ने ज्ञान, शीप, अनुभव नहुने भई लापरवाही हुने स्थिति आइपर्न सक्दथ्यो । साथै भिन्नै प्रयोग र प्रयोजनको लागी निर्माण भएको एक अर्काको यान्त्रीक बनोट नै नमिल्ने फरकफरक किसिमको सवारी जस्तै यात्रूवाहक बस, साना हल्का सवारी ट्याक्सी, कार आदिको अनुमति प्राप्त गरेको चालकले ट्रक, मिनी ट्रक जस्ता सवारी हाक्नु आफैँमा त्यस्तो सवारीको यान्त्रीक स्थितिको अनभिज्ञताको रूपमा रही लापरवाही हुने स्थिति आइ पर्न सक्छ । मोटरसाइकल चालक अनुमति पत्र लिएर चारपाङ्ग्रे ठूलो सवारी चलाउनु जोखिम रहेको हुन्छ लापरवाही रहने ।

प्रतिवादी चालक रामबहादुर तामाङले सवारी चलाउने अनुमति प्राप्त नै नगरेको भन्ने देखिन आएन । एउटै प्रयोजनको लागि निर्मित्त अनुमति प्राप्त गरेको सवारी भन्दा हल्का एकै प्रकृतिको सवारी चलाएको हुँदा मिनी ट्रक चलाउने अनुमति नभएकै आधारले मात्र स्वतः लापरवाही गरी सवारी चलाएको भनी मान्न सकिन नआउने ।

प्रस्तुत मुद्दाको घटनास्थलको विवरण तथा उकालोमा लोड गाडी गइरहेको अवस्था तथा सडकमा खाल्डा, खुल्डी रहेको सडकको स्थितिसमेतलाई

दृष्टिगत गर्दा र दुर्घटनाग्रस्त मोटरसाइकलको पछाडी सवारी भएको प्रत्यक्षदर्शीको बकपत्रसमेतको आधारहरूबाट निज विपक्षी प्रतिवादी रामबहादुर तामाङले जानजानी लापरवाही गरी सवारी चलाई दुर्घटना गरेको पुष्टि हुन आएको नपाइने।

अर्का प्रतिवादी सवारीधनी बाबुराम खनालले अदालतसमक्षको बयानमा आफूले उक्त सवारी साधन मिनी ट्रक रामबहादुर तामाङ भन्ने व्यक्तिलाई नदिई होमबहादुर तामाङलाई दिएको र दुर्घटना हुँदाको समय आफू काठमाडौं रहेको भनी उल्लेख गरेबाट यी प्रतिवादीको कसुरमा प्रत्यक्ष संलग्नता रहेका छ भनी मान्न मिल्ने नदेखिने।

अतः प्रतिवादी रामबहादुर तामाङलाई सवारी तथा यातायात व्यवस्था ऐन, २०४९ को दफा १६१ (३) बमोजिम १ वर्ष कैद रू. २,०००।– (दुई हजार रूपैयाँ) जरिवाना हुने र प्रतिवादी बाबुराम खनालले सफाइ पाउने ठहऱ्याई धादिङ जिल्ला अदालतबाट मिति २०६८।४।२५मा भएको फैसलालाई सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०६९।११।२० मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: आचार्य

कम्प्युटर: प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७३ साल पुस ६ गते रोज ४ शुभम्।

## इजलास नं. १५

१

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.डा. आनन्दमोहन भट्टराई,** ०७२-WO-०५१०, परमादेश / प्रतिषेध, *तुलसी सिंखडा वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयसमेत*

नेपालको संविधानले उपभोक्ताको हकलाई मौलिक हकको रूपमा व्यवस्था गरी प्रत्येक उपभोक्तालाई गुणस्तरीय वस्तु तथा सेवा पाउने हक हुने प्रत्याभूति दिएको छ। उपभोक्ताको हक संरक्षण ऐन, २०५४ को दफा ६ मा अनुचित व्यापारिक क्रियाकलापबाट सुरक्षित हुनको निमित्त उपभोग्य वस्तु तथा सेवाको मूल्य, परिमाण, शुद्धता, गुणस्तर आदिबारे सूचित हुने अधिकार, प्रतिस्पर्धात्मक मूल्यमा उपभोग्य वस्तु तथा सेवाको छनौट गर्न पाउने अधिकारसमेतका अधिकारहरूलाइ उपभोक्ताको कानूनी अधिकारको रूपमा प्रत्याभूत गरेको देखिन्छ। यी हक अधिकारको प्रभावकारी कार्यान्वयन हुनुपर्दछ भन्ने कुरामा विवाद हुन सक्दैन। उपभोक्ताको हित संरक्षणका लागि संविधान एवम् कानूनमा आवश्यक संरक्षणकारी प्रावधान समावेश गरिएका हुन। यसको समग्रतामा प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्नु गराउनु नेपाल सरकारको कर्तव्य तथा दायित्वसमेत बन्ने।

निवेदक नेपाल आयल निगममा सूचना माग्न नगई केवल निवेदनमा सो तथ्याङ्क अदालतले माग गरी दिनुपर्ने भनी जिकिर लिएको देखिन्छ। नेपाल आयल निगमले निवेदकले माग गरेको अवस्थामा तथ्याङ्क विवरण सहजै उपलब्ध गराउन सकिने भनी लिखित जवाफमा उल्लेख गरेको पाइयो। आफूलाई चाहिएको विवरण सम्बन्धित निकायमा गई माग गरी जानकारी प्राप्त गर्नु पर्दछ। विपक्षीमध्येको नेपाल आयल निगमले निवेदकलाई चाहिएको सूचना, जानकारी माग गरेमा दिन सकिने भनी जिकिर लिएको कुरालाई अन्यथा मान्न सकिने अवस्था देखिएन। तथ्याङ्क विवरण दिन ईन्कार गरेको अवस्था देखिन आएन। तसर्थ निवेदकको मागबमोजिम विवरण उपलब्ध गराउन अस्वीकार गरेको मानेर आदेश जारी गर्नु मनासिब नदेखिने।

नेपाल भारत सीमा नाकामा २०७२ साल आश्विनदेखि देखा परेको समस्या, असहज परिस्थिति र अघोषित नाकाबन्दीको कारणबाट पेट्रोलियम पदार्थलगायतका कतिपय सामान आपूर्तिमा कठिनाई परेको कुरा एउटा कटु यथार्थ हो । परिणामतः नागरिक जीवन कष्टकर वनेको पनि हो । यस प्रकारको असहज परिस्थितिमा कालो बजार मौलाउने र आम उपभोक्ताको हकहित प्रतिकूल अवाञ्छित क्रियाकलाप हुने सम्भावनालाई ईन्कार गर्न सकिँदैन।यसअवस्थामासरकारकासम्बद्धनिकायहरूले विशेष सक्रियता अपनाएर प्रभावकारी रूपमा बजार अनुगमन गर्ने, नियमित र सहज आपूर्ति व्यवस्था मिलाउन हरसम्भव उपायहरू अपनाउने र कानून प्रतिकूल काम कारवाही, क्रियाकलाप वा गतिविधिमा संलग्न हुनेलाई कडाईका साथ कानूनको दायरामा ल्याउने कार्य गर्नु पर्दछ । उपभोक्ताको हकहितप्रतिकूल हुनेगरी सरकारका निकायहरू उदासिन र अकर्मण्यता अवस्थामा रहन हुँदैन । यस पक्षमा सरकारका सबै सम्वद्ध निकायहरूले पर्याप्त मात्रामा सचेष्ट रही नियमित, सहज र आम उपभोक्ताको हितअनुकूल हुने गरी उपभोग्य वस्तुको आपूर्ति व्यवस्था मिलाउनु पर्दछ । यस सन्दर्भमा प्रस्तुत विवादमा उठाईएको प्रश्नतर्फ दृष्टिगत गर्दा २०७२ साल आश्विनदेखि नेपाल भारत सीमा क्षेत्रमा देखा परेको असहज परिस्थिति हटिसकेको र अहिले नाकाबन्दीजस्ता समस्याको कारणबाट उपभोग्य वस्तुको आपूर्तिमा समस्या कायम रहेको अवस्था देखिएन । पेट्रोलियम पदार्थलगायतका उपभोग्य वस्तुको आपूर्ति अहिले नियमित रूपमा भइरहेको भन्ने देखिँदा विपक्षीहरूका नाउँमा परमादेश जारी गरिरहनु नपर्ने ।

उपभोक्ताको हकहितको अधिकतम् संरक्षण गर्ने र उपभोक्ता मैत्री आपूर्ति व्यवस्था मिलाउने कर्तव्य तथा दायित्व सरकारको हो । यो दायित्व सरकारले निर्वाह गर्नु, गराउनु पर्दछ । कुनै परिस्थितिको कारण देखाएर मात्र सहज आपूर्ति व्यवस्था मिलाउने जिम्मेवारीबाट सरकार पन्छिन हुँदैन । राज्य व्यवस्थामा सधैं अनुकूल परिस्थिति मात्र कायम रहन्छ भन्ने हुँदैन। यदाकदा प्रतिकूल परिस्थितिको पनि सामाना गर्नुपर्ने अवस्था आई पर्नसक्छ । त्यस्तो परिस्थितिमा पनि आम नागरिकको जीवनमा सम्भव भएसम्म न्यूनतम मात्रामा मात्र असर सीमित राख्नेतर्फ सरकारी तयारी र प्रयत्न केन्द्रीत रहनु पर्दछ । तसर्थ असहज वा प्रतिकूल परिस्थितिमा पनि उपभोक्ताको हकहित संरक्षित हुने, त्यसमा कुनै गम्भीर नकारात्मक असर नपर्ने, पेट्रोलियम पदार्थलगायतका उपभोग्य वस्तुहरूको नियमित रूपमा सुपथ मूल्यमा आपूर्ति हुने, त्यस्ता वस्तुहरूको गुणस्तर कायम राख्ने, कालो बजारलगायत बजारमा कृत्रिम अभाव सिर्जना हुन नदिने प्रभावकारी व्यवस्थाका लागि आवश्यक कानूनी, नीतिगत, संस्थागत संरचनासहित व्यवस्थापनको भरपर्दो र प्रभावकारी व्यवस्था मिलाउनु भनी विपक्षीहरूका नाउँमा निर्देशनात्मक आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत: तेजबहादुर खड्का

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७३ साल माघ ५ गते रोज ४ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा,** ०७२-CI-०११५, छुट जग्गा दर्ता, *कुमार श्रेष्ठ वि. हर्षरत्न शाक्यसमेत*

एउटै कित्ता जग्गा दर्ता सम्बन्धमा फरकफरक मानिसबाट दोहोरो दाबी गरिएको अवस्थामा हक बेहकसम्बन्धी प्रश्न उपस्थित हुन जाने भई सोहीबमोजिमको कानूनी उपचारको मार्ग अपनाउनु पर्ने थियो । तर मालपोत कार्यालयले यी पुनरावेदकले

गरेको दाबीलाई अनदेखा गरी जग्गा चीरमाया महर्जनको नाममा दर्ता गर्ने गरी मिति २०६५।१०।१५ मा निर्णय गरेको देखियो। यही निर्णयको आडमा मिति २०६७।१२।७ गते कि.नं. ९३ को जग्गा सम्बन्धमा थप कारवाही गर्न नपर्ने भनी आदेश (निर्णय) गरेको देखिन्छ । उक्त निर्णयको परिणामस्वरूप मालपोत कार्यालयले यी पुनरावेदक वादीको दाबीबमोजिम कि.नं. ९३ को जग्गा दर्ता गर्ने कुरा ईन्कार गरेको देखिएको छ। यस अवस्थामा केवल सामान्य शब्द वा अक्षर फरक परेको जस्ता सामान्य प्राविधिक कारण देखाएर पुनरावेदकले उठाएका प्रश्नहरूको निरूपण गर्न ईन्कार गर्नु उचित नदेखिने । पुनरावेदक वादीको दाबी गरेको कि.नं. ९३ को जग्गा दर्ता गर्ने सम्बन्धमा मालपोत कार्यालय ललितपुरबाट मिति २०६७।१२।७ मा निर्णय गर्दा "... चीरमाया महर्जनका नाममा नामसारी दर्ता हुने गरी मिति २०६५।१०।१५ मा निर्णय भइसकेको देखिएकोले उक्त कि. नं. ९३ को जग्गाका सम्बन्धमा थप कारवाही गरी रहनु परेन" भनी पर्चामा उल्लेख गरिएको देखिन्छ । स्वभावतः उक्त निर्णय अन्तिम प्रकृतिको देखिन्छ । यस प्रकारको निर्णयउपर मालपोत ऐन, २०३४ को दफा ३१ बमोजिम तत्कालीन पुनरावेदन अदालतमा पुनरावेदन लाग्ने नै देखिन्छ। यस प्रकारको निर्णयलाई "आदेश" भन्ने नामाकरण गरी न्याय निरूपण गर्न इन्कार गरी पुनरावेदन खारेज गर्नु उचित नहुने।

तसर्थ यी उल्लिखित आधार, कारण र प्रमाणबाट पुनरावेदन नलाग्ने भनी मुद्दा खारेज हुने ठहर गरेको तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०७०।८।१७ को फैसला सो हदसम्म मिलेको नदेखिँदा उल्टी (बदर) हुने ठहर्छ । साथै, मालपोत कार्यालय ललितपुरबाट मिति २०६७।१२।७ मा भएको विवादित निर्णयसमेत बदर हुने ठहर्छ। तथापि ललितपुर जिल्ला इमाडोल गा.वि.स. वडा नं. ९क कि.नं. ९३ को ०-५-३-० को विवादित जग्गाकै विषयमा यिनै पक्ष विपक्षीहरूकाबीच हक कायम र जालसाजीतर्फसमेत ललितपुर जिल्ला अदालतमा २०६९ सालमा नै मुद्दा परी विचाराधीन रहेको तथ्य मिसिलबाट देखिन आएकोले उल्लिखित जग्गामा यी पुनरावेदक वादीको हक कायम भई दर्ता हुने नहुनेसम्बन्धी प्रश्नको निरूपण सोही मुद्दाबाट हुने भएकाले अहिले प्रस्तुत मुद्दाबाट अन्यथा निर्णय गर्नुपर्ने प्रयोजन देखिन आएन । सो हदसम्म पछि ठहरेबमोजिम हुने नै हुँदा अहिले मातहत अदालतमा विचाराधीन रहेको विवाद प्रभावित हुने गरी विवादित तथ्यमा प्रवेश गरी अन्यथा निर्णय गर्न नमिल्ने।

इजलास अधिकृतः मनकुमारी जि.एम. उदवीर नेपाली
इति संवत् २०७३ साल कात्तिक ९ गते रोज ३ शुभम्।

३

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी.,** ०७०-RB-००२३, उपयुक्त आदेश जारी गरिपाउँ, *श्रवणकुमार चौधरी वि. नेपाल मेडिकल काउन्सिल*

करार ऐन, २०५६ को दफा ८७ को व्यवस्था तत्कालीन अवस्थामा प्राप्त हुने अन्तरिम वा अन्तरकालिन प्रकृतिको उपचार हो । करार नै भङ्ग भएको अवस्थामा वा करारको सर्त पूरा गर्न अर्को करारीय पक्षको काम कारवाही, व्यवहार वा क्रियाकलापबाट अवरोध पैदा हुन जाने स्थिति नरहेको अवस्थामा कुनै प्रकारको क्षतिपूर्ति अथवा करारको यथार्थ परिपालना गराउने जस्ता कानूनी उपचार उल्लिखित दफा ८७ अन्तर्गत प्राप्त हुने वा प्रदान गरिने होइन । त्यसका लागि छुट्टै कानूनी मार्ग अवलम्बन गरिनु पर्ने हुन्छ । दफा ८७ अनुसारको उपचार अन्तरकालिन वा अन्तरिम प्रकृतिको भएकाले

यस दफाअनुसार पुनरावेदन अदालतले सुनुवाई गरेको विषयमा यस अदालतमा पुनरावेदन लाग्ने अवस्था नदेखिने।

अतः माथि विवेचित आधार, कारण र यस अदालतबाट प्रतिपादित सिद्धान्तसमेत अनुसार पुनरावेदन अदालत पाटनबाट करार ऐन, २०५६ को दफा ८७(२) बमोजिम भएको आदेशउपर यस अदालतमा पुनरावेदन लाग्न सक्ने नदेखिएकाले पुनरावेदनको अन्य तथ्यमा प्रवेश गरी हेर्न मिलेन। पुनरावेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: विद्याराज पौडेल

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७३ साल फागुन १९ गते रोज ५ शुभम्।

## इजलास नं. १६

१

**मा.न्या.डा. आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा,** ०७१-WO-०२७५, उत्प्रेषण / परमादेश, *रविन्द्रकुमार यादव वि. सशस्त्र प्रहरी बल प्रधान कार्यालयसमेत*

निवेदक लामो अवधिसम्म कार्यालयमा अनुपस्थित रहेकोले विभागीय कारवाही गर्दा निजलाई खोजतलास गर्न पत्राचार गरिएको र निजलाई सम्पर्क राख्न आउनु भनी राष्ट्रिय दैनिक पत्रिकामा सूचना प्रकाशित गरिएकोबाट निजले आफूमाथिको कारवाहीको सूचना पाउन सक्ने अवस्था रहेको भनी भन्न सकिने अवस्था छ वा छैन भनी हेर्नुपर्ने हुन आयो। सोतर्फ हेर्दा यसमा निजलाई खोजतलास गर्न सशस्त्र प्रहरी बल सीमा सुरक्षा कार्यालय सुनसरीले सशस्त्र प्रहरी बल इकाईहरूलाई र जिल्ला प्रहरी कार्यालय इनरूवा सुनसरीलाई सञ्चार पठाएको भनिएतापनि सो सञ्चारअनुसार निजलाई खोजतलास गरी निजलाई सो बारेमा जानकारी गराउने तथा कारवाहीको सूचना दिने काम भएको भन्ने कहिकतै नदेखिने। सूचना पाउन सक्ने वा पाएको भन्न सकिने आधारसमेत रहने अवस्था विचार गरी मुलुकी ऐन, अ.बं.११० नं. मा समाह्वान, इतलायनामा म्याद सूचना तामेल गर्दा पुऱ्याउनुपर्ने रितका सम्बन्धमा व्यवस्था गरेको छ । कुनै विशेष कानूनले अन्य व्यवस्था नगरेको अवस्थामा सबै खाले सूचना म्याद तामेल गर्दा उक्त नं. को रीत अनिवार्य पुऱ्याउनुपर्ने हुन्छ । अन्यथा रितपूर्वक सूचना वा म्याद तामेल भएको र सम्बन्धित व्यक्तिले सुनुवाइको मौका पाएको मान्न नमिल्ने। निवेदकका नाममा कुनै सूचना तथा म्याद पूर्जी जारी भई सो यी व्यक्तिले वा निजका एका घरका व्यक्तिले पाउने सक्ने गरी वा निजले थाहाँ पाउन सक्ने अवस्था रहने गरी घरद्वारमा टाँस गरी दिएको अर्थात् उक्त अ.बं.११० नं. को रीत पुऱ्याई तामेली भएको देखिएन। केबल खोजतलासको लागि सम्बन्धित प्रहरी कार्यालयमा पत्राचार वा सञ्चार गरेकोलाई उक्त नं. र अन्य कुनै कानूनको रीत पुगेको भनी भन्न सकिने हुँदैन । त्यस्तै हाम्रो जस्तो मुलुकमा राजधानीबाट प्रकासित हुने राष्ट्रिय दैनिकमा सूचना प्रकाशित गर्दैमा पनि गाउँमा बस्ने निज निवेदकले थाहा पाउन सक्छ भनी भन्न सकिँदैन । त्यसैले सामान्य अवस्थामा यसलाई हाम्रो कानूनले मान्यता दिएको पनि नपाइने । सेवाबाट हटाउने जस्तो कारवाहीलाई सशस्त्र प्रहरी नियमावली, २०६० को नियम ८४(क) अनुसारको सामान्य सजायका रूपमा लिन र प्रहरी कर्मचारी जस्तो सबै वतनको अभिलेख रहेको व्यक्तिको घर ठेगानामा कुनै म्याद सूचना नै पठाएको नदेखिएको अवस्थामा भागी पत्ता नलागेको वा अरू कुनै कारणले सम्पर्क स्थापित नभएको भनी ऐ. नियमावलीको नियम

९३ (ख)अनुसार विभागीय जाँचबुझ गराउनु नपर्ने भन्नु पनि युक्तिसंगत मान्न नमिल्ने ।

अतः माथि विवेचित आधार प्रमाणबाट यी निवेदक रविन्द्रकुमार यादवलाई सेवाबाट हटाउने गरी श्री सशस्त्र प्रहरी बल सीमा सुरक्षा कार्यालय, सुनसरीका सशस्त्र प्रहरीउपरीक्षक श्री महेन्द्र विक्रम थापाले मिति २०७०।०३।०४ गते गरेको निर्णय कानूनको उचित प्रक्रियाको पालना तथा रीतपूर्वक सुनुवाइको मौका दिएर भएको नदेखिएकाले सो निर्णय र सोलाई सदर गर्ने गरी श्री पूर्व क्षेत्रीय सशस्त्र प्रहरी बल मुख्यालय बराह वाहिनी पकली सुनसरीबाट मिति २०७०।१२।३० मा भएको निर्णय तथा उक्त निर्णयहरूसँग सम्बन्धित सम्पूर्ण काम कारवाहीहरू उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरिदिएको छ । सो बदर भएकोले यी निवेदकलाई सेवामा पूर्ववत पुनः बहाली गर्नु गराउनु र सेवाबाट हटाएको मिति २०७०।०१।२६ गते देखि पुनः बहाल भएको मितिसम्मको पूरा तलब, भत्ता तथा जो जे पाउने सुविधासमेत दिनू दिलाउनू भनी विपक्षीहरूका नाममा परमादेशसमेत जारी हुने ।

इजलास अधिकृत: यदुराज शर्मा

कम्प्युटर: सिजन रेग्मी

इति संवत् २०७३ साल माघ १० गते रोज २ शुभम् ।

२

**मा.न्या.डा. आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा,** ०७१-WO-०३२२, उत्प्रेषण, *भोरिल यादव वि. पुनरावेदन अदालत जनकपुरसमेत*

प्रस्तुत विवादमा जीवछ यादवको वारिसको रूपमा भोरिल यादव नियमित तारिखमा रहेकोबाट म्याद तारिख गुज्रेको र तारिख थाम्नु पर्ने अवस्था नभई मृतकको दैयादारले मुद्दा सकार गर्ने कुरासम्म सम्बन्धित रहेको देखिन आयो । यसरी हेर्दा अर्कोलाई वारिसनामा नदिई आफैँ म्याद तारिखमा उपस्थित हुनुपर्ने मुद्दाको पक्ष मरी म्याद तारिख गुज्रेकोमा दैयादारले कहिलेसम्म सकार गर्न र वारिस बदल्न पाउँछ भन्ने बारेमा अ.बं. ६२ नं. मा स्पष्ट व्यवस्था रहे भएको देखिन्छ तर वारिस दिई तारिख गुज्रेको अवस्था नभई वारिस तारिखमा रहेका मुद्दामा मुद्दाको पक्ष मरेमा दैयादारले कहिलेसम्म सकार गर्न र वारिस बदल्न पाउँछ भन्ने बारेमा अ.बं. ६२ नं. मा स्पष्ट व्यवस्था रहे भएको नदेखिने ।

सामान्यतः कुनै पनि मुद्दा प्राविधिक कारण देखाई टुङ्ग्याउनु भन्दा सत्यासत्य (Merit) मा नै पसी निर्णय गर्नु न्यायको रोहमा उचित हुने । समान विषय वस्तु र तथ्य भएको रिट निवेदनमा यस अदालतबाट स्पष्ट दृष्टिकोण लिइएको पाइएको र अ.बं. ६२ नं. र अ.बं. ७० नं. को संयुक्त अध्ययन गर्दासमेत दैयादार नै वारिस बसेको स्थितिमा वारिस दिने व्यक्ति मरेको ३५ दिनभित्र सकार गर्न आएन भने सकार गराउन मिल्दैन भन्न कानूनत:ः मिल्ने नदेखिने ।

अतः उल्लिखित आधार कारणबाट वारिस दिने व्यक्ति मरेको भएपनि दैयादार नै निरन्तर तारिखमा रहेकोमा दैयादार पक्षले सकार गर्न पाउँदैन भन्दा अन्याय हुने र यो विषय यसै अदालतको माथि उल्लिखित मिति २०६९।११।२० को निर्णयसमेतबाट टुङ्गो लागि सकेकोसमेत देखिँदा पुनरावेदन अदालत जनकपुरको मिति २०७१।३।२७ को मुद्दा सकार गर्न नमिल्ने भन्ने आदेश कानून र उक्त प्रतिपादित सिद्धान्तसमेतको विपरीत देखिन आएबाट उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरिदिएको छ । अब धनुषा जिल्ला अदालतका जिल्ला न्यायाधीशको मिति २०७०।१२।२७ को आदेशबमोजिम मुद्दा सकार गराई डिसमिससमेत जगाई कानूनबमोजिम गर्नु भनी

विपक्षी धनुषा जिल्ला अदालतका नाउँमा परमादेशको आदेशसमेत जारी हुने।

उपरजिष्ट्रारः शिवलाल पाण्डेय

इति संवत् २०७४ साल वैशाख ११ गते रोज २ शुभम्।

३

**मा.न्या.डा. आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत,** ०६६-WO-०१०२, उत्प्रेषण / परमादेश, *कृष्णसुन्दर माखास्या वि. भूमिसुधार कार्यालय, भक्तपुरसमेत*

भक्तपुर जिल्ला, कटुञ्जे गा.वि.स.वडा नं.९(ख) को कि.नं.२०९ को क्षेत्रफल ६-२-२ को जग्गाको जग्गाधनीमा भक्तपुर तलेजु गुठी र सो जग्गाको मोहीमा रामप्रसाद माखास्या भनी मालपोत कार्यालय, भक्तपुरको जग्गाधनी दर्ता स्रेस्ताको पाना नं.१/२००४५ मा जनिएको पाइएको छ। उक्त जग्गामा यी रामप्रसाद माखास्या मोही मिति २०४२।०८।०३ मा कायम भएको देखिएको छ । यसैगरी सोही कार्यालयको जग्गाधनी दर्ता स्रेस्ताको पाना नं.१।१८ मा बेनिस्सा जनिई उक्त कि.नं.२०९ को जग्गाको क्षेत्रफल ०-६-२-२ उल्लेख भई मोहीमा तुल्सीभक्त खत्री जनिई दर्ता बाँकी भनी उल्लेख भएको पाइयो। सोही पाना नं.१।१८ मा वडा नं.९(ख) को कि.नं.२०९ को क्षे.फ.६-२-२-० ठे.नं.१।२००४५ मा भक्तपुर तलेजु गुठी जग्गाधनी र मोही रामप्रसाद माखास्या भई दर्ता प्रमाणित दोहोरो स्रेस्ता कायम भएकोसमेत उल्लेख छ । यस सम्बन्धमा भूमिसुधार कार्यालय भक्तपुरबाट उक्त कि.नं.२०९ ठे.नं.१।१८ मा जग्गाधनी खाली स्रेस्ता अप्रमाणित कि.नं.२०९ मा क्षे.फ.०-६-२-२ मोहीमा तुल्सीभक्त देखिएको र ठे.नं.१।२००४५ मा भक्तपुर तलेजु गुठी जग्गाधनी मोहीमा रामप्रसाद माखास्या दर्ता प्रमाणित देखिई एउटै जग्गाको यस्तो एकातर्फ प्रमाणित र अर्कोतर्फ अप्रमाणित देखिएको हुँदा के कसो भएको हो मालपोत कार्यालयमा बुझ्नू भनी भएको मिति २०६४।०९।२७ को आदेशानुसार बुझ्दा नापी शाखाबाट जोताहामा तुल्सीभक्त बाजे कायम रही ०-६-२-२ को जग्गा भनी फिल्डबुक उतार गरी पठाएको पाइयो । साथै नापी शाखा भक्तपुरको च.नं.१४३६ मिति २०६५।०१।२० को पत्रमा भक्तपुर जिल्ला, कटुन्जे वडा नं.९(ख) कि.नं.२०९ को यस कार्यालयमा रहेको साबिक नक्सा स्रेस्ता र फिल्डबुकसमेत चेक गर्दा कि.नं.२०९ को क्षे.फ. ०-६-२-२ कायम रहेको भनी उल्लेख भएको पाइएको छ। यसबाट उक्त भक्तपुर जिल्ला, कटुञ्जे गा.वि.स.वडा नं.९(ख) को कि.नं.२०९ को जग्गाको क्षेत्रफल ०-६-२-२ नै रहेको पुष्टि हुन गएको पाइने।

साबिक मोही कायम भएको व्यक्तिको मृत्युपछि सोमा एकलौटी हक कायम हुने व्यक्तिले मन्जुरी गरेमा जोतभोग गर्दै आएको व्यक्तिलाई मोही कायम गराउन मिल्ने नै देखिन आउँछ । सो गर्ने प्रक्रियाको क्रममा प्रकाशित सूचनाअनुसार र सो गरेतर्फ यी निवेदकलगायत कसैले दाबी विरोध गर्न सकेको पनि पाइँदैन । कसैको दाबी विरोध नपरी सम्पूर्ण प्रमाणसहित बुझी साबिक मोही तुल्सीभक्त बाजेको नाम कट्टा गरी विपक्षीमध्येका कृष्ण खत्री मोही कायम हुने गरी गरे भएका भूमिसुधार कार्यालय, भक्तपुर, गुठी संस्थान शाखा कार्यालय भक्तपुर र मालपोत कार्यालय भक्तपुरको निर्णय मिलेको नै देखिन आयो। यसरी आवश्यक प्रमाणहरू बुझी गरेको निर्णयलाई मालपोत ऐन, २०३४ को दफा ७(३) र भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा २५(२) मा भएको कानूनी व्यवस्थाको परिप्रेक्ष्यमा अन्यथा भन्न नमिल्ने।

यसरी तुल्सीभक्त बाजे साबिक मोही प्रमाणित भएको र पछि निजको नामबाट आवश्यक प्रक्रिया

पूरा गरी बुझ्नुपर्ने प्रमाणसमेत बुझी कृष्ण खत्रीलाई मोही कायम गरिदिएको अवस्थामा यी निवेदक कृष्ण माखास्याको उक्त जग्गामा कुनै प्रकारले हक पुग्ने देखिँदैन । आफ्नो हक भएको विषयमा मात्र यो यसले यसरी आफ्नो हकलाई हनन् गर्न पुग्यो भन्ने प्रश्न उठाई उपचार प्राप्त हुन सक्छ । अर्थात् जहाँ हक हुन्छ त्याहाँ मात्र उपचार प्राप्त हुने हुन्छ । यसरी कानूनअनुरूप नै मोही कायम भई यी निवेदकको कुनै प्रकारले हक नपुग्ने विषयलाई लिएर निवेदक आफ्नो हकाधिकार हनन् भयो भनी रिटको माध्यमबाट यस अदालतमा आएको देखिएकोले सोमा उपचारको कुनै औचित्यता नै रहेको देखिन नआउने ।

अतः माथि विवेचित आधार कारणहरूबाट उक्त भक्तपुर जिल्ला, कटुञ्जे गा.वि.स.वडा नं.९(ख) को कि.नं.२०९ को क्षे.फ.०-६-२-२ को जग्गामा मोही कृष्ण खत्री कायम गर्ने गरी भएको निर्णय कानूनअनुरूपको नै भई यी निवेदक कृष्णसुन्दर माखास्याको कुनै प्रकारले हक अधिकार हनन् भएको देखिन नआएकोले निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी गर्नुपर्ने देखिँदैन । रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृतः यदुराज शर्मा

कम्प्युटर : सिजन रेग्मी

इति संवत् २०७३ साल पुस २६ गते रोज ३ शुभम् ।

**इजलास नं. १७**

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत,** ०७२-WO-००८९, उत्प्रेषण, *इन्द्रबहादुर थेवेसमेत वि. का.जि.का.म.न.पा. वडा नं. धर्मपथ स्थित नेपाल बैंक लिमिटेडसमेत*

बैंक तथा वित्तीय संस्थासम्बन्धी ऐन, २०३६ को दफा ५७ ले बैंकको धितो सुरक्षण रहेको सम्पत्ति बैंकले लिलाम बिक्री गरी वा अन्य कुनै व्यवस्था गरी आफ्नो साँवा ब्याज असुलउपर गर्नसक्नेमा साँवा पूरै र ब्याजमा केही सहुलियत दिई रू. ५ लाख असुल गरेपछि धितोमा रहेको सम्पत्ति फुकुवा गरेपश्चात साँवातर्फ कुनै रकम बक्यौता नरहेको र ब्याजतर्फ पनि ऋण असुली न्यायाधिकरणको फैसलाबाट बाँकी ब्याज मिनाहा दिएको सरह मान्नुपर्ने भन्ने फैसला अन्तिम भई बसेको अवस्थामा पुन: सोही ऋणबापत भनी कम्पनीको सम्पत्ति कुनै थप कारवाही बिना लामो समयसम्म रोक्का राख्नु र कम्पनी एवम् सञ्चालकसमेतलाई कालो सूचिमा राख्ने, राख्न लगाउने कार्यलाई न्यायोचित एवम् न्यायसङ्गत मान्न नमिल्ने ।

बैंकबाट लिएको ऋणको साँवा ब्याज भुक्तानी गर्ने पहिलो दायित्व ऋणीमै रहने र ऋणीबाट असुलउपर हुन नसके जमानत गरिदिने व्यक्तिमा दायित्व सर्ने हुँदा जमानीकर्ताले आफूले कबुल गरेको हदसम्म दायित्व बेहोर्नु पर्ने नै हुन्छ । यस अवस्थामा बैंकले पनि न्यायोचित विधि तथा प्रक्रिया अवलम्बन गरी आफ्नो बक्यौताहरू असुल गर्नुपर्ने हुन्छ । यसका लागि बैंकले ऋणी र जमानीकर्ता दुवैबाट बैंकले छुट्टाछुट्टै लिखतहरू गराई कुन पक्षको के कति दातित्त्व हुनेबारे स्पष्ट व्यवस्था गर्नु अपरिहार्य हुन्छ । जमानीकर्ताले कबुल गरेको दायित्वबमोजिम रकम सर्वप्रथम ऋणीबाट असुल गर्नुपर्ने र त्यसरी असुल हुन नसकेमा मात्र जमानीकर्ताले दिएको सुरक्षण धितो सुरक्षणबाट असुल गर्नुपर्ने ।

बैंकले कम्पनीको सम्पत्तिलाई सुरक्षणबापत लिखत गराई राखेको अवस्था नहुँदा ऋण असुलीको लागि प्रथम प्रक्रिया नै जमानीकर्ताको धितोबाट असुल गर्नुपर्ने स्पष्ट देखिएको र सोही क्रममा जमानत दिनेसँग सहमति गरी साँवा र आंशिक ब्याज असुल गरी चित्त

बुझाई बसी बैंकले जमानत दिनेको रोक्का रहेको सम्पत्ति फुकुवा गरेको अवस्थामा लामो समयपश्चात् पुन: विवाद उठान गरी ऋण असुली न्यायाधिकरणमा दायर गरेको उजुरी पनि दाबी नपुग्ने ठहर भई बसेको परिप्रेक्ष्यमा बैंक र ऋणीबीचको कारोबार र विवादलाई अनन्तकालसम्म यथास्थितिमा राख्नुको कुनै औचित्य नदेखिने।

अत: ऋण असुली न्यायाधिकरणबाट विपक्षी नेपाल बैंक लिमिटेडको माग दाबीबमोजिम निवेदकबाट कर्जा असुली गर्ने दाबी नपुग्ने ठहरी भएको फैसला अन्तिम भई बसेको र ऋणको साँवा रकम र ब्याजमध्ये सहमतिका आधारमा बैंकबाट माग भएको रकम असुल भई ऋण लिँदा सुरक्षणबापत धितो राखेको घरजग्गा बैंकबाट फुकुवा भइसकेको आधार र कारणबाट निवेदकलाई कालो सूचीमा राखी कम्पनीको सम्पत्तिसमेत रोक्का राख्ने नेपाल बैंक लिमिटेडको निर्णय कामकारवाही प्रचलित संविधान तथा कानूनसम्मत समेत नदेखिँदा उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरिदिएको छ । अब निवेदकहरूलाई कालो सूचीबाट हटाई हटाउन लगाई निवेदन कम्पनीको नाममा रहेको कि.नं. २८८२, २८८३, ३४५१ र ३४५३ का जग्गासमेतका सम्पत्ति रोक्का फुकुवा गर्नु गराउनु भनी विपक्षी नेपाल बैंक लिमिटेडसमेतको नाउँमा परमादेशसमेत जारी हुने।

इजलास अधिकृत: इन्द्रबहादुर कठायत

इति संवत् २०७३ साल पुस १ गते रोज ६ शुभम्।

## इजलास नं. १८

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल,** ०६७-RC-००९१, कर्तव्य ज्यान, *नेपाल सरकार वि. उपेन्द्र यादवसमेत*

प्रतिवादी उपर किटानी जाहेरी दरखास्त, घटनास्थल प्रकृति मुचुल्का, मौकामा विभिन्न व्यक्तिले गरिदिएको कागजबाट मृतकको शरीरको विभिन्न भागमा धारिलो हतियारले चोट लागी सोही चोटको कारबाट दशरथ ठाकुरको मृत्यु भएको भन्ने देखिएकोले प्रतिवादी जितेन्द्र यादव, उपेन्द्र यादव र भजुवा भन्ने भजुराम (रामभजु) यादवको इन्कारी बयान अन्य प्रमाणबाट पुष्टि हुन नसकेकोले निजहरूमध्ये उपेन्द्र यादव, रामभजु यादवले मृतक दशरथ ठाकुरलाई गोली, धारिलो हतियार प्रहार गरी कर्तव्य गरी मारेको र अर्का प्रतिवादी जितेन्द्र यादवले मृतक दशरथ ठाकुरलाई मार्न मुख्य भई वचन दिई हत्याको वारदात घटाएको देखिन आउने।

अतः उल्लिखित आधार प्रमाणहरूबाट प्रतिवादी सिंघेश्वर भन्ने उपेन्द्र यादव र भजुवा भन्ने रामभजु (भजुवा भन्ने भजुराम) यादवको मृतकलाई मार्न प्रत्यक्ष भूमिका रहेको पुष्टि भएको हुँदा निजहरूलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वश्वसहित जन्मकैद र प्रतिवादी बुद्धिलाल भन्ने जितेन्द्र यादवलाई ज्यान मार्नलाई वचन दिएको भन्ने कसुर गरेको देखिँदा निजलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(४) नंबमोजिम जन्म कैदको सजाय हुने ठहर गरेको सुरू सप्तरी जिल्ला अदालतको फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत राजविराजको मिति २०७२।१।२८ को फैसला साधक जाँचको लागि पेस हुन आएकोमा उक्त फैसला मिलेकै देखिँदा साधक सदर हुने।

इजलास अधिकृत: जीवनकुमार भण्डारी

कम्प्युटर: सबिना अधिकारी

इति संवत् २०७३ साल फागुन ३ गते रोज ३ शुभम्।

## एकल इजलास

१

**स.का.मु.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की,** ०७३-WO-१०२२, उत्प्रेषण, रिता सुनुवार *वि. उच्च अदालत मोरङ, विराटनगरसमेत*

निवेदकले उल्लेख गरेको अंश मुद्दामा यी निवेदकको पतिलाई विपक्षी बनाइएको निवेदन संलग्न कागजातहरूबाट देखिन्छ । निवेदकले उल्लेख गरेको काठमाडौं जिल्ला गोकर्ण गा.वि.स.वडा नं.१ क को कि.नं. ३५३५ र ३५३७ को जग्गा र सो जग्गामा बनेको घर निवेदकले राजीनामाबाट प्राप्त गरेको भन्ने पनि राजीनामा प्रतिलिपिबाट देखियो । यस स्थितिमा अधिकार प्राप्त निकाय उच्च अदालत विराटनगरबाट मिति २०७३।११।०५ मा जग्गा रोक्का राख्ने गरी भएको आदेशलाई रिट क्षेत्रबाट हस्तक्षेप गरी अन्यथा गर्न न्यायको रोहमा उचित र आवश्यक नदेखिने ।

अतः उल्लिखित आधार र कारणबाट यसमा विपक्षीहरूले गरे बिराएजस्तो अवस्था नदेखिएको हुँदा सर्वोच्च अदालत नियमावली, २०४९ को नियम ४१ को उपनियम (१) को प्रतिबन्धात्मक व्यवस्थाको (४) बमोजिम विपक्षीहरूबाट लिखित जवाफ झिकाई रहनु परेन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इति संवत् २०७३ साल चैत १६ गते रोज ४ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे,** ०७३-WO-०६६६, उत्प्रेषण / परमादेश, मुस्तफा दर्जीसमेत *वि. अली दर्जासमेत*

भई आएको बन्डापत्र रितपूर्वकको छ छैन, बन्डा गर्नुपर्ने सम्पत्ति बन्डा गर्दा नरमगरम मिलेको छ छैन र घटि बढी भएको छ, छैन हेरी रीत नपुगेको देखिए त्यस्तो रीत नपुगेको कार्यलाई बदर गर्ने अधिकार कानूनले सम्बन्धित निकायलाई प्रदान गरेको अवस्थामा अधिकार प्राप्त निकायले रीत नपुगी भएको बन्डालाई बदर गरिदिएको कार्यले निवेदकको हकमा कुनै आघात परेको नदेखिएको अंश हक प्राप्त नगरेसम्म अंशियारको अंश हक समाप्त नहुने एवम् निवेदकको हकमा आघात पर्न गयो भन्दैमा अन्तिम फैसलाअनुसार बन्डा छुट्टाइ पाउँ भनी परेको दरखास्तअनुसारको कार्यवाहीमा चित्त नबुझ्ने पक्षले कानूनले प्रदान गरेको अधिकारअन्तर्गत उजुर गरेको कार्यले फैसला अन्तिमताको सिद्धान्तलाई प्रतिकूल प्रभाव पारेको सम्झन मिल्दैन । तसर्थ सो कार्य फैसलाको अन्तिमताको सिद्धान्त प्रतिकूल हुन गयो भन्ने निवेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

नवलपरासी जिल्ला अदालत तहसिल शाखाबाट बन्डा छुट्ट्याउदा अंशियारहरूबीच घटी बढी पारी प्रतिवादीसमेतलाई रोहबरमा नराखी नरमगरम नमिलाई बन्डा मुचुल्का खडा भएको देखिँदा उक्त मिति २०७३।१।२१ को बन्डा मुचुल्का रीत पूर्वक भए गरेको नदेखिने ।

Justice delayed is justice denied भन्ने न्यायको मान्य सिद्धान्त हो । न्याय ढिलो हुनु हुँदैन न्याय ढिलो हुँदा मुद्दाको पक्षहरूले न्याय प्राप्त गर्न सक्दैनन र न्याय पाइहाले पनि ठूलो खर्च र ठूलो कष्टकासाथ मात्र न्याय प्राप्त हुनजान्छ । न्याय छिटो, छरितो र शुलभ हुनुपर्दछ र अदालतसमेत सो विषयमा गम्भीर रहेको छ । फैसला कार्यान्वयनसम्बन्धी प्रचलित ऐन, कानून, नियमावली र अदालतले लिएको योजनाले समेत छिटो छरितो फैसला कार्यान्वयन हुनुपर्ने मान्यतालाई जोड दिएको पाइन्छ । छिटो न्याय पाउनु नागरिकको अधिकार हो भने छिटो न्याय प्रदान गर्नु राज्यको कर्तव्य हो । न्याय पाउने भन्नाले अदालतले "वादी दाबीबमोजिम भराई लिन पाउने ठहर्छ वा वादी दाबी पुग्ने ठहर्छ" भनी फैसला गर्ने मात्र होइन । अदालतले आफूले गरेको फैसला सजीलोसँग कार्यान्वयन पनि गरिदिनु पर्छ । फैसलाको छिटो, सरल र प्रभावकारी कार्यान्वयन नै न्यायपालिका र न्याय प्रदान गर्ने अदालतको उद्देश्य

हुनु पर्दछ । मुद्दा जित्ने पक्षको चाहाना, आकांक्षा र उद्देश्य नै यही हो । मुद्दा हार्ने पक्षले पनि अदालतको फैसलालाईसम्मान गरी त्यसको कार्यान्वयनमा सहयोग गर्नुपर्ने हुन्छ । फैसला कार्यान्वयन छिटो छरितो गर्ने भन्दैमा कानूनको रीत नपुऱ्याई गर्ने भन्ने पनि नहुने ।

अतः यी निवेदकसमेत ४ अंशियारकाबीच बन्डा गर्दा प्रतिवादी अनवर दर्जीलाई रोहबरमा नराखी निजको अंश भागमा समानुपातिक रूपमा पर्न आउने भन्दा के, कति कारणले कम जग्गा निजको भागमा परेको हो सो केही नखुलाई तथा हालैको बकसपत्र बदर मुद्दामा यी प्रतिवादीले पाउने ठहरे भन्दा के कति कारणले कम जग्गा दिनु परेको हो भन्ने केही नखुलाई मिति २०७३।१।२१ मा भएको बन्डा मुचुल्कासमेत रीत पूर्वकको नदेखिँदा बदर गरी उल्लिखित अंश नामसारी मुद्दा तथा हालैको बकसपत्र बदर मुद्दामा भएका फैसलाहरूले निर्दिष्ट गरेअनुसार वादी प्रतिवादीसमेतलाई रोहबरमा राखी कानूनबमोजिम बन्डा छुट्ट्याइदिनु भन्ने उच्च अदालत बुटबलबाट मिति २०७३।७।४ मा भएको आदेश मिलेकै देखिँदा सर्वोच्च अदालत नियमावली, २०४९ को नियम ४० को उपनियम (४) बमोजिम विपक्षीहरूको नाउँमा कारण देखाउ आदेश जारी गर्न परेन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृतः कोशलेश्वर ज्ञवाली

इति संवत् २०७३ साल माघ ६ गते रोज ५ शुभम् ।

३

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा,** ०७३-WO-०६७५, उत्प्रेषण / परमादेश, ज्ञानी मैयाँ महर्जन *वि. उच्च अदालत पाटन, ललितपुरसमेत*

रिट क्षेत्राधिकार असाधारण प्रकृतिको क्षेत्राधिकार हो । संविधानद्वारा प्रदत्त मौलिक हकको प्रचलनका लागि वा अर्को उपचारको व्यवस्था नभएको वा अर्को उपचारको व्यवस्था भएपनि त्यस्तो उपचार पर्याप्त वा प्रभावहीन देखिएको अवस्थामा रिट आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्था रहने ।

विवादको प्रारम्भिक तहमा निरूपण गर्ने महानगरपालिकाले आवश्यक प्रमाण बुझी, तथ्य एकिन गरी निर्णय गरेको देखिन्छ । निर्णयउपर पुनरावेदन गर्न पाउने प्रभावकारी उपचारको ब्यबस्था रहेअनुसार निवेदकले तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पाटनमा पुनरावेदन गरेको र सुरू निर्णयको न्यायिक परीक्षण भएको देखिन आँउदछ । यस अवस्थामा मूलरूपमा प्रमाण मूल्याङकनको प्रश्न उठाई यस अदालतमा रिट निवेदन गरेकोलाई उचित मान्न सकिने देखिएन । रिट क्षेत्राधिकारबाट प्रमाण बुझ्ने, परीक्षण गर्ने र त्यसका आधारमा नियमित न्यायिक प्रक्रियाबाट भएका फैसलाको परीक्षण गर्नेजस्ता कार्य गर्न मिल्दैन । प्रमाणको मूल्याङकन, तथ्यको निरूपणसम्बन्धी प्रश्नबाहेक अन्य प्रश्न उठाई निवेदन गरेको भन्ने देखिएन । यस अवस्थामा रिट क्षेत्राधिकारबाट प्रमाण बुझी सो प्रमाणको मूल्याङ्कन गरी पुनरावेदन सुनेजस्तो गरी प्रस्तुत रिट निवेदन हेर्न मनासिब देखिँदैन । प्रस्तुत रिट निवेदनबाट प्रथमदृष्टि मा नै गरे बिराए जस्तो (Prima-facie Case) को अवस्था नदेखिएको हुँदा सर्वोच्च अदालत नियमावली, २०४९ को नियम ४० को उपनियम (४) बमोजिम कारण देखाउ भनी विपक्षीहरूका नाउँमा आदेश जारी गरिरहन परेन । निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: यज्ञप्रसाद भट्टराई

कम्प्युटर: उत्तरमान राई

इति संवत् २०७३ साल माघ २ गते रोज १ शुभम् ।